Chapter-2

द्वितीय अध्याय

नाटकों को वर्गीकरण, समयानुसार (प्रकाशन वर्ष के अनुसार), विषयानुसार (नाट्य रूपों के आधार पर), विभिन्न नाटकों का परिचय – कथावस्तु, विषय के अनुसार वर्गीकरण और नाटकों का परिचय ।

द्वितीय अध्याय

(नाटकों का वर्गीकरण और कथावस्तु का परिचय)

अनेकों सामाजिक परिवर्तनों एवं नारी चेतना के विकास के फलस्वरुप नारी लेखिकाओं का पदापर्ण साहित्य के क्षेत्र में हुआ। वैसे तो इन लेखिकाओं ने साहित्य की हर विधा को अपनी लेखनी का विषय बनाया है,जैसे सरोजिनी नायडू, महादेवी वर्मा, सुभद्रा कुमारी चौहान , अमृता प्रीतम, मन्नू भंडारी आदि अनेक लेखिकाओं का नाम हिन्दी साहित्य में उल्लेखनीय है। हिन्दी नाट्य साहित्य भी नारियों के योगदान से वंचित नहीं रहा। लेखन के क्षेत्र में उनकी लेखनी ने नाट्य साहित्य को भी अभिवृद्ध किया। इन लेखिकाओं ने नाटक के विविध रुपों को लेकर समाज के सभी पहलुओं को अपनी लेखनी का दायरा बनाया। समाज के विविध विषयों को लेकर सामाजिक समस्याओं , सामाजिक विसंगतियों,राजनैतिक स्थितियों,पारिवारिक स्थितियों, संयुक्त परिवार का बिखराव, एकल परिवारों की समस्यायें,नारी पुरुष के परस्पर सम्बन्ध, कामकाजी महिलाओं की समस्याओं आदि विषयों को ले कर अपनी नाट्य कृतियॉ प्रस्तुत कीं। समस्याओं के अनुरुप ही नाट्यरुपों का चयन किया इसलिए इन नारी लेखिकाओं द्वारा रचित नाटृय साहित्य भी विविधरंगी हैं।

मानव जिस समाज में रहता है,उस समाज की हर समस्या, हर पहलू से प्रभावित होता है। आज की नारी भी समाज की अग्रगण्य इकाई है। वह संवेदनशील,विचारवान तथा भावुक भी है।समाज की समस्याओं से वह अछूती नहीं रह सकती। हर घटना उसके मानस पटल को छूती है ,या यों कहें कि झकझोर जाती है ,तभी तो साहित्य का सृजन होता है।

साहित्यकार संवेदनशील प्राणी होता है इसलिए जो समस्यायें आम इन्सान को प्रभावित नहीं करतीं, वही समस्यायें उसे व्यथित कर जाती हैं। इसी का परिणाम होती हैं, ये रचनायें।पहले तो वह ताना– बाना बुनता है। आत्ममंथन के फलस्वरुप रचना पाठक के सामने आती है। ये नाटक भी इसी आत्ममंथन के क्षणों के उद्गार हैं।

महिला लेखिकाओं के इन नाटकों का वर्गीकरण हम दो रुपों में कर सकते हैं।

(1)–कालक्रमानुसार वर्गीकरण–प्रकाशन वर्ष के अनुसार

(2)–नाट्य रुपों के आधार पर वर्गीकरण

1–नाट्य रुपों के आधार पर वर्गीकरण–

इन नाटकों को हम नाट्य रुपों के आधार पर अनेक भागों में बॉट सकते हैं।

सामाजिक नाटक

एब्सर्ड नाटक

ऐतिहासिक नाटक ,पौराणिक नाटक

संगीत नाटक, गीति नाट्य

हास्य व्यंग्य से भरपूर नाटक

रेडियो नाटक

नुक्कड़ नाटक

एकांकी

1—कालक्रमानुसार वर्गीकरण—प्रकाशन वर्ष के अनुसार—

कालक्रमानुसार जिन नाटको को नारी लेखिकाओं ने लिखा है , इन्हें इस प्रकार बॉट सकते हैं—

श्रीमती तारा मिश्रा	1— देवयानी	1944
कंचनलता सब्बरवाल	2—आदित्यसेन	1948
कंचनलता सब्बरवाल	3—अमिया	1948
कंचनलता सब्बरवाल	4—भीगी पलकें	1948
कंचनलता सब्बरवाल	5—लक्ष्मी बाई	1951
कंचनलता सब्बरवाल	6—अनन्ता	1959
विमला लूथरा	7. पचपन का फेर	1963
श्रीमती स्वरुप कुमारी बख्शी	8—मेम साहब का बैरा	1965
मन्नू भंडारी	9—बिना दीवारों के घर	1965
विमला रैना	10—आहें और मुस्कान	1969
शांति मेहरोत्रा	11—ठहरा हुआ पानी	1975
कुंथा जैन	12—वर्धमान रुपायन	1975
शीला भाटिया	13—दर्द आयेगा दबे पॉव	1975
डॉ0 कुसुम कुमार	14—ओम कांति—कांति	1978
मृदुला गर्ग	15—एक और अजनबी	1978
त्रिपुरारी शर्मा	16—काठ की गाड़ी	1980

डॉ0 कुसुम कुमार	17—रावण—लीला	1981
डॉ0 कुसुम कुमार	18—दिल्ली ऊँचा सुनती है	1981
डॉ. कुसुम कुमार	19— संस्कार को नमस्कार	1982
डॉ.गिरीश रस्तोगी	20—असुरक्षित	1982
डॉ. मृणाल पाण्डेय	21—जो राम रचि राखा	1983
मन्नू भंडारी	22—महाभोज	1983
मृदुला गर्ग	23—तुम लौट आओ	1984
डॉ. मृणाल पाण्डेय	24—आदमी जो मछुआरा नहीं था	1985
डॉ.कुसुम कुमार	25—पवन चतुर्वेदी की डायरी	1986
डॉ. सरोज विसारिया	26—नगरेषु कांची	1988
त्रिपुरारी शर्मा	27—रेशमी रूमाल	1989
डॉ.सरोज विसारिया	28—अकथ कहानी प्रेम की	1989
डॉ. गिरीश रस्तोगी	29—नहुष	1989
ममता कालिया	30—आप न बदलेगें	1989
शांति मेहरोत्रा	31—एक और दिन	1990
डॉ.गिरीश रस्तोगी	32—अपने हाथ बिकानी	1990
स्वरूप कुमारी बख्शी	33—मैं मायके चली जाऊँगी	1990
सावित्री रांका	34—एक और आवाज	1991
डॉ. कुसुम कुमार	35—सुनों सेफाली	1992
मृदुला गर्ग	36—जादू का कालीन	1993
मृदुला बिहारी	37—अंधेरे से आगे	1993
डॉ.मृणाल पाण्डेय	38—चोर निकल के भागा	1995

1– देवयानी 1944

श्रीमती तारा मिश्रा

यह एक पौराणिक नाटक है। देवयानी सफल नाटक है। कथावस्तु पौराणिक होते हुए भी नवीन प्रसंगों की अवतारणा मनोवैज्ञानिक बुद्धिग्राह्य तर्कसंगत एवं सामयिक रूप देकर प्रस्तुत करने का यथासम्भव प्रयत्न किया गया है। अतः इसमें पूर्वपालित धारणाएँ एवं अंधविश्वास पूर्ण रुढ़िवादी दृष्टिकोण परिष्कृत रुप में उपस्थित होते हैं। इसमें अधिकारिक कथाओं को विशेष महत्व प्रदान किया गया है। इसमें निहित घटनाएँ सम्भव स्वाभाविक एवं आवश्यक है। 1–,

2– आदित्य सेन गुप्त 1948 कंचनलता सब्बरवाल

यह नाटक गुप्त युग से सम्बन्धित है। संघर्ष की दृष्टि से " आदित्य सेन गुप्त " साधारण श्रेणी का नाटक है। इसमें मगध के युवराज आदित्यसेन का बौद्ध सम्राट हर्ष से संघर्ष है। 2–,

3–भीगी पलकें– 1948 कंचनलता सब्बरवाल

घटनाओं अंकों, दृश्यों की भरमार होने के कारण परिणाम स्वरुप संघर्ष का निर्वाह प्रभावशाली नही हो पाया है। 3–,

4– अमिया–1948 कंचनलता सब्बरवाल

प्रस्तुत नाटक में युवराज वज्रगुप्त का आक्रामक हूण राजा तोरमण से संघर्ष है जिसमें वज्रगुप्त की हार होती है। इसमें देशद्रोही मातृविष्णु और उसकी देशभक्त पत्नी भ्रमरा का संघर्ष है। देशभक्त भ्रमरा और उसकी पुत्री अमिया में भी आन्तरिक संघर्ष है। 4–,

5– लक्ष्मी बाई–1951 कंचनलता सब्बरवाल

इस नाटक में झाँसी की महारानी लक्ष्मीबाई का अंग्रेजों के साथ वीरतापूर्वक संघर्ष द्रष्टव्य है।

1– हिन्दी नाटकों की शिल्प विधि का विकास – डॉ0 शान्ति मलिक पृ0 325

2– हिन्दी नाटकों की शिल्प विधि का विकास – डॉ0 शान्ति मलिक पृ0 176

3– आधुनिक हिन्दी नाटकों में संघर्ष तत्व – डॉ0 ज्ञानराज काशीनाथ गायकवाड़ पृ0 134

4– आधुनिक हिन्दी नाटकों में संघर्ष तत्व – डॉ0 ज्ञानराज काशीनाथ गायकवाड़ पृ0 177

6— अनन्ता— 1959
कंचनलता सब्बरवाल

प्रस्तुत नाटक में हर्ष एवं देवगुप्त का संघर्ष है। अनन्ता अपने पति को समझाती है कि युद्ध केवल साम्राज्य विस्तार के लिए नहीं किया जाता। युद्ध का ध्येय अन्याय से मानव को मुक्ति दिलाना होना चाहिए। केवल शक्ति संचय के लिए किया गया युद्ध मानव हत्या ही है। परन्तु देवगुप्त उसकी बात पर ध्यान नहीं देता है। अनन्ता कोई एक निर्णय करने में अपने को असमर्थ पाती है। एक ओर पति प्रेम है, तो दूसरी ओर मानवता से सम्बन्धित उसके उदात्त विचार ऐसी दशा में उसे क्या करना चाहिए उसकी समझ में नहीं आता। फिर भी वह पति को समझाती रहती है। वह उसे उस समय भी समझाती है जब वह मौखरिवंश और वर्धनवंश का नाश करना चाहता है। परन्तु देवगुप्त अनन्ता के उदात्त विचारों की उपेक्षा करता है। ऐसी स्थिति में अनन्ता न पति को दुष्कृत्यों से रोक पाती है, न उसका साथ दे सकती है। फिर भी वह राज्यश्री के सिन्दूर की रक्षा करने का प्रयास करती है, परन्तु असफल रहती है। अनन्ता का आन्तरिक संघर्ष बढ़ता ही रहता है। इसी में उसका करुण अन्त होता है। देवदत्त की मृत्यु के बाद विषप्राशन कर वह आत्महत्या कर लेती है। 1—,

---

1—हिन्दी नाटकों में संघर्ष तत्व
प्रथम संस्करण 1975
डॉ0 ज्ञानराज काशीनाथ गायकवाड
पृष्ठ — 192

(7) **पचपन का फेर** (1963) -विमला लूथरा (एम.ए.)

प्रस्तुत एकांकी संग्रह में पन्द्रह एकांकी संग्रहित हैं। इन एकांकियों में लूथरा जी ने जीवन के विविध पक्षों को अपनी लेखनी का विषय बनाया है। विमला लूथरा के प्रहसनों में सभ्यता की दिखावटी बातें नैतिक तथा सामाजिक प्रपंचपूर्ण कार्य, नवयुवक, नवयुवतियों की स्वेच्छाचारिता, मध्यमवर्गीय जीवन की समस्याओं आदि का चित्रण है। ये व्यंग्य कटाक्ष वाग्यवैदग्ध्य के माध्यम से हास्य उत्पन्न करने में सफल हैं।

(1) **पचपन का फेर**

प्रस्तुत एकांकी सरकारी दफ्तरों की स्थितियों का चित्रण करने में सफल है। हरगोपाल सरकारी कर्मचारी है। सभी उसकी कार्यकुशलता की प्रशंसा करते हैं। उसके अनुभव से नए लोगों ने काफी कुछ सीखा है। वह रिटायर हो जाता है। वह चुस्त आदमी है। उसे रिटायरमेन्ट की आवश्यकता नहीं है। बाकी जगह साठ साल में रिटायरमेन्ट है, पर सरकारी दफ्तरों में ही पचपन साल में है। उसने सपना देखा है कि रिटायरमेन्ट के बाद देहरादून में पहाड़ियों के पास छोटी सी झोपड़ी बनाकर रहेगा। बच्चों को हॉस्टल में डाल देगा। रिटायरमेन्ट के बाद उसकी पेंसन भी पास नहीं हो पाती है। वही ऑफीस है, वे ही लोग हैं पर उसका काम नहीं हो पाता। वे ही लोग जो उसकी दक्षता की प्रशंसा करते थे, वे ही उसका काम नहीं कर पाते। पूरी जिन्दगी सुविधापरस्त होने के बाद अब सारी सुविधाएँ छीन ली जाती हैं। फोन, बंगला सब कुछ। ऐसा तो नहीं उसे इन सभी चीजों की आवश्यकता नहीं। यहाँ तक कि चपरासी जो सारे काम करता था, उसकी नजर में वजूद नहीं रह जाता है। पेन्सन भी आयेगी, तो इतनी ही आयेगी कि दोनों बच्चों का स्कूल का खर्च निकल सके। फिर पति-पत्नी का खर्च कैसे निकलेगा। पत्नी के रिश्तेदार के घर में सभी सामान लेकर जाएंगे। देहरादून का सपना भी पूर्ण नहीं हो सकता। इसी बीच किसी स्कूल से मैनेजर के पद के लिए बुलावा आता है। हरगोपाल प्रफुल्लित हो जाता है। नये उत्साह से भर जाता है। उसे जिन्दगी जीने का मजबूत सम्बल मिल गया।

(2) **लाइन क्लीयर**

प्रस्तुत एकांकी रेलवे विभाग के अफसरों के ऊपर सटीक व्यंग्य है। रेलवे का एक वरिष्ठ ऑफिसर अपने शिष्यों को रेलवे के कार्यों की ट्रेनिंग के लिए लेकर आते हैं।

एक आदमी का सामान ट्रेन में रह जाता है उससे काफी पैसे लेकर उसका सामान अगले स्टेशन से मँगवाते हैं। उससे कहते है कि इसके बाद तो गाड़ी कई स्टेशन के बाद रुकेगी। फिर अपने शिष्यों को लेकर टिकट चेक करते हैं। वे बताते हैं कि जिसको मैं कहूँ उसका टिकट चेक करना। दुबला पतला आदमी है तो गरीब है उसने जरुर टिकट लिया होगा। पर मोटा आदमी है, उसने टिकट नहीं लिया होगा। एक मोटे आदमी को पकड़ते है। उससे टिकट माँगने पर वह पूछता है कि तुम लोगों ने वर्दी क्यों नहीं पहनी। वह आदमी रेलवे का बड़ा आफिसर निकलता है। खुद ही पकड़े जाते हैं। नौकरशाही के ऊपर करारा व्यंग्य है। सरकारी नौकरी में लोग क्या नहीं करते है इसका स्पष्ट वर्णन है। जो सरकारी अफसर जनता की सेवा के लिए रह गये हैं वे ही जनता को किस प्रकार लूट रहे हैं।

(3) नीम हकीम

प्रस्तुत नाटक हमारी भारतीय मानसिकता पर व्यंग्य है। हर भारतीय अपने आपको डॉक्टर समझता है। किसी को कुछ हुआ नहीं कि हम अपनी एक दवाई बता देते हैं।

अमरनाथ को थोड़ी सुस्ती है वह आराम करना चाहता है। इसी बीच सुनीति (जो अमरनाथ की पत्नी है) के मामा-मामी आ जाते हैं। मामा अपनी दवाइयाँ देते हैं। अमरनाथ का दोस्त द्वारका प्रसाद आता है तो कुछ दवाइयाँ देते है, तथा डॉक्टर को फोन करके बुला लेते हैं। डॉक्टर की दवाइयाँ भी दी जाती हैं। इसी बीच उसके ऑफिस से दोस्त आते हैं। वे भी कुछ अपनी नुस्खे को आजमाना चाहते हैं। डॉ. सभी कुछ खाने की छूट देता है। मामा चाहते हैं उसे भूखा रखा जाय। मामी अपनी पुलटिस पर जोर देती है। बच्चे स्कूल से आ जाते हैं। अमरनाथ उठता है, कपड़े पहनता है पत्नी के पूछने पर कहाँ जा रहे हो तो उसका कहना है कि वह ऑफिस जा रहा है। वहां उसे आराम मिल सकता है। सभी की दवाइयों तथा बहसों से छुटकारा मिल सकता है।

(4) हिरोइन

प्रस्तुत एकांकी में लेखिका ने फिल्म जगत की वास्तविका को व्यंग्य के माध्यम से प्रस्तुत किया है। फिल्म वाले लडकियों को सब्जबाग दिखाते हैं। फिल्म का डायरेक्टर सुन्दर लड़कियों को फिल्म में हिरोइन बनाने के लिए बुलाता है। जानकी नाम की युवती अपने पति से लड़झगड़कर बम्बई आती है। डायरेक्टर को फोन करके उनकी ऑफिस आती है। डायरेक्टर उसकी सुन्दरता की तारीफ करता है। उसे हिरोइन बनाने का वादा करता है। उसे नाम, यश पैसे का लोभ दिखाता है। वह जानकी से मिस अंजना बन जाती है। पब्लिसिटी डायरेक्टर, फोटोग्राफर, साउन्ड इंजीनियर कैमरा मैन सभी उसकी अपने अपने ढंग से तारीफ करते हैं। पर सभी का प्रस्ताव एक ही है कि वह उसके घर में रह सकती है। उन सभी के पास सुन्दर घर है। सभी के लिए वह एक सुन्दर स्त्री है। सब उसे पाना चाहते हैं। सारे गुण महत्वहीन हैं, बस महत्वपूर्ण है उसका शरीर। उसका शरीर तो सीढ़ी है, जिसके सहारे वह आगे बढ़ सकती है।

(5) महिला मण्डल

प्रस्तुत एकांकी बिमला लूथरा ने प्रेस की स्वतंत्रता को अपनी लेखनी का विषय बनाया है। एक साप्ताहिक अखबार की ऑफिस है। जिसमें एक कॉलम निकलता है महिला मंडल। पर उस अखबार का दुर्भाग्य यह है कि उसके दफ्तर में कोई महिला नहीं है जो इस कॉलम में लिख सके।

मदनगोपाल नामक पुरुष को 'लीला दीदी' बनकर इस कॉलम को लिखना पड़ता है। महिलाओं की समस्याओं का समाधान सभी समस्याओं से अनभिज्ञता पर समाधान पुरुष वर्ग को ही करना है। क्योंकि वे विवश हैं। वे लोग सारी विधियाँ यहाँ वहाँ से चुराकर कुछ जोड़ घटाकर पेश करते हैं। मुश्किल तो तब आती है जब इनकी विधि से कोई चीज़ बनाकर पाठक वर्ग खाता है, बीमार पड़ता है। कोई लीला दीदी से मिलना चाहती है। कोई लीला दीदी को फोन करती है। किसी को उन्हे अपने घर पार्टी में बुलाना है। लूथरा जी ने सारी स्थितियों को व्यंग्य के माध्यम से पिरो दिया है।

(6) कलाकार और नारी

प्रस्तुत एकांकी नारीमन के कोमलतम पहलू को छूने में सफल है तथा सटीक व्यंग्य है। मीनाक्षी अपने पति राकेश के साथ एक प्रदर्शनी में जाती है। दूसरे दिन उसके घर में एक कलाकार आता है जो मीनाक्षी की सुन्दरता की तारीफ करता है। उस कलाकार को यह भी याद है कि मीनाक्षी ने कैसे साड़ी माला, बिन्दी, चूड़ी तथा उसकी चप्पल का रंग कैसा है एवं उसकी चप्पल में कितना 'स्ट्रेप' है, बताता है। उसे मीनाक्षी विश्व सुन्दरी लगती है। हर भारतीय नारी की भाँति मीनाक्षी भी बहुत प्रभावित होती है। हर नारी अपनी सुन्दरता की तारीफ सुनना चाहती है। वह कलाकार मीनाक्षी से पैसे माँगता है ब्रश व पेन्ट खरीदने के लिए। वह मीनाक्षी की तस्वीर बनाना चाहता है। मीनाक्षी उसे पैसे देती है। मीनाक्षी की सहेली साधना मीनाक्षी की साड़ियाँ 'ड्राई क्लीनर' के पास से लेकर आती है। उसी बीच वह कलाकार शराब पीकर वापस आता है उसके पास न ब्रश है, न पेन्ट, न कैनवास। साधना को देखते ही वह मीनाक्षी को भूल जाता है। यह भी भूल जाता है कि उसने मीनाक्षी से पैसे लिए थे। साधना उसकी प्रेमिका निकलती है। दोनों थोड़ी देर में चले जाते हैं। इस भावना का लोग किस तरह फायदा उठाते हैं, इसी पर व्यंग्य किया है।

(7) प्रीत के गीत

'प्रीत के गीत' में लेखिका ने फिल्मी दुनियाँ को अपनी लेखनी का विषय बनाया है। निर्माता लोग किस प्रकार नयी प्रतिभाओं का शोषण करते हैं। एक गीत में केवल एक शब्द ठीक नहीं बैठ रहा है। एक बड़े जाने माने कवि को बुलाकर ठीक करने को देते हैं। उस एक शब्द का कवि महोदय सौ रुपये लेते हैं। उनके पास एक कवि आता है जिससे वे पहले भी गीत खरीदते हैं, पर उसे पैसों की आवश्यकता है, उससे मोल-भाव करके डेढ़ हजार में एक दर्जन गीत खरीदते हैं। गीतों की खरीद दर्जन के भाव से हो रही है। उससे यह आश्वासन भी लेते हैं कि वह अपने गीत किसी और के पास नहीं बेचेगा। उसके पास एक नया कवि आता है। उसके गीत उन्हें बहुत प्रभावित करते हैं पर वे उसे बताना नहीं चाहते। उसे स्टूडियो दिखाने के बहाने भेजकर अपने म्युजिक डायरेक्टर को बुलाकर सभी गीतों की नकल करवा लेते हैं, जहाँ चाहिए प्रयोग कर लेंगे। उस कवि से केवल एक गीत ही खरीदते हैं। बहुत निवेदन करने के बाद एक गीत का पच्चीस रुपये ही देते हैं। नई प्रतिभाओं के शोषण में ही उन्हें आनन्द मिलता है।

(8) रेत और सीमेन्ट

प्रस्तुत एकांकी में विमला लूथरा ने ठेकेदार लोग रेत और सीमेन्ट का मिश्रण कितना करते हैं उस पर व्यंग्य किया है। पुल बनाने का ठेका ठेकेदार केशवलाल को मिलता है। सरकारी इंजीनियर दास साहब हैं। दोनों में अच्छी निभती है। अगर दोनों कि अच्छी नहीं पटेगी तो रेत और सीमेन्ट का मिश्रण उनके हिसाब से कैसे होगा। केशवलाल दास के घर तोहफे भेजते हैं। घर पर खिलाने-पिलाने का कार्यक्रम चलता है। पत्नी शारदा से कहते हैं कि तुम ताश में कुछ पैसे हार जाना। पेट्रोल, कार का टायर बदलवाना सभी कुछ केशव लाल के पैसे से होता है। केशव लाल को कहाँ अपने जेब से खर्च करना है। इंजीनियर दास केशवलाल के घर सपत्नी बैठे ताश खेल रहे हैं कि फोन आता है कि पुल के दो खम्भे टूट

गए हैं। दोनों घबड़ा जाते हैं। दोनों एक दूसरे पर आरोप प्रत्यारोपण करते हैं। सारी बातें बाहर से पुलिस विभाग के लोग टेप कर लेते हैं। उनका नया बैरा है, वह भी पुलिस का आदमी है जिसे विभाग वालों ने खबर जानने के लिए रखा है। जबकि खबर गलत है कि पुल के खम्भे टूट गए। रेत और सीमेन्ट के मिश्रण को मनोनूकूल रखते-रखते दोनों जेल चले जाते हैं।

(9) प्रोफेसर साहब

प्रस्तुत एकांकी के माध्यम से लेखिका ने कॉलेज में व्याप्त भ्रष्टाचार को अपने व्यंग का माध्यम बनाया है। यह आज हर कॉलेज का ही माहौल है। प्रोफेसर लोग अपने प्रभाव से कई विश्वविद्यालयों की उत्तर पुस्तिकाएँ मँगवा लेते है। जिन्हे जाँचना उनके लिए असम्भव है। उन्हें अपने छात्रों को जाँचने के लिए देते हैं। प्रो. सेठ ऐसे ही प्रोफेसर हैं। छात्र से कुछ उत्तर पुस्तिकाएँ बस की भीड़ में खो जाती है। बेचारा परेशान हैं। प्रोफेसर सेठ मिलते नहीं है, वह भागा-भागा पुलिस में रिपोर्ट करने जाता है। प्रोफेसर सेठ को पता चलता है, बहुत नाराज होते हैं। उसकी छात्रवृत्ति बन्द करवाने की धमकी देते हैं। डॉ. शास्त्री हैं जो अपनी क्लास लेने की जगह प्रिंसिपल साहब से मिलना ज्यादा जरूरी समझते हैं। अपनी मेहनत के बल पर आगे आना मुश्किल है। अगर आगे आना है तो प्रिंसिपल की लड़की से शादी कर लो ऐसी सलाह देते हैं। पूरा एकांकी ही कॉलेज में व्याप्त भ्रष्टाचार का कच्चा चिट्ठा है।

(10) घर आयी लक्ष्मी''

प्रस्तुत एकांकी में बिमला रैना ने रिश्वतखोरों को अपने व्यंग्य का माध्यम बनाया है। मेहता किसी ऑफिस में सर्विस करता है, उसके पास कोई आदमी अपना काम करवाने आता है। वह मेहता को बताता है कि उसे (छोटू भाई को) मेहता के मित्र सत्य प्रकाश ने भेजा है, तथा कहा, 'खान साहब पीपल के पेड़ के नीचे सो रहे हैं।' मेहता छोटू भाई का स्वागत करता है। छोटू भाई रिश्वत के रुपये देकर जाता है। उस पैसे को पाकर उन लोगों के मन में तरह-तरह की इच्छाएं जागृत होती है। उनकी पत्नी को सोने के कड़े लेने हैं, बेटे को मोटरसाइकिल। उस पैसे देखने पर ज्ञात होता है कि ये रुपये एक ही सन् के हैं। उन लोगों के मन में डर लगता है कि मेहता पुलिस का आदमी न हो। तरह-तरह के विचार आते हैं कोई भी उन रुपयों को लेकर फेंकने जाने को तैयार नहीं है। हल्की-सी आहट से लगता है कि कोई आया। कोई आता है तो सोचने लगते हैं कि पता करने आया है - मेहता घर पर है या नहीं। इसी बीच छोटू भाई वापस आता है। वह इसलिए कि मेहता ने जितने रुपये माँगे थे वे दो थैलियों में थे। पर जल्दी में वह एक थैली ही देकर चला गया। मेहता पहली थैली भी उसे वापस देकर उसे भगा देता है। लक्ष्मी जिस प्रकार आती है, उसी प्रकार वापस चली जाती है।

(11) प्रीति भोज

प्रस्तुत एकांकी ''प्रीतिभोज'' आधुनिकता का आवरण डाले आज के आधुनिक माहौल पर करारा व्यंग्य है। सदानन्द एक ऑफिसर है। उनकी पत्नी कमला कुछ लोगों को बुलाना चाहती है। फिर यह विचार बनता है कि सभी को बुलाकर एक साथ ही निपटा दिया जाए। सभी मिलकर लिस्ट बनाते हैं कि किसे-किसे बुलाना है। अगर एक परिवार नहीं आ रहा है, तो उसकी जगह दूसरे नए पड़ोसी या फिर

बच्चों के दोस्तों के परिवार वालों को बुला लिया जाय। लॉकर से चांदी के बर्तनों को भी लोगों को दिखाने के लिए लाना आवश्यक है। महाराज बीमार हो गया। बाहर से पैक करवा कर कुछ मँगवा लिया जाए ऐसा विचार है। कुछ भी खिला दिया जाए। केवल खानापूर्ति करनी है। आने वालों की शिकायतें दिल खोल कर ली गयी। आने वालों में भी सहयोग की भावना का अभाव है। कोई चाहता है कि उसे खाना आठ बजे मिल जाए। तो कोई चाहता है कि वह नौ बजे आए। मेज़बान की असुविधा का किसी को ध्यान नहीं। लोग अपने-अपने ड्राइवरों को भी खाना-खिलाना चाहते हैं। मेहमानों को भी साथ लिए आते हैं। केवल आडम्बर है खानापूर्ति है। लोगों को निमंत्रित करना मात्र दिखावा है, प्रदर्शन मात्र है, दिल में कोई प्रेम नहीं है।

(12) आवागमन

'विमला लूथरा' का एकांकी मनुष्य के स्वभाव के ऊपर गहरा व्यंग्य है। लोग आकाश में मरने के बाद टंगे हैं। वहाँ से यह निश्चित होता है कि किसे स्वर्ग में जाना है और किसे नर्क में। एक विशेष आवाज के साथ ही एक-एक करके सारे लोग इकट्ठे हो जाते हैं। एक नेता जी हैं उनके पास एक पेटी है। जब देखो वे अपनी पेटी को बीच में रखकर भाषण देने लगते हैं। देवदूत उन्हें मना करता है तथा वापस पेटी कोने में रख देता है। एक संवाददाता है, जिसे उसी नेता ने नौकरी से निकलवाया था। एक स्त्री को तरह-तरह के सब्जबाग दिखलाया। चुनाव जीतने के बाद नैताजी ने उस गांव पर आयी बाढ़ जैसी भीषण विपत्ति को हवाई जहाज से देख लिया, अकाल पर भाषण दे अपना कर्तव्य पूरा किया। किमिश्नर साहब से नेता ने अपने अधिकार का दुरुपयोग करके लोगों को नौकरी दिलाई, तरक्की दिलाई। तब वे बोल नहीं सकते थे, क्योंकि नौकरी जाने का खतरा था, पर अब वे बोल सकते हैं। उनके बचपन का मित्र आता है जिसे उन्होंने अपनी सत्ता के अहंकार में पहचानने से इंकार कर दिया था, पर अब पहचान लेते हैं। एक नवयुवक जो योग्य था, उसकी जगह अपने चाचा के पोते को नौकरी दिलवाते हैं जिस कारण उसे आत्महत्या करनी पड़ी। जितने भी लोग वहाँ उपस्थित हैं, नेता से त्रस्त हैं। इसी बीच देवदूत आकर सभी को ले जाता है जहाँ से उन लोगों को बताया जएगा कि किसे नरक में जाना है किसे स्वर्ग में, नेता जी सबसे पहले जाना चाहते हैं। देवदूत उन्हें रोककर बताता है कि उन्हें न तो स्वर्ग वाले लेना चाहते हैं न ही नर्क वाले। धर्मराज के निर्णयानुसार उन्हें वापस धरती पर भेज दिया जाय।

(13)बलिदान

प्रस्तुत एकांकी कॉलेज के यूनियन वर्ग का खुला चिट्ठा है। छात्र किस प्रकार से स्वयं को आगे लाने के लिए तरह-तरह के बहाने बताते हैं इसका उदाहरण है। छात्र यूनियन का मंत्री बलदेव है उसे यह शिकायत है की परीक्षा में गणित और भूगोल के दोनों परचे एक दिन हैं। उसके लिए वह वाइसचांसेलर को लिखित अप्लीकेशन देता है जिस पर कोई विचार नहीं किया जाता। क्योंकि समय बहुत कम है तथा परीक्षा की समय सारिणी बदली नहीं जा सकती। वह अपने दो दोस्तों से सलाह करता है तथा एक वक्तव्य प्रेस में भेजकर अन्शन करता है। वक्तव्य में खोजकर भारी-भारी शब्दों को भरा जाता है। दोनों मित्र रंजीत व अशोक वक्तव्य लेकर जाते हैं तथा दूसरे दिन निकलने वाले जूलूस तथा भाषण की

व्यवस्था का भी काम उन्हें करना है। वे शाम को दोस्त के यहाँ दावत में जाते हैं, जिससे सारा काम रह जाता है। बलदेव का दिया हुआ वक्तव्य भी एक पेपर में छपता है, जिसमें उसका नाम गलत छपा है। बलदेव सोच रहा था कि वह सब मुख्य पृष्ठ पर छपेगा। उसका नाम सुर्खियों में होगा। इस जीत से उसका का भी लाभ होगा। क्योंकि इसके बीस-पचीस दिनों के बाद ही वह अध्यक्ष पद के लिए चुनाव लड़ने वाला है। पर निराशा ही हाथ लगती है। उसका दोस्त रमेश पहले दिन ही उसे समझाता है तथा कहता है कि यह बचकाना हरकत है। माँ मना करती है, पिता डाँटते है तथा सही राय देते है, पर किसी बात का उस पर प्रभाव नहीं पड़ता। आगे का सपना टूटता नज़र आता है, इस हार के बाद अध्यक्ष बनना मुश्किल है। अध्यक्ष बनकर वह देश-विदेश की सैर करेगा। फिर पढ़ाई समाप्त करके असेम्बली का चुनाव लड़ेगा। उसका दोस्त रमेश आसान-सा रास्ता बताता है जिससे हार भी नहीं होगी तथा उसकी बात भी रह जायेगी। दूसरा वक्तव्य पेपर में भेजा जाता है जिसमें बहुत सारे लोगों के नाम दिए गए हैं, जिनके कहने पर उसने उपवास तोड़ दिया। सारा बलिदान केवल दिखावा है, अपना स्वार्थ है। छात्रों के लिए कुछ भी नहीं करता है सारा कुछ अध्यक्ष बनने की नींव है।

(14) गृहलक्ष्मी

रामबाबू व ललिता पति-पत्नी हैं। उनके तीन बच्चे हैं - मोहन, कुसुम, मुन्ना। ललिता एक अच्छी महिला है पर उसे घर का हिसाब-किताब समझ में नहीं आता। वह फालतू खर्च बहुत करती है। उसकी इसी बात से राम बाबू बहुत परेशान रहते हैं। जिन चीज़ों की उन्हें कोई आवश्यकता नहीं वे भी लेकर आ जाती है कि कभी न कभी आवश्यकता पड़ेगी। इस एकांकी के माध्यम से बिमला जी ने इस समस्या को इंगित किया है कि घर खर्च में संतुलन आवश्यक है। घर के खर्च को लेकर दोनों के बीच में तनाव भी होता है। फिर भी उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता वह शीशा लेकर अपने नए खरीदे हुए बुन्दे देखती है। प्रस्तुत एकांकी एक तीखा व्यंग्य है।

(15) जनता बेचारी

प्रस्तुत एकांकी में बिमला लूथरा ने हमारे सरकारी तंत्र के ऊपर तीखा व्यंग्य है। रेलवे मिनिस्टर के पास एक मिनिस्टर का पत्र आता है कि वे अपने सैलून का प्रयोग न करके तीसरे दर्जे में सफर करेंगे क्योंकि जनता से सम्बन्ध बनाने का सबसे सीधा रास्ता है। उनके लिए एक तीसरे दर्जे का डिब्बा लेकर रंग करवाया गया, पंखा डलवाया गया। उनके साथ जो जनता जाएगी वे सी.आई.डी. के आदमी होंगे, जो साधारण वस्त्र में जाएंगे। क्योंकि उनकी सुरक्षा का पूरा प्रबन्ध होना चाहिए। उनके आसपास के तीन-चार डिब्बे में सी.आई.डी. के कर्मचारी ही होंगे। साथ में फोटोग्राफर तथा रिपोर्टर भी होगा। रिपोर्टर बड़े स्टेशनों से फोन करके सारा वृतान्त भेजता रहेगा। तथा फोटोग्राफर ऐसी तस्वीरें खींचें जिससे यह ज्ञात हो कि मंत्री महोदय जनता के साथ मेल मिलाप बढ़ा रहे हैं, बातचीत कर रहे हैं। कोई साधारण इंसान जाता है, तो संतरी दूसरे डिब्बे में जगह दिलाने की बात करता है। मंत्री का समझना है कि वह जनता के साथ है, परन्तु जनता से उसकी दूरी उतनी ही है जितनी पहले थी। ऐसी है हमारी शासन व्यवस्था।

8– मेम साहब का बैरा 1965 श्रीमती स्वरुप कुमारी बख्शी

श्रीमती स्वरुप कुमारी बख्शी के प्रस्तुत प्रहसन संग्रह में छः प्रहसन संग्रहित है।

' मेम साहब का बैरा ' इस प्रहसन में अफसरों की बीबियों पर करारा व्यंग्य किया गया है।, जो हर जगह से उधार मांग कर लाती हैं और आने वाले मेहमान के सामने उस वस्तु की प्रशन्सा करती हैं। उनका बैरा उधार मॉगने वालों को डॉटकर, धमका कर, झूठ बोल कर और खुशामद करके भगा देता है। यह विशेषताएँ श्रीमती चपला रानी की हैं,शीला रानी भी उसी प्रवृति की हैं, वे अपने–अपने बैरों की बहुत तारीफ करती हैं, पर इस तरह काम करने वाले बैरों को बीड़ी पीने के लिए मेम साहब दो आने भी नहीं देती हैं। प्रस्तुत नाटक का व्यंग्य बहुत तीखा है।

9– बिना दीवारों के घर 1965 मन्नू भंडारी

मन्नू भंडारी का नाम हिन्दी उपन्यास व कहानी विधा के लिए सुप्रसिद्ध तो है ही परन्तु नाटक जगत के लिए भी सुपरिचित है। प्रस्तुत नाटक' बिना दीवारों का घर ' अपनी सफल अभिव्यक्ति के लिए बहुचर्चित हो चुका है। नाटक की नायिका शोभा विवाह पूर्व केवल दसवीं पास थी। पति के प्रोत्साहन से वह शिक्षा एवं संगीत के क्षेत्र में आगे आती है। किन्तु शोभा की बढ़ती व्यस्तता,प्रसिद्धि तथा अपने प्रति किये गये व्यवहार से अजित क्षुब्ध होता है। अजित को उसका मित्र जयंत अच्छा नहीं लगता। पर शोभा पग–पग पर अजित का सहारा लेती है। शोभा के व्यवहार से पति तिरस्कृत होता है वह सहन नही कर पाता।शोभा अपनी जिम्मेदारियों के प्रति समर्पित है, फिर भी अजित की उसकी जिन्दगी में वह जगह नहीं रह जाती जो पहले थी। अब वह आत्मविश्वास से परिपूर्ण है। वह ' लेक्चरर ' से ' प्रिन्सिपल ' बन जाती है। उसके व्यक्तित्व में निखार आता है। उसके स्वाभिमान को अजित का पौरुष सहन नहीं कर पाता। उसे शोभा का प्रत्येक कार्य गलत एवम् अहम्पूर्ण लगता है। वह शोभा व जयंत के चरित्र को शंका की नजर से देखता है। अजित नारी के इस रुप को स्वीकार नही कर पाता है,फलतः परिवार में तनाव व टूटन की स्थिति पैदा होती है।शोभा की शिक्षा व आत्मनिर्भरता उसे सम्बल देती है। फलतः वह घर छोड़ने पर विवश हो जाती है।

लेखिका ने जयंत व मीना के माध्यम से भी नारी में स्वाभिमान के भाव को उद्घाटित किया है। मीना से विवाह के पश्चात जयंत अपनी स्टेनो से प्यार करने लगता है। मीना इसे स्वीकार नही कर पाती है। फलतः तलाक ले कर समाजसेवा करती है। इस प्रकार मन्नू भंडारी

ने पुरुष तथा नारी में समानता का भाव प्रदर्शित किया है। लेखिका ने प्रस्तुत नाटक में नारी स्वतंत्रता, स्वच्छन्दता से आत्मनिर्भरता तथा समानता के भाव के आधार पर टूटते परिवार का चित्रण किया है। घर के आदर्श को सुरक्षित रखने के लिए दीवार रुपी नियंत्रण का होना आवश्यक है, क्योंकि स्वच्छन्दता घर गिर जाता है और सामाजिक व्यवस्था बिगड़ जाती है।1–

10– आहें और मुस्कान– विमला रैना

प्रस्तुत पुस्तक विमला रैना के सत्रह नाटकों का संग्रह है जिसमें सामाजिक ,ऐतिहासिक तथा हास्यपूर्ण नाटकों का संग्रह है सभी नाटक एकांकी नाटक हैं तथा मंचीय नाटक हैं

1– काला सिन्दूर–

प्रस्तुत एकांकी की नायिका सुमित्रा की शादी कमलेश्वर से उसके घर वाले यह छिपा कर कर देते हैं कि वह उन्माद से पीड़ित है यानी कि कुछ पागल है। वह इस बात से दु:खी रहती है। उसकी ननद और ससुर उसे प्यार देते हैं। उसके पति का इलाज जिस डाक्टर के पास चल रहा है वह डॉ0 कुमार पहले से सुमित्रा को जानता है। वह सुमित्रा को प्यार भी करता था। वह लदंन पढ़ने के लिए गया था इसी बीच सुमित्रा की शादी हो जाती है। डॉ0 कुमार कमलेश्वर की केस हिस्ट्री जानने के लिए उसके घरवालों , उसकी पत्नी से मिलता है। सुमित्रा से यह भी पूछता है कि ' डायवोर्स ' के बारे में उसका क्या विचार है। सुमित्रा का कहना है कि जिस प्रकार स्मृति विच्छेद नहीं हो सकता, अतीत विच्छेद नही हो सकता उसी प्रकार विवाह विच्छेद भी नहीं हो सकता। घर में कमलेश्वर की ताई भी रहती हैं। उसकी बहू तथा वे डॉक्टर कुमार तथा सुमित्रा की बातें चोरी–चोरी सुनते हैं। डॉ0 कुमार कमलेश्वर को राँची से ले कर आते हैं सारी आवश्यक हिदायतें देकर वापस चले जाते हैं। पागलपन के दौरे में वह आत्महत्या की कोशिश पहले भी कर चुका है। घर पर वह नींद की दवा खा लेता है। तथा उसकी मृत्यु हो जाती है। ताई का बेटा सोमेश्वर पुलिस इंसपेक्टर को यह समझाता है कि कमलेश्वर के मरने में सुमित्रा का हाथ है। तथा वह सुमित्रा एवं डॉ0 कुमार के बीच जो वार्तालाप हुआ था उसे अपने शब्दों में तोड़ मरोड़ कर पेश करता है। पुलिस सभी का बयान लेती है– सुमित्रा, डॉ0 कुमार, रमा, बूढ़े नौकर बेनी।

1– स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटक विचार तत्व –डॉ0 अवधेशचन्द्र गुप्त पृष्ठ संख्या– 250

रमा सारा इल्जाम अपने सर पर ले लेती है। वह कहत है कि भैया की दशा उससे देखी नहीं जाती थी इसलिए उसने भैया को नींद की गोलियॉ खिला दीं। डॉ0 कुमार के पूछने पर वह कहती है कि भाभी का सिन्दूर तो हमने पहले ही काला कर दिया था। भैया के होने न होने से क्या फर्क पड़ता। अतं में ज्ञात होता है कि कमलेश्वर ने खुद ही गोलियॉ खा ली थीं। उसने सुमित्रा की चाभियों से चाभी लेकर खुद आलमारी से गोलियॉ निकाल लीं थी। यह नाटक सामाजिक व्यंग्य है। एक सर्वगुण सम्पन्न लड़की को एक पागल आदमी के साथ बॉध दिया जाता है, बिना सोचे कि वह भी इन्सान है। उसकी भी कुछ इच्छायें हैं। समाज पर करारा व्यंग्य है। किसी औरत के चरित्र पर लांछन लगाना कितना आसान है। अगर उसे नीचे गिराने के लिए` दूसरा कोई रास्ता नही है तो चरित्र को ले कर उसे लोगों की नजरों में गिराया जा सकता है।

2— बी0ए0 बीबियॉ

प्रस्तुत एकांकी में उन महिलाओं का वर्णन है जो पढ़ी लिखी हैं जागरुक हैं, क्लबों, पार्टियों में जाती हैं। एक दूसरे को किसी से कम नही समझती हैं। फैशन के प्रति अत्यधिक लगाव है। किसी को अपने कर्तव्यों की परवाह नहीं है, बस आपस में छींटाकशी खींचातानी चलती है। मिसेज शर्मा विमेन होम की प्रेसिडेन्ट हैं वह एक नाटक करवाना चाहती हैं। मेम्बर्स को ही पार्ट प्ले करना है। हर औरत हिरोइन बनना चाहती है। पर समय से कोई नहीं आती। वे आपस में अपनी साड़ी, मेंकअप लिपिस्टिक डिस्कस करती हैं।विमेन होम की समस्याओं से उन्हें कोई मतलब नहीं हैं। नाटक की ड्रेसेज को लेकर भी आपस में लड़ती हैं। महिलायें मशहूर शायर गालिब के जीवन पर नाटक का रिर्हसल करती हैं। उर्दू के शब्दों का सही उच्चारण वे लोग नहीं कर पाती हैं। दो लड़कों को मिसेज शर्मा, गालिब व बहादुरशाह जफर का रोल करने के लिए ले आती हैं किन्तु वे भाग जाते हैं। इतनी सारी महिलाओं के बीच में काम करने में उन्हें हिचकिचाहट महसूस होती है। दूसरा नाटक शकुन्तला है उसमें भी हिन्दी के कठिन शब्दों पर अटकती हैं। मिसेज शर्मा उन्हें समझाती हैं। पर उनका कहना है कि जब वे उन शब्दों को समझ नहीं सकती तो इमोशन कहॉ से ला सकती हैं। मिसेज शर्मा नया नाटक लिखने की बात करती हैं तो उनका मत है कि नाटक अंग्रेजी में होना चाहिए। मिसेज शर्मा नाटक का टाइटिल रखती हैं श्रीमती' बी0 ए0 बीबियॉ '। बी0 ए0—इग्लिश, श्रीमती—हिन्दी, बीबियॉ उर्दू शब्दों को लेकर। जिसमें सभी हिरोइन होंगी। सभी अपने—अपने करेक्टर, अपने—अपने मिजाज, अपने—अपने व्यक्तित्व की हिरोइन होंगी। एक सफल व्यंग्य

परक नाटक है। सामाजिक व्यंग्य को बहुत ही सरल ढंग से उभारा गया है। ऐतिहासिक पुट देकर लिखा गया हास्य नाटक है। पढ़ी लिखी आधुनिक सुविधापरस्त महिलायें जिन्हें घर में कोई काम नहीं है, उनके खाली समय किस तरह बीतते हैं। इस नाटक में यह भी दर्शाया गया है कि उनका आधुनिकीकरण अभी भी साड़ी, लिप्सिटिक के डिस्कशन के ऊपर नहीं पहुँच पाया है। एक दूसरे का मजाक बनाना, एक दूसरे पर छींटाकशी करना, रोल के लिए झगड़ना उन्हें बहुत प्रिय है।

3– ' जाको राखे साइयॉ '

प्रस्तुत एकांकी में विमला रैना ने यह दिखाया है कि जिसकी रक्षा भगवान करते हैं उसका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता है। प्रकाश, उसकी पत्नी शकुन, उसकी मॉ और बहन रश्मि एक घर में रहते हैं। शकुन के भैया आर्मी में हैं। आर्मी में एक कैप्टन है राकेश जिसे रश्मि प्यार करती है। वह रश्मि को प्यार करता है। रश्मि बहुत अच्छी लड़की है। उसके भैया उसे बहुत चाहते हैं। उसकी शादी एक आई0 ए0 एस0 लड़के से करना चाहते हैं। वह लड़का हीरा अच्छा लड़का है रश्मि उसे पसन्द है। रश्मि को शादी की बात पता चलती है तो वह अपनी भाभी से राकेश के विषय में बात करती है। तथा भाभी के माध्यम से भाई तक अपनी बात पहुँचाती है। उसके भैया को यह बात अच्छी नहीं लगती। अपनी मॉ से भी वह बात करता है, उसे भी यह बात पसन्द नहीं है। उसकी नौकरी इन लोगो को बिल्कुल पसन्द नहीं है तथा वे लोग इनके स्टेटस के नहीं हैं क्योकि उनके पास इतना पैसा नहीं है। इसी बीच चीन और भारत की लड़ाई होती है। राकेश का कुछ पता नहीं लगता है। रश्मि की शादी हीरा से हो जाती है। हीरा शादी से बहुत खुश है। रश्मि थोड़ी घबराई थोड़ी सहमी सी रहती है। हीरा बहुत कोशिश करता है कि रश्मि पहले जैसे खुल कर हँसे। प्रकाश रश्मि को मायके बुलाता है, पर वह अकेले आने से मना कर देती है। हीरा उसे साथ लेकर आता है। सुबह ही दौरे पर चला जाता है। रश्मि अपनी भाभी से कहती है कि हम गाड़ी से चलकर बीच में हीरा को कम्पनी दे, किन्तु इसी बीच फोन आता है कि हीरा घायल हो गया है। उसका ऐक्सिडेन्ट हो गया है इस एक्सीडेन्ट में हीरा की मृत्यु हो जाती है। राकेश दो महीने सारी परेशानियों को झेलते हुए, किसी तरह अपना जीवन बचा कर वापस आ जाता है। दिनेश भैया का एक पैर चला जाता है। दिनेश भैया तथा राकेश रश्मि के घर आते हैं, क्योंकि दूसरे दिन राकेश को वीर चक्र मिलने वाला है। राकेश को देख कर शकुन कहती है–जाको राखे साइयॉ मार सके न कोय। यह एक सामाजिक नाटक है। हमारे समाज में डिफेन्स की नौकरी को लेकर लोगों के मन में एक गलत

बात जुड़ गयी है कि इसमें खतरा है। लेखिका ने यह दिखाने की सफल कोशिश की है कि जो जिसके साथ होना है होगा इसके लिए जरुरी नही कि डिफेन्स की नौकरी हो। सीधी साधी नौकरी वालों के साथ भी बुरा हो सकता है, जब तक ऊपर वाला मेहरबान है कुछ नहीं हो सकता है।

4– खाली साहब

प्रस्तुत नाटक विमला रैना का एक हास्यपरक नाटक है। एक परिवार जिसमें पति पत्नी एक छोटा बच्चा तथा नौकर है। पति सर्विस करता है।शीला का नौकर छंगू जो गॉव का रहने वाला है वह शीला को बहू जी तथा उसके पति को प्रकाश बाबू कहता है।शीला इस बात को पसन्द नही करती। वह कहती है तुम मुझे मेम साहब तथा प्रकाश को साहब कहा करो। नौकर समझ नही पाता । बाबू साहब कहता है तो शीला समझाती है बाबू साहब नही खाली साहब। वह समझता है कि खाली साहब। वह प्रकाश को खाली साहब ही कह कर बुलाता है। बहुत ही बातूनी किस्म का आदमी है। एक आदमी उनके घर आता है जो बताता है कि वह चाचा जी है।शीला व प्रकाश दोनो उस समय घर पर नही हैं। चाचा जी सीधे बर्मा से आये हैं वह उन दोनो की शादी में भी नही आये थे। धीरे से एलबम से फोटो निकाल लेते हैं। छंगू को दिखाते हैं कि ये ही उसके साहब मेम साहब हैं न वह हॉ कहता है। बच्चे की भी तस्वीर दिखाते हैं। आराम से रहते हैं छंगू चाय पिलाता है, पुलिस खोजते हुए आती है कि स्मगलर इधर आया है कहीं आपके घर में तो नहीं । छंगू मना करता है। प्रकाश आता है तो समझता है शीला के चाचा हैं । वह नाश्ते वगैरह का सामान लाने बाहर चला जाता है।शीला आती है वह समझती है कि प्रकाश के चाचा जी हैं वह पैर छूती है, सिर ढकती है। बहुत ही प्यार व अपनेपन से बातें करते हैं। दोनो के लिए विदेशी घड़ियां तथा बच्चे के लिए खिलौना लाये हैं। चाचा जी किसी से मिलने होटल चले जाते हैं। तथा उनका आर्शीवाद का तार मिलता हैं। घर में देखने पर ज्ञात होता है कि घर में रुपये गहने सब गायब हैं। प्रकाश सच में खाली साहब बन के रह जाता है।

5– रोटी और कमल का फूल

प्रस्तुत नाटक राजनैतिक नाटक है। रोटी और कमल का फूल क्रांति का प्रतीक है। नाटक का कथानक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को ले कर लिखा गया है। रोटी आम रिआया के इंकलाब का पैगाम है। ' कमल का फूल ' हक्के आजादी दीन और ईमान का पैगाम है।

प्रस्तुत नाटक में बहादुर शाह जफर के शासनकाल का समय दर्शाया गया है। नाना साहब, लक्ष्मी बाई, ने इंकलाब में शामिल होना स्वीकार कर लिया है। रानी लक्ष्मी बाई, नाना साहब, तात्या टोपे ने 31 मई को बगावत की तारीख तय की थी, पर मंगल पांडे के केस के कारण बगावत 10 मई को ही हो जाती है। सभी तैयार नहीं हैं। पर साथ तो देना ही है। बादशाह बहादुर शाह का बेटा शहजादा कोयाश भी फिरंगियों से मिल गया है। इसके बदले फिरंगी उसे ही तख्त का वारिस बनायेंगें। नाना साहब व तात्या टोपे दोनों बादशाह से मिलते हैं तथा रोटी और कमल के फूल का तोहफा देते हैं। रोटी आम जनता के लिए है कमल का फूल फौजी का हक है। बादशाह तोहफा स्वीकार करते हैं। बादशाह कमल का फूल अपनी बेगम जीनत को देते हैं क्योंकि कमल का फूल तैमूरी इज्जत का निशान है। रोटी अपने शहजादों को देते हैं क्योंकि बादशाह के बाद वे ही रिआया के आका हैं। बादशाह का खास आदमी इलाहीबख्श अंग्रेजों से मिल गया है। उसकी चाल में सभी आ जाते हैं। वह कभी जीनत महल जो मल्का–ए– आलम को चाहता था। पर उन्हें हासिल न कर सका। अपने अन्दर के बदले को दबाए वह बादशाह का खास आदमी बना रहता है। पर अवसर पाते ही वह अपना बदला जीनत महल व बादशाह से ही नहीं अपने वतन से लेता है। कुछ गद्दारों के कारण देश कहॉ से कहॉ पहुँच गया। वह बादशाह को बन्दी बनवा देता है। पूरे महल को फिरंगी सिपाही घेर लेते हैं। महल में जितने लोग भी उपस्थित हैं उन्हें बन्दी बना लेते हैं। बादशाह हजूर को अनेक बेटों व पौत्र के सर तोहफे के रुप में भेंट किये जाते हैं। फिर भी बहादुरशाह जफर के दिल में कोइ खौफ नहीं है। उनका कहना है कि जितना ही तुम शोलों को मिटाने की कोशिश करोगे आग उतनी ही बुलन्द होती जायेगी। बादशाह कहतेहै

" हिन्दिओं में बू रहेगी जब तलक ईमान की।
तख्त लन्दन तक चलेगी तेग हिन्दुस्तान की। "

6–" धरती रुठ गई "

विमला रैना का यह नाटक ग्रामीण समस्याओं को लेकर लिखा गया सामाजिक नाटक है। गॉव के लड़कों को उनके माता पिता शहर में पढ़ने के लिए भेजते हैं वे शहर जा कर गॉव को भूल जाते हैं। हरिया और रनिया अपने बेटे किशन को दिल्ली भेजते हैं किशन बहुत ही समझदार लड़का है वह छुट्टियों में घर न आ कर टूरिस्ट गाइड का काम करके कुछ पैसा इकट्ठा करना चाहता है जिससे लाला का कर्ज उतारने में मदद मिले। उसके गॉव न आने से गॉव वाले तरह–तरह की बातें बनाते हैं। उसके मॉ–बाप को दुःख होता है, उसकी पत्नी भी

गॉव में है। गॉव का लाला तो यहाँ तक कहता है कि दुलहिन का छुट्टा–छुट्टी करा दो। उसके पिता उसके चचेरे भाई बुधुआ को दिल्ली से किशन को वापस लाने के लिए भेजते हैं बुधुआ अकेला आता है। किशन बाद में आयेगा अभी उसे कुछ काम है। बुधुआ के अकेले आने पर वे लोग निराश हो जाते हैं। बुधुआ भी दिन भर दिल्ली के ही सपने में डूबा रहता है। वह भी कुछ दिन दिल्ली ही रहना चाहता है। हरिया को देख बैजू कहता है कि सारे गॉव के लड़के ही चाहते हैं कि उन्हें शहर में पढ़ने के लिए भेजा जाय। अगर यही हाल रहा तो गॉव का क्या होगा। हम बूढे लोग कब तक खेती करेंगे। धरती मैया रुठ जायेगी, इन्हीं सब कारणों से सूखा–बाढ़ आती है, अकाल पड़ता है। क्योंकि धरती मैया का निरादर हो रहा है। बुधुआ के दिल्ली के सपनों , बातों के कारण सभी के मन में दिल्ली को देखने का लोभ होता है। एक दूसरे के चोरी–चोरी जाना चाहते हैं। किन्तु सभी को बुधुआ के माध्यम से एक दूसरे की बातें पता चल जाती हैं । इसलिए हरिया , रनिया, दुलहिन, चम्पिया, हरिया का दोस्त बुधुआ के साथ दिल्ली जाते हैं दूसरे दिन वापस आ जाते हैं क्योंकि किशन आगरा गया हुआ है। वहॉ से सीधे गॉव आयेगा। एक अमेरिकन महिला के साथ किशन गॉव आता है उसे गॉव दिखाता है तथा अपने घर लाता है। घर में सभी से मिलवाता है। मॉ–बाप थोड़ा नाराज से लगते हैं। पर थोड़ी देर में सभी खुश हो जाते हैं। अमेरिकन लेडी उनका घर देखती है, तो मॉ को बुरा लगता है कहती है चौका जूठा हो गया। अमेरिकन लेडी फोटोग्राफ्स खींचती है। चम्पी तथा दुलहिन को कुछ उपहार देती है। तथा होटल चली जाती है। किशन घर वालों से मिलता है उसी समय 'उसका चचेरा भाई बुधुआ आ कर उसे बताता है कि गॉव का लाला भूमि में चला गया। बुधुआ गॉव का सीधा साधा लड़का है वह समझता है कि लाला मर गया धरती मॉ ने उसे अपने अन्दर समा लिया। किशन जा कर सब पता करता है तो पता चलता है कि वहॉ जमीन के अन्दर लाला ने गोदाम बना रखा है, जिसमें वह सारे अनाज रखता है। किशन लाला के गोदाम में अपना ताला लगा देता है तथा लाला से कहता है कि लाला आप पुलिस को सही सही बात बता देना कि आपको गोदाम बनाने के लिए पैसे किसने दिए। लाला सब कुछ पुलिस को बता देता है। गॉव वाले किशन की पीठ ठोंकते हैं किशन के पिता फिर भी नाराज हैं क्योंकि उन्हें लगता है,किशन वापस दिल्ली चला जायेगा। किशन बताता है कि गॉव में मनोरंजन के साधन विकसित किये जायें जिससे गॉव के लड़के गॉव में रहना पसन्द करें। उसकी बातें सभी को पसन्द आती हैं। सब उसे शाबासी देते हैं। सभी खुशियॉ मनाते हैं।

7– " शायद "

विमला रैना का नाटक शायद एक सामाजिक नाटक है । कालेज में दोस्तों का एक समूह है जिसमें लड़के लड़कियाँ हैं। कुछ हॉस्टल में रहते हैं कुछ शहर में। सभी अंतिम दिन पिकनिक से लौटकर हमेशा के लिए विदा लेते हैं। उन्हीं में एक लड़की शशि है जो वहुत प्यारी है। जो सबका ख्याल रखती है सभी उसे बहुत प्यार करते हैं। शशि को प्रदीप तथा राजू लड़के जो उसके घर के दोनों तरफ रहते हैं, दोनों बहुत प्यार करते हैं। बचपन से तीनों साथ–साथ खेले पढ़े तथा बड़े हो गये। प्रदीप तथा राजू भी अच्छे दोस्त हैं प्रदीप राजू को अपने घर में अपने साथ ही रखता है क्योंकि राजू के हॉस्टल चले जाने के बाद उसे अच्छा नहीं लगता । पर दोनों का स्वभाव बिल्कुल विपरीत है। दोनों एक दूसरे के पूरक है। प्रदीप अपने ममेरी बहन मंजू के माध्यम से शशि से शादी का प्रस्ताव भेजता है। मंजू भी इन्हीं लोगों की सहपाठी है तथा पढ़ाई के बाद शादी कर लेती है। शशि शादी के लिए मना करती है। उसका कहना है कि उसे रिसर्च करना है। उसे नौकरी करनी है। पर वह शादी कर लेती है। पति प्रदीप के साथ बहुत खुश है। इसी बीच राजू की बहन का फोन आता है कि राजू बीमार है तथा उसे दिल्ली के हॉस्पिटल में लाया जा रहा है। प्रदीप व शशि उससे मिलते है तथा उसे ठीक होने पर आराम के लिए अपने घर ले आते हैं। प्रदीप अपना बेडरुम राजू को देता है कि उसे कुछ बुरा न लगे कि उसके घर में राजू के लिए जगह नहीं है। सब अच्छी तरह चलता है। प्रदीप आए दिन पार्टी में जाता रहता है। राजू के आने पर शशि हर बार उसके साथ पार्टी में नहीं जाती । पहले भी उसे पार्टीज पसन्द नहीं थी। प्रदीप अकेले पार्टी में जाता है। उसके कुछ पुराने दोस्त शशि के न आने पर राजू व शशि को लेकर कुछ उल्टी सीधी बाते करते हैं। प्रदीप घर आकर शशि पर सन्देह करता है। राजू तो सन्देह की भनक लगते ही इनका घर छोड़कर चला जाता है। शशि को भी इतना दुःख होता है कि पागल जैसी हो जाती है तथा घर छोड़कर चली जाती है। उसकी सहेली मंजू उसे स्टेशन से वापस लाती है। प्रदीप को भी अपनी बात का दुःख लगता है कि उसने दूसरे की बातों में आकर अपनी पत्नी व सबसे प्यारे दोस्त को क्या–क्या कह दिया। वह शशि से माफी माँगना चाहता है। पर शशि का हर यकीन पर से विश्वास उठ गया है। उसने स्नेहिल ममता तो राजू से भी है वह इस बात से इनकार नहीं करती पर प्रदीप तो उसका पति है, उससे तो उसे सबसे ज्यादा प्यार है। वह इस बात को क्यों नहीं समझता । वह मेरठ चली जाती है इस आस पर कि शायद फिर कभी वह इन सब रिश्तों को पहले की तरह ले सके, पर उसे विश्वास नहीं है।

8— बिखरे बन्धन

विमला रैना का प्रस्तुत नाटक एक पारिवारिक नाटक है। छोटा सा परिवार है पति,पत्नी दो बच्चे। कैलाश ने रीता से प्रेम विवाह किया था। पर अब वह कैलाश के साथ खुश नहीं है। भटक गया है। रीता भी अपने अहं से परेशान है। युवती जब पत्नी और पत्नी के बाद माँ बनती है। तो उसमें जो बदलाव आता है। पहले वह केवल कैलाश की प्रेयसी थी। अब दो बच्चे बबलू और डॉली की माँ है,कैलाश की पत्नी है घर परिवार की गरिमा दायित्वों से पूर्ण है उसमें एक अलग प्रकार की गरिमा है। पर पति कैलाश आज भी उसमें अपनी प्रेयसी रीता को ढूँढता है। कैलाश भी आज नितान्त प्रेमी नहीं है। दो प्यारे—प्यारे बच्चों का पिता है। रीता का पति है। पर वह इस बदलाव को स्वीकार नहीं कर पाता। फलस्वरुप परिवार टूट जाता है। प्यार का बन्धन बिखर जाता है। बच्चे हॉस्टल चले जाते हैं रीता नौकरी कर लेती है। अलग घर में रहती है। बच्चों की छुट्टियों में रीता डॉली को अपने पास ले आती है। बबलू को कैलाश अपने घर ले जाता है। डॉली घर आ कर बबलू और अपने पापा को नहीं पाती तो उसे बहुत दुःख होता है। वह बीमार हो जाती है। डॉक्टर कहता है कि इसकी यह हालत शॉक की वजह से है। रीता कैलाश व बबलू को बुलाती है। कैलाश जब डॉली की हालत देखता है तो उसे परिस्थितियों का एहसास होता है। उसे अपनी गलती समझ में आती है। फिर वे सभी एक साथ प्यार से रहने लगते हैं। बन्धन जो बिखर गये थे फिर एक हो जाते है।

9— तालियाँं

प्रस्तुत नाटक की नायिका शोभा नृत्यांगना है। एक मनुष्य के लिए तालियों का क्या महत्व है, ये तालियॉ कब तक उसका स्वागत करती हैं,उसके लिए बज सकती हैं,तथा तालियों की भूख कितनी असीमित है। मनुष्य के मन के इसी मनोवैज्ञानिक सत्य को उजागर करता है प्रस्तुत नाटक। शोभा को नृत्य का रियाज करना है तथा स्टेज पर उसकी पहली परफारमेंस है। वह आशीष को प्यार करती है। आशीष उसे बहुत चाहता है। उसके मॉं पिता जी भी उसे बहुत पसन्द करते हैं। पर आशीष के पिता को यह पसन्द नहीं कि उनकी बहू लोगों के सामने नृत्य का प्रोग्राम दे। उसके चाचा को भी शोभा पसन्द है। प्रेस रिव्यू में उसके लिए बहुत कम तालियॉं बजती हैं, वह आहत होती है, उसके आत्मसम्मान को चोट लगती है तथा वह सोचती है कि वह आशीष का सामना कैसे करेगी। आशीष उसे समझाता है कि उसे शोभा से प्यार है, नृत्य साम्राज्ञी शोभा से नहीं। वह उसे वचन देती है कि एक बार स्टेज पर परफोरमेंन्स के बाद वह नृत्य छोड़ देगी। एक बार लोग उसे जान लें। आशीष के चाचा शोभा के सम्मान को बचाने

के लिए तालियों का इन्तजाम करते हैं। प्रेस वालों से उनके अच्छे सम्बन्ध हैं इसलिए पेपर्स में उसकी तारीफ छपवाते हैं। अच्छे परफोर्मेंस के बाद उसे फॉरेन टूअर के प्रोग्राम मिलते हैं। वह सबको छोड़ कर अपने लिए तालियाँ इकट्ठा करने चली जाती है। आशीष को बहुत आघात लगता है। वह टूट कर बिखर जाता है। शोभा के पत्र कभी–कभी आते हैं पर उसमें भी केवल अपनी खुशियों का ही वर्णन है। कहीं भी आशीष के वियोग का दुःख नहीं है। आशीष के घरवाले भी उसकी इस दशा से चिन्तित हैं। आशीष के घर के पास एक लड़की रेनू रहती है उसे आशीष की माँ बहुत पसन्द करती है। वह एम0ए0 कर रही है पर एक घरेलू लड़की है। वह भी आशीष को प्यार करती है इस बात को आशीष व शोभा दोनों जानते हैं। पर आशीष तो शोभा को ही प्यार करता है। आशीष के पास रेनू बार–बार आती है। रेनू कहती है मैं आपका दुःख नहीं देख सकती। वह आशीष के दुःख से दुःखी है। इसी बीच शोभा का तार आता है कि उसके पैर में फ्रैक्चर हो गया है वह वापस आ रही है। उसी समय आशीष निर्णय लेता है वह अपने चाचा से कहता है कि उसे तार दे दें कि आशीष ने रेनू से शादी कर ली। यह मेरा बहुत अच्छी तरह सोचा हुआ निर्णय है। शोभा के पैर में फ्रैक्चर हो गया, आशीष भी चला गया। तालियाँ, जिसके लिए उसने आशीष को भी छोड़ दिया था वह तालियाँ भी चली गयी। तालियों का समय हमेशा सीमित ही रहता है।

10– विकट समस्या

प्रस्तुत नाटक हास्य का पुट लिए हुए एक सामाजिक नाटक है। दिनेश और कपिल पड़ोसी हैं। दिनेश की पत्नी है, एक बहन है जो डॉक्टर है। कपिल अकेला है एक नौकर है जो घर सम्हालता है। कपिल वकील है, पर वकालत अभी अच्छी तरह जमीं नही है। कपिल से दिनेश बहुत बार कहता है कि वह शादी कर ले । कपिल का कहना है कि जब तक वह अच्छी तरह कमाने न लग जायेगा,तब तक शादी नहीं करेगा। एक दिन कपिल अपने घर दिनेश,उसकी पत्नी गौरी, तथा बहन रचना को अपने घर मछली खाने के लिए आमंत्रित करता है। मछली खाते हुए कपिल के गले में कॉंटा अटक जाता है। रचना की सहेली आयी हुई थी इसलिए वह भाभी–भाई के साथ नहीं आ पाती। दिनेश उसे लेकर आता है कॉंटा निकालने के लिए। दिनेश और उसकी पत्नी वापस घर चले जाते हैं। दिनेश अपने बरामदे से रचना तथा कपिल की बातें सुनता है। जिससे उसे ज्ञात होता है कि वे एक दूसरे से प्यार करते हैं। दिनेश कपिल को समझाता है कि रचना कमाती है ,उससे शादी करके किसी को क्या परेशानी होगी। कपिल कहता है कि जब तक वह इतना न क़मा ले कि सारा खर्च खुद उठा सके, वह शादी

नही करेगा। घर से वह सम्पन्न है, पर उसके पिता ज्यादा पैसा नहीं देते कि बिगड़ जायेगा। दिनेश एक प्लान बनाता है। वह कपिल के पापा को सारी बातें बताता है जिससे वह शादी के लिए तैयार हो जाते हैं वे कपिल की जल्दी शादी करना चाहते थे, पर कपिल की जिद के कारण परेशान थे। दिनेश कपिल के पिता से मेरठ से मिल कर वापस आते ही स्टेशन से फोन करता है कि कपिल तैयार है। आप एक टेलीग्राम से अपना आर्शीवाद भेज दें तथा यहाँ तुरन्त आ जायें। घर आ कर वह अपनी पत्नी से कपिल को बुलवाता है तथा बताता है कि रचना की सगाई हो गयी। लड़का वकील है तथा उसका दोस्त है। रचना से भी कहता है कि वह कपिल के पूछने पर यही बताये। रचना को बताता है कि यह एक मजाक है बस रचना को उसका साथ देना है। कपिल रचना से पूछता है तो रचना भी वही बताती है।वह परेशान है दुःखी है। इसी बीच तार आता है तथा पापा जी भी आ जाते हैं। पापा जी आकर कपिल को आर्शीवाद देते हैं। रचना को सोने के कड़े पहनाते हैं। तथा अपनी बहू स्वीकार कर लेते हैं। कपिल बहुत खुश होता है। पर याद आने पर कहता है कि तुम्हारी सगाई तो किसी और के साथ हो गयी है। रचना बताती है वह भैया के दोस्त और वकील तुम ही हो। कपिल की सबसे विकट समस्या आसान हो जाती है। वह रचना के खोने के डर से भूल जाता है कि उसने कुछ और सोचा था।

11— दी क्रिटिक

प्रस्तुत नाटक ' दी क्रिटिक ' नये साहित्यकारों के ऊपर व्यंग्य है। आभा व संदीप मुख्य पात्र हैं। संदीप व आभा नाटकों में काम करते हैं , आफिस में काम करते हैं। दोनों एक दूसरे को बहुत प्यार करते हैं। आभा अपने छोटे—छोटे सुख में सुखी रहना चाहती है पर संदीप बहुत ही महत्वाकांक्षी है। उसकी जान पहचान कौशल जी से है, जो आलोचक हैं। नाटकों के ऊपर आलोचना लिखते हैं। कौशल जी एक पत्रिका प्रकाशित करते हैं। जिसमें संदीप व उसके मित्रों को काम देते हैं। संदीप को आलोचना का काम मिलता है।वह नाटकों की आलोचना लिखता और कौशल जी की पत्रिका में प्रकाशित करता है। पत्रिका की बिक्री हो जिससे फायदा हो उसमें फिल्मी समाचार भी लिखे जाते हैं। बड़े—बड़े लोगों के इन्टरव्यू भी होते हैं। पत्रिका हिन्दी, अंग्रेजी दोनो में निकले जिससे ज्यादा लोगों के बीच पढ़ी जा सके। संदीप इतना व्यस्त हो जाता है कि आभा के लिए समय भी नहीं दे पाता। आभा उसकी आलोचनाओं को पढ़ कर दंग रह जाती है। जो नाटक उसने अच्छी तरह देखा, उसे शुरु से ले कर अन्त तक उत्सुकता बनी रही, हर पात्र के अभिनय को सराहा, उसी नाटक की आलोचना में उसने लेखक निर्देशक की धज्जियाँ उड़ा दीं क्योंकि उससे उस लेखक निर्देशक से दोस्ती नहीं है।

जिस नाटक में वह ऊंघता रहा, उस नाटक की प्रशंसा के पुल बॉध दिए। पत्नी आभा को यह सब अच्छा नहीं लगता है। जब संदीप को समझाती है तो उसे बुरा लगता है। वह समझता है कि आभा को संदीप का आगे जाना अच्छा नहीं लगता। क्रिटिक बनना उसकी जिन्दगी का सबसे बड़ा सपना है। उसे अपने कथन पर पश्चाताप भी है। फिर भी वह आभा से कुछ नहीं कहता। अब उसके लिए आभा का वह स्थान नहीं है जो पहले था।

12– मृत्यु का स्पर्श

' मृत्यु का स्पर्श ' विमला रैना का एक सामाजिक नाटक है। प्रस्तुत नाटक का नायक अखिलेश बहुत पैसे वाला सुन्दर सा नवयुयक है, किन्तु वह दमें का रोगी है। उसे कभी –कभी दौरा पड़ जाता है। उसका बहुत बड़ा होटल है। उसकी जीजी जो शादीशुदा है। जब भी उसके बीमार होने की खबर मिलती है वह बार–बार आ जाती है। अखिल को यह बुरा भी लगता है कि जीजी अपने घर को छोड़ कर बार–बार उसके लिए परेशान होती है। नौकर, बैरा , मुंशी जी सभी हैं, पर जीजी ने छोटे से अखिलेश को पाल कर बड़ा किया है। उनका दिल नहीं मानता। वे चाहती हैं कि कोई नर्स हो या ऐसा कोई हो जो अखिलेश का ध्यान रखे। उसे कम्पनी दे तथा अखिलेश की खबर उसे पत्र के माध्यम से दे। नौकर मुरली उसे बताता है कि पुराने मुंशी जो बीमार हैं, उनके घर की हालत ठीक नहीं है। उनकी बड़ी लड़की नौकरी की तलाश में है। जीजी सुषमा को बुलाकर इस काम के लिए पूछती हैं। सुषमा बहुत एहसान मानती है क्योंकि उसके काम करने से उसके छोटे भाई–बहन की पढ़ाई पूरी हो सकेगी, उसके पिता को दवा ,फल मिल सकेगा। उसका घर संभल जायेगा। अखिलेश मना करता है कि वह ऐसा तो नहीं कि उसे किसी की जरुरत हो। शादी करने के लिए भी तैयार नहीं है,फिर जीजी के समझाने पर मान जाता है। कुछ दिनों बाद पुराने मुंशी जी जीजी से कहते हैं कि सुषमा की बहुत बदनामी हो रही है। रात–रात तक वह अखिलेश के पास रहती है। जीजी अखिलेश को समझा कर दोनों की शादी करा देती है। दोनों बहुत खुश हैं। उनके घर अखिलेश का मौसेरा भाई आता है जिसको अखिलेश के पिता ने ही अपने घर में पाला पोसा है। वह अखिलेश से उम्र में बड़ा है। स्वस्थ सुन्दर पर अन्दर से अखिलेश से जलता है। उसे अखिलेश की खुशी अच्छी नहीं लगती है। वह सुषमा को गलत निगाह से देखता है तथा तरह–तरह की बातें बनाता है। उसने सुषमा को बड़े होने के बाद पहले क्यों नहीं देखा। वह सेल्स रिप्रेजेंटेटिव है। हर सप्ताह वह भीमताल इन लोगों के पास आता है। हर बार चार पॉच दिन रहता है। वह अखिलेश को ले कर पिकनिक पर जाता है, पहाड़ की चढ़ाई, वोटिग,

स्वीमिंग सभी जगह ले जाता है। अखिलेश यह दिखाने के लिए कि उसे कुछ नहीं हुआ है वह सभी करता है जो सोम करता है। सोम उसे दवाई की शीशी देता है जो उसे जैसे ही आभास हो कि अटैक हो तो खा ले । अखिलेश के डॉक्टर उसे इन सब बातों के लिए मना करते हैं जिससे उसे फिजिकल या मेंटल स्ट्रेन पड़े। उसका हार्ट भी वीक है इसलिए डॉक्टर उसे सोम की दी हुई दवा खाने को मना करते हैं। पर अखिलेश नहीं मानता है और सुषमा भी उसे नहीं रोकती। सुषमा सोम के प्रति आकर्षित होती है पर दोनो डायवोर्स लेने के पक्ष में नही हैं। सुषमा अखिलेश को दु:ख नहीं देना चाहती और सोम पत्नी का खर्च वहन करने में असमर्थ है। अखिलेश को इस परिस्थिति का आभास हैं पर वह व्यक्त नही करता। उसकी कविताओं उसकी बातों से ऐसा लगता है जैसे उसे जिन्दगी से प्यार नहीं है अखिलेश की मृत्यु के बाद सोम सालों के बाद इस आशा के साथ आता है कि सुषमा अब केवल उसकी है। पर सुषमा को वह बिल्कुल अलग रुप में पाता है। सुषमा प्रायश्चित करना चाहती है। उसके मन में, आत्मा में, शरीर में मृत्यु की सिहरन है। अखिलेश की मृत्यु के बाद पता चला कि मुझे अखिलेश से कितना प्यार था। वह आज भी सुषमा के मन में जीवित है। जिस बात को वह अखिलेश के जीवित रहते महसूस न कर सकी उसकी मृत्यु ने उसका एहसास करा दिया। सुषमा कहती है अखिलेश की मौत के लिए वह जिम्मेदार है क्योंकि वह उन गोलियों को फेंक भी सकती थी। वह फिजिकल स्ट्रेन को रोक सकती थी। वह मरा नहीं अखिलेश ने आत्म हत्या की ।

13– ' उसके बाद '

प्रस्तुत नाटक ' उसके बाद ' आधुनिक समाज की विडम्बनाओं को अपने में समेटे हुए एक प्रभावशाली नाटक है। इस नाटक में दो बहनें हैं, दोनों शादीशुदा हैं। बड़ी जीजी कम्मो अपने पति बच्चों व अपने घर में खुश हैं। पूर्णतः संतुष्ट हैं। छोटी निशी की शादी के तीन महीने पश्चात् उसके पति अमेरिका चले गये हैं। तब से वह अपने पिता के घर में रहती है। पति वापस आने वाले हैं। मन में कुछ अर्न्तद्वन्द हैं। जिसे वह समझ नहीं पाती। अपनी बातों को पूरा खोल कर नहीं फिर भी कहती है पर जीजी समझती है जब दोनों साथ में रहेंगे तो सब ठीक हो जायेगा। पर उसकी बातों से यह स्पष्ट झलकता है कि जो अपने प्रिय के वियोग का दु:ख है वह उसे नहीं है। तीन महीने तो एक दूसरे को समझने के लिए बहुत हैं। उसके जीजा जी कहते हैं एक पल भी कभी सारी जिन्दगी के लिए काफी होता है। निशी का पति राजेश वापस लौटता है उसे निशी के शहर में ही कुछ महीनों का काम है इसलिए वह निशी के पिता के घर में ही ठहरता है। पर राजेश वापस आने पर निशी के मन में अपने लिए वह जगह नहीं पाता जो

एक पत्नी के मन में होती है। वह ऑफिस ,ऑफिस के बाद क्लब में टेनिस, फिर ब्रिज खेलता है, फिर घर आकर फाइल्स वगैरह देखता है । इस तरह वह पूरी तरह व्यस्त है निशी अकेली है। उसका सहपाठी मुकुन्द रास्ते में मिलता है। राजेश को उससे मिलने का समय नहीं है। उसे अपमानित कर देता है। इसी बीच वे लोग कलकत्ता चले जाते हैं। मुकुन्द को प्रेस में नौकरी मिलती है कलकत्ता में। पर निशी ने उसे सौगंध दिलवा दी है कि वह निशी के घर कभी न आए। मुकुन्द की बहन अंजू भी निशी की अच्छी सहेली है । वह निशी से मिलने आती रहती है पर उसे भी निशी की मनःस्थिति का आभास नहीं है। अंजू ,मुकुन्द तथा निशी फिल्म देखने जाते हैं। लौटते समय टैक्सी बिगड़ जाती है निशी को घर लौटने में ग्यारह बज जाते हैं। राजेश उसे भला बुरा कहता है। उसका कहना है अंजू निशी को बुलाने आती है। पर घूमने वो दोनो जाते हैं। राजेश दूसरे दिन निशी को बिना बताये नौकरों को साथ ले कर टूर पर चले जाते हैं। निशी घर से चली जाती है। राजेश निशी के पिता को पत्र लिखते हैं कि निशी किसी अन्य पुरुष के साथ भाग गयी है। इस घटना से दुःखी निशी के पिता को पूरा पैरॉलिसिस हो जाता है। कम्मो जीजी पापा का घ्यान रखने आती हैं पर पैरालिसिस का कारण समझ नहीं पातीं। एक दिन वह पत्र मिलता है तो वह तार भेज कर अपने पति को बुलाती है वे लोग परेशान हैं। निशी ऐसा तो नहीं कर सकती। शायद उसने आत्म हत्या कर ली हो। अंजू को एक इंटरव्यू के लिए बाम्बे जाना है जिन लोगों को इंटरव्यू में बुलाया है उनका नाम पेपर में छपा है। वह पेपर लेकर कम्मो जीजी के पास जाती है। उसी पेपर में मिस मरीचिका की तस्वीर छपी है। जीजा जी देखते हैं फिर उसे निशी की तस्वीर से मिलाते हैं। जीजा जी के कहने पर कम्मो जीजी यह मानने को तैयार नहीं हैं कि वह मिस मरीचिका हो सकती है। कहॉ निशी इतनी सुन्दर इतनी कोमल कहॉ यह हड्डियों का ढ़ॉचा अर्धनग्न डांसर। पर जीजा जी अंजू से कहते हैं कि वह बाम्बे जा कर मिस मरीचिका से मिले। अंजू उसका डांस प्रोग्राम देखती है तो वह निशी ही है। कभी मुकुन्द ने कह था कि वह मरीचिका है उसके अवचेतन में यह बात कहीं थी। उसने अपना स्टेज का नाम मिस मरीचिका रख लिया। वह राजेश का घर छोड़कर अपने डांस मास्टर के पास बाम्बे आ जाती है। उसके गुरु जी के माध्यम से वह एक स्टेज की जानी मानी नृत्यांगना बन जाती है। उसके पास सेकेट्री है, आया है। पैसा है नाम है, बड़े–बड़े कांट्रैक्ट हैं, प्रसिद्धि है। वह स्वतंत्र होना चाहती थी स्वतंत्र है किन्तु क्या आज भी क्या उसे वह गिला जो वह चाहती थी। उसका अपना समय अपना नहीं है। दर्शक वर्ग हैं

प्रशंसकों को समय चाहिए। रियाज के लिए समय चाहिए। हर वक्त मन में यह है कि कोई आगे ना निकल जाय।

14– नूरजहॉ कहॉ है ?

' नूरजहॉ कहॉ है ' विनला रैना का हास्य नाटक है। प्रस्तुत नाटक में आधुनिक पात्रों जिनके नाम भी खूब आधुनिक हैं के माध्यम से 'नूरजहॉ कहॉ है' नाटक मंचित किया जाना है। सारे लड़के लड़कियॉ नाटक के रिहर्सल के लिए एकत्रित होते हैं। स्टेज के पीछे अनेकों स्थितियों से गुजरता हुआ यह नाटक स्टेज तक पहुॅचता है बहुत ही रुचिकर ढ़ंग से लेखिका ने प्रस्तुत किया है। सभी पात्र रिहर्सल के लिए इकट्ठा होते हैं। लड़के लड़कियों का खूब मजाक बनाते हैं। इस कारण से नाटक की नायिका मिम्मी नाराज हो जाती है। सारी लड़कियों को इकट्ठा कर स्टेज से दूर चली जाती है। लड़के मनाकर लाते हैं। पर अपनी पूर्व योजना के अनुसार नायक रौबी लड़कियों के आते ही चूहेदानी से चूहे खोल देता है। लड़कियॉ चीखती हैं –चिल्लाती हैं। इसी बीच डॉ0 तमाचा जो कल्चर सेन्टर की प्रेसिडेन्ट हैं आती हैं। उनका स्वागत करते हैं। वे लड़कियों के चिल्लाने का कारण पूछती हैं उनका कहना है कि चूहों से नहीं डरना चाहिए। रौबी एक चुहिया उनकी तरफ खिसका देता है, वे चीख कर मेज पर चढ़ जाती हैं। लड़कियों और लड़कों का एक कव्वाली प्रोग्राम है। जिसमें लड़कियॉ जीतती हैं। नाटक का रिहर्सल होता है। डॉ0 तमाचा का कहना है कि पात्र को अपने किरदार में डूब जाना चाहिए। सभी पात्र उसके अनुकूल भाषा का प्रयोग हमेशा करते हैं। मिम्मी जो नूरजहॉ बनी है और रौबी जो जहॉगीर बना है का झगड़ा होता है। क्योंकि जहॉगीर तो आराम से सो कर डायलॉग बोलता है पर मिम्मी की टॉगें खड़े–खड़े दुख जाती हैं । वह रौबी से कहती है कि उसे एक कुर्सी ला कर दे दे । जहॉगीर क्यों कुर्सी लाकर दे। इस बात पर झगड़ा हो जाता है। वह स्टेज छोड़ कर चली जाती है। डॉ0 तमाचा को चिन्ता होती है कि नूरजहॉ कहॉ चली गयी । कल ओपनिंग नाइट है टिकट बिक चुके हैं। तानसेन गाना गा कर मिम्मी को बुलाते हैं।सभी माफी मांगते हैं। सुबह से उसका मूड अच्छा नहीं है।क्योंकि उसके पापा जो सपने में मर गये थे। सपने में उनके मरने के बाद मिम्मी अकेले बैठी रो रही थी। वे चाहते हैं सच में ऐसा न हो जाय। इसलिए रोज एक न एक लड़के वालों को मिम्मी से मिलने के लिए बुलाते हैं। आज भी उसे एक लड़के से मिलने होटल ' ब्लू मिस्ट ' जाना है। बातों ही बातों में पता चलता है कि रौबी को भी अपने पापा के साथ ' ब्लू मिस्ट ' में एक लड़की से मिलने जाना है। लड़की का नाम ममता है। मिम्मी का ही नाम तो ममता है। तथा जिस लड़के से मिम्मी को

मिलना है उसका नाम रौबेन्द्र है। रौबी ही रोबेन्द्र है। दोनों खुश हो जाते हैं। इसी बीच डॉ0 तमाचा नूरजहॉ को खोजती हुई आती हैं। दोनों डॉ0 तमाचा को प्रॉमिस करते हैं कि कल का शो बहुत अच्छा होगा, क्योंकि सलीम को उसकी नूरजहॉ मिल गयी है।

15– ' जहरीले कॉटे '

प्रस्तुत नाटक हमारे समाज में कुँवारी मॉ बनने की समस्या को इंगित करता है। दीपा एक कालेज में पढ़ने वाली सुन्दर सुशील लड़की है। उसे नरेन्द्र नाम का एक युवक अपनी बातों के जाल में उलझाता है। दीपा उससे प्यार करने लगती है। दीपा से राजू नाम का प्रतिभावान लड़का भी प्यार करता है, पर जब वह दीपा का झुकाव नरेन्द्र की ओर देखता है तो अपने आप को दूर कर लेता है। नरेन्द्र के विषय में राजू जानता है पर वह दीपा से नरेन्द्र के विषय में कुछ भी कहेगा तो वह विश्वास नहीं करेगी इसलिए कुछ नहीं कहता। दीपा के चाचा चाहते हैं कि राजू कम्पटीशन में आ जाय तो दीपा की शादी राजू से कर दें। राजू का रिजल्ट आता है तो वह दीपा के चाचा से आर्शीवाद लेने जाता है। दीपा के चाचा से मालूम होता है कि दीपा घर छोड़ कर कहीं चली गयी । राजू चाचा जी को वचन देता है कि वह दीपा को खोज कर लायेगा । राजू दीपा की खोज करता है। बहुत खोज के बाद एक रात एक औरत सफेद फटी साड़ी पहने बच्चे को गोद से चिपकाए घूँघट से चेहरा ढ़ंके मिलती है। जिसे देख कर राजू को लगता है कि वह दीपा है। दीपा पहले स्वीकार नहीं कर पाती है कि वह दीपा है पर राजू उसका घूँघट उलट देता है फिर दीपा से घर छोड़ कर भागने का कारण पूछता है। दीपा उसे विस्तार से बताती है। नरेन्द्र उसे शादी के जाल में फंसा कर उसका फायदा उठाता है। फिर अपने घर चला जाता है। रिजल्ट आने पर फेल हो जाता है तथा नौकरी कर लेता है। कई महीने के बाद लौट कर आता है तो दीपा उसे बताती है। उसे यह स्वीकार नहीं। वह दीपा के चरित्र पर लॉछन लगाता है। दीपा बुरी तरह टूट जाती है। नरेन्द्र अपनी फर्म के मालिक की बेटी से शादी कर लेता है। दीपा को देख कर उसके घर आने वाली मालिश वाली जान जाती है कि उसके पेट में बच्चा है। दीपा की मॉ इस बात को जान कर बहुत दुःखी होती हैं वह लकवा की मरीज हैं। मुनियां दाई बच्चे को पैदा होते ही मार डालने का प्रस्ताव रखती है। उसके एवज में उसे भारी पुरस्कार की आशा है। मॉ तैयार हो जाती है। दीपा छिप कर सभी बातें सुन लेती है। उसका मन अपने बच्चे की इस निर्मम हत्या के लिए तैयार नहीं होता। वह उसी रात घर छोड़ कर कुछ पैसे व चन्दनहार जो मॉ मुनियां को देने वाली थी, लेकर चली जाती है जाकर मुनियां से प्रार्थना करती है कि वह उसके बच्चे के पैदा होने तक शरण दे और

इस बात का किसी को पता न चले। मुनियॉं सबको बताती है कि उसके देवर की विधवा पुत्रवधू उसके घर में रहने को आयी है। दीपा मुँह अंधेरे घर से निकलती है और रात को वापस आती है। जिससे कोई उसे देख भी नहीं पाता। नौकरी के लिए गयी थी वापस आते समय राजू उसे मिलता है। दीपा कहती है कि अगर यह समाज उसको उस बच्चे की मॉं होने का अधिकार देता है तो ही वह घर वापस आयेगी। उसके चाचा उसे उसके बच्चे के साथ स्वीकार करें। वह चाहती तो समाज के डर से अपने बच्चे को त्याग कर समाज के सामने कुँवारी रह सकती थी। पर मै अपने बच्चे के साथ ऐसा नहीं कर सकती थी। राजू बताता है कि वह तो उसे पहले से ही प्यार करता था पर दीपा स्वीकार नहीं कर पाती। उसे किसी की दया या एहसान नहीं चाहिए। अगर समाज ने एसे उस बच्चे की मॉं होने का हक दे दिया तो वह राजू के प्रस्ताव के विषय में विचार करेगी। राजू को वह बच्चे के साथ स्वीकार है। राजू दीपा को वहीं रोक कर चाचा जी से मिल कर सब बातें बताता है। राजू कहता है कि आप किस परम्परा व समाज की बात कर रहे हैं इसी परम्परा में महाभारत का श्री गणेश ही विधवा रानियों के अवैध सन्तान से हुआ। कुँवारी अवस्था में व्यास को जन्म देकर सत्यवती राजा शान्तनु हरिश्चन्द्र की रानी बनती हैं। वह बालक वेदव्यास कहलाता है। राजमाता कुन्ती व शकुन्तला को आर्दश मॉं का स्थान मिला ,आप दीपा को मॉं होने का अधिकार दें। आप व उसकी मॉं ही उसका समाज हैं। अगर आप ऐसा नहीं करेंगे तो भी मैं उसे अपनाऊँगा। मैं दीपा को उसके बच्चे की मॉं कहलाने का अधिकार दूँगा। चाचा जी को अपने जीवन का पिछला अध्याय याद आता है। उनका भी एक लड़का इस दुनिया में कहीं है। वे कॉंप जाते हैं और दीपा को स्वीकार कर लेते हैं। ऐसी लड़कियों के लिए हमारे समाज में कितने ही सम्बोधन हैं जिनसे उन्हें सम्बोधित किया जाता है जिसके फलस्वरुप वह अपनी संतान को ही डस लेती हैं। यही जहर उनकेशेष जीवन को भी जहरीला बना देता है। इस समाज के नियमों में परिवर्तन होते रहते हैं। हमारे समाज को इस जहरीले कॉंटे को तोड़ने के विषय में सोचना चाहिए। राजू जैसे नवयुवक ही इन कॉंटों को तोड़ने में सहायक हो सकते हैं।

16– ' यह स्वप्न भी नहीं '

प्रस्तुत नाटक ' यह स्वप्न भी नहीं ' विमला रैना का एक सामाजिक नाटक है। प्रस्तुत नाटक का ताना बाना निम्न मध्यम वर्गीय समस्याओं को ले कर बुना गया है। सुनील एक तहसीलदार का होनहार बेटा है। मधु उसके घर के पास रहती है, वह मधु को प्यार करता है। मधु जी जान से उसे चाहती है। तहसीलदार साहब सुनील को दिल्ली में रख कर पढ़ाते हैं

और उसे कलक्टर बनाना चाहते हैं पर उन्हें लकवा मार जाता है। अपने स्वास्थ्य को देखते हुए वे सुनील की शादी जल्दी कर देना चाहते हैं। सुनील मना करता है पर वे नहीं मानते हैं।शादी के दस महीने के बाद प्रदीप जन्म लेता है। पोते का मुँह देखने के बाद तहसीलदार साहब स्वर्ग सिधार जाते हैं। घर की जिम्मेदारी सुनील के कंधों घर आ जाती है बैंक के सारे पैसों से वह केवल बहन की शादी कर पाता है। जीवन निर्वाह के लिए पढ़ाई छोड़ कर क्लर्क की नौकरी ज्वाइन कर लेता है। वे लोग दिल्ली रहने आ जाते हैं। दिल्ली की मँहगाई, बढ़ता परिवार, मध्यमवर्गीय सफेदपोश जिन्दगी, अनेक समस्याओं को जन्म देती है। मधु तो इन अभावों के बाद भी खुश है। क्योंकि उसके जीवन के सपने बहुत छोटे छोटे थे, जो पूरे भी हो गये। सुनील को पाना सबसे बड़ा सपना था। इतने प्यारे प्यारे बच्चे हैं। सब शान्ति पूर्वक चला लेती है। पैसे की कमी के बाद भी वह संतुलित है, घर भी खींच खींच कर चला लेती है। पर सुनील बहुत निराश हो गया है। सारे सपने टूट कर बिखर गये हैं। मधु को लेकर कितने सपने देखे थे, पर कुछ भी ना कर पाया अपनी मधु व बच्चों के लिए। दीवाली का त्योहार आता है। बड़े दोनों बच्चे तो समझते हैं। पर छोटा मुन्ना कुछ नहीं समझता। हर चीज के लिए मचलता है। मधु बहलाती है। मधु सुनील से मुन्ना के लिए कुछ पटाखे वगैरह लाने के लिए कहती है। इसी समय उसके घर का पुराना जमादार आता है । उसे भी कुछ खरीददारी करनी है। सुनील व रामअधीन साथ–साथ खरीददारी करने जाते हैं। सुनील थोड़ा थोड़ा सामान लेता है, रामअधीन बहुत सारा सामान लेता है। छोटे मुन्ना को एक खिलौना खरीद कर देता है। जो वह लेना चाहता था पर सुनील नहीं खरीद सका। उस जमादार की महीने की कमाई सबकी मिलाकर आठ सौ रुपये है क्योंकि वह श्रमजीवी है। सभी काम करते हैं। सुनील जो तहसीलदार का बेटा है उसकी कमाई तीन सौ रुपये है । वह अपने जमीदार को त्योहार पर भी इनाम नहीं दे पाता। रामअधीन ने अपनी बेटी के लिए रेशमी साड़ी खरीदी है जैसी सुनील आठ वर्षो से खरीदने की सोच रहा है। सुनील लेटे–लेटे सपना देखता है कि वे लोग भी श्रमजीवी वर्ग में शामिल हो गये हैं। वे लोग गाँव चले गये हैं ।अपने जमीन के टुकड़े पर उसने एक चाय नाश्ते की दुकान खोल ली है। उसकी दुकान खूब चलती है वह ड्रिंक्स में कुछ नशीली चीजें मिलाता है। पास में मकान बनाने का कान्ट्रेक्ट मिल गया है। छोटा मुन्ना उसी मकान में एक मजदूर की हैसियत से काम करता है। गन्दी गालियाँ देता है, कस्बे के लड़कों से लड़ता झगड़ता है। कुन्तल कस्बे की लड़कियों के रंग ढंग सीखती है। उसकी कोमलता गायब हो गयी है। धनी होने का गर्व हो गया है। बड़ा बेटा प्रदीप ट्रक ड्राइवर हो गया है। शराब पीता है

तथा माँ बाप के साथ बहुत बदतमीजी करता है। खूब पैसा है पर घर का प्यार, सुख चैन गायब हो गया है। इसी बीच मधु उसे जगा देती है। वह अपने स्वपन से कॉप जाता है। मधु उसे समझाती है कि एक टाइप राइटर खरीद लें। शार्टहैंड सीख कर सेक्शन ऑफिसर बन जाय। प्रदीप को बारहवीं पास करते ही किसी टेकनिकल स्कूल में डाल देंगे। जहॉ स्टाइपेंड भी मिलेगा। कुन्तल को भी टाइप सिखा देंगे। मुन्ना थोड़ा बड़ा हो जाय तो मैं भी किसी स्कूल में सर्विस कर लूँगी। सुनील कहता है मेरा यह स्वपन भी न पूरा हो। मधु उसे समझाती है ठीक है यह स्वप्न भी नहीं पर जीवन में कुछ यथार्थ तो होगा। स्वप्न से नही यथार्थ से जीवन चलता है।

17–' आकांक्षा '

प्रस्तुत नाटक में लेखिका विमला रैना उन लोगों को नाटक की कथावस्तु के लिए चुना है जो अति महत्वाकांक्षी होते हैं। उनके लिए उनकी महत्वाकांक्षा ही सर्वोपरि है। उसके लिए वे अपने जीवन के सभी बहुमूल्य पलों की भेट कर देते हैं। अपने परिवार अपनी पत्नी बच्चे सबको दॉव पर लगा देते हैं। वीर एक धनाढ्य घर का पुरुष है। उसकी पत्नी ढेर सारा दहेज लेकर आती है या यूँ कहा जाय उसने मधु को इसलिए अपनी पत्नी बनाया है कि वह अपने मॉ पिता की इकलौती संतान है। उसके पिता के पास तमाम धन है। दो प्यारे–प्यारे बच्चे हैं। एक अतिशय प्यार करने वाले ताऊ है। नौकर चाकर बंगला गाड़ी सब है। जीवन उन तमाम खुशियों से सरोबार है जिनकी लोग कल्पना करते है। वीर को ज्यादा–ज्यादा पैसा कमाने की कामना है। वह पैसे के पीछे भागता है। उसकी पत्नी बीमार रहने लगती है। डाक्टर उसे चेकअप के लिए बाम्बे ले जाने को कहता है , पर अपने कारोबार के चक्कर में उसके लिए पत्नी के स्वास्थ्य की कोई अहमियत नहीं है। वह घर देर से आने लगता है। कभी–कभी नहीं आता । सेक्रेटरी सुनयना से घनिष्ठता बढ़ती जाती है। मधु इस बात को जानती है पर चुपचाप सहन करती है। मधु के ज्यादा बीमार होने पर बाबा उससे आग्रह करते हैं कि वह मधु को अच्छे डॉक्टर को दिखाए। पर वह यह जिम्मेदारी बाबा पर डाल देते हैं। बाबा को जब पता चलता है कि डॉक्टर को सन्देह है कि मधु को कैन्सर है वह बुरी तरह टूट जाते हैं। बाम्बे की फलाइट बुक करवाते हैं। डॉक्टर से बात करते हैं। वीर बाम्बे जाने के लिए मना कर देता है। उसे न्यूयार्क जाना है बिजनेस के सिलसिले में । उसने पुराने मुनीम को निकाल कर नया आदमी रख लिया है। अपने नये घर का कान्ट्रेक्ट अमेरिकन कांट्रेक्टर को दे दिया है। वह बाबा को अपनी भविष्य की योजनाओं के विषय में बताता है। वह तो करोड़ों का

व्यापार कर रहा है। उसके सपने बहुत बड़े हैं। बाबा मधु को ले कर बाम्बे जाते हैं। वीर दस दिन के लिए गया था, दो महीने बाद लौटता है। मधु को मरे बीस दिन हो जाने के बाद। उसके बच्चे ननिहाल में हैं। बाबा एक दूसरा घर ले लेते हैं तथा वीर के बच्चों को एक पिता का प्यार देने की कोशिश करते हैं। उनसे रोज मिलने जाते हैं। वीर तो भूल ही जाता है कि उसके दो छोटे छोटे बच्चे भी हैं। बाबा का भी अपमान करने में संकोच नहीं करता। अपनी सेक्रेटरी सुनयना को उसके पति से तलाक दिलवा कर शादी करता है। वह अपनी छोटी बच्ची को छोड़ कर आती है। अपने नये सपनों के महल में रहने जाता है। पर उसे तरह तरह की बीमारियॉ पकड़ लेती हैं। आराम बिल्कुल नहीं करता। सुनयना से बिल्कुल ही नहीं बनती है। सुनयना ने तो धन के लोभ में इससे शादी की थी। अब इसे जिन्दगी की सच्चाइयों का ज्ञान होता है। वीर को कहीं चैन नही मिलता। इतना मन से बनवाया हुआ घर छोड़ कर पुराने घर में रहने आ जाता है। अब उसका अपना कहने के लिए कोइ नहीं है। कोई भी अपना नही जो उसे सर के अलावा कुछ और कह कर बात कर सके। सब कुछ होते हुए भी वह कंगाल है। उसकी सारी आकांक्षाऐं पूरी हो चुकी पर फिर भी उसे चैन नही है। कोई दोस्त नही। उसकी आकांक्षा ने उसे कहीं का न रहने दिया।

10— ठहरी हुआ पानी — 1975—शांति मेहरोत्रा नटरंग अंक 25

प्रस्तुत नाटक एक प्रतीक नाटक है। ' ठहरा हुआ पानी ' गंदगी व बदबू का प्रतीक है,परम्परागत मर्यादा का और सड़ी गली परम्परा का प्रतीक है जिसमें गति नही है सामाजिक जागरुकता नही है। नाटक का प्रारम्भ परम्परागत मान्यताओं की स्वाकारोक्ति से होता है। रमा एवं सीता मंगला माता को चिट्ठी लिखती हुई दोहराती हैं कि जो इस कड़ी को तोडेगा उसका सर्वनाश निश्चित है। सम्पूर्ण परिवार इसी परम्पागत अंधविश्वासों के तहत सड़ रहा है। पिता के कठोर अनुशासन में संतान दब्बू व कुंठित बन गये हैं। अनुशासन के बोझ तले दबे किशोर व युवा बच्चे विद्रोह की चिंगारी से सुलगने लगे है। बडी लड़की सीता 35 वर्ष तक अविवाहित रह कर निरर्थक जीवन बिता रही है। छोटी रमा नित्य नये प्रेमी बदल कर भरपूर जीवन जीना चाहती है। अचानक सीता स्वतंत्र रहने का निर्णय लेती है। जिससे माता पिता हतप्रभ रह जाते हैं। रमा एक ऐसे प्रेमी की तलाश करती है जिसकी पत्नी को कैंसर है। वह इस आशा में है कि उसका प्रेमी पत्नी के मरने के बाद उससे विवाह कर लेगा। छोटा लड़का

जिसके पास अपना कोई भविष्य नही है वह पूरी तरह हताश है उसे कोई राह ही नही दिखती।" नाटक पति पत्नी के आपसी सम्बन्धों को व्यक्त करने में सक्षम है। '1–,

11– वर्धमान रुपायन 1975 कुंथा जैन

भगवान महावीर के 2500 वे निर्वाण महोत्सव पर जैन धर्म को आधार बनाकर कुंथा जैन ने इस नाटक की रचना की है। वर्धमान रुपायन में तीन नाटक संग्रहित हैं।

1–दिव्यध्वनि छंद

2–वीतराग

3–मान स्तम्भ

1–दिव्यध्वनि छंद–नृत्य नाटिका

पूरा कथानक स्वप्न पर आधारित है। स्वप्न को नृत्य और गायन के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। वैशाली नगरी तथा कुन्डपुर राज्य के वर्णन के साथ नाटिका प्रारम्भ होती है। माँ विशाला अभूतपूर्व स्वप्न देखती हैं। जननी की सेवा में अप्सराऐं तथा देवियाँ नियुक्त हैं। शुभ लक्षणों के साथ महावीर का जन्म होता है। देवी देवता इन्द्र इन्द्राणी नृत्य करते हैं। 1008 कलशों से भगवान को स्नान कराया जाता है। वर्धमान अपने दिव्य कियाकलापों के साथ बड़े होते हैं। वर्धमान धीरे–धीरे अपने को सांसारिक सुखों से विरक्त करते हैं। उन्हें ये सुख आत्मा के प्रसार में बाधक लगते हैं। महावीर साढ़े बारह वर्ष के लिए तपस्या में लीन हो जाते हैं। तरह–तरह की कठिनाइयाँ आती हैं पर वे विचलित नही होते। राजकुमारी चन्दना जो परिस्थिति वश दासी बन गयी है। उसके हाथ से आहार ग्रहण करते हैं। प्रश्नों के उत्तर देते हैं। उनके सामने जो भी आता है उसके अहं का विनाश स्वतः हो जाता है। उनके उपदेशों को सुन कर सभी प्रजाजन, राजा रानी,राजकुमार दीक्षित हो जाते हैं। अपने ज्ञान ज्योति से ब्रहमाण्ड को जगमगाते हुए भगवान मोक्षगामी हो जाते हैं। प्रस्तुत नाटिका को लेखिका ने दस दृश्यों में विभक्त किया है।

1– स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी नाटक – डॉ0 रामजन्म शर्मा पृ067

2– वीतराग– मंचरुपक

प्रस्तुत नाटक ऐतिहासिक नाटक है। इस नाटक में लेखिका ने कुण्डूपुर नरेश सिद्धार्थ की राजधानी उनके राज्य का चित्रण किया है। पूरे गॉव का दृश्य है। नर नारी के माध्यम से राज्य सभा का वर्णन है। राज्य सभा में मॉ त्रिशला राजा सिद्धार्थ से अपने स्वप्न फल दर्शन का विवरण देती हैं महाराज उसके स्वप्न को सभा के सामने प्रस्तुत करते हैं। महावीर के जन्म से निर्वाण तक को लेखिका ने इस नाटक में बहुत ही भव्य ढंग से प्रस्तुत किया हैं भगवान महावीर साढ़े बारह वर्ष की तपस्या के बाद अपने अन्दर आलोक पुन्ज का प्रकाश पाते हैं। वह प्रवचन धर्म उपदेश देते हैं। राजा रानी सभी भगवान महावीर के पास दीक्षित होने के लिए आते हैं। 30 वर्ष तक भगवान महावीर गांव से गांव जनपद से जनपद सभक्सरण सभा करते हैं। फिर निर्वाण को प्राप्त होते है।

3–मान स्ताम्भ–रेडियो रुपक–कुंथा जैन

मान स्तम्भ

मंदिरों के आगे खुले आकाश के नीचे निर्मित दूर से दिखाई देने वाला ऊँचा स्तम्भ। तीर्थकर भगवान की प्रवचन सभा के सामने मानस्तम्भ हुआ करता था, जिसे नमस्कार करके प्रत्येक मनुष्य के मन में श्रद्धा उत्पन्न होती थी और वह मान अभिमान से रहित होकर तीर्थकर का उपदेश सुनता था। प्रस्तुत नाटक में लेखिका ने माणिक गुणवन्ती व आलोका के चरित्रों के माध्यम से जैन धर्म की महत्ता को उजागर करने की कोशिश की है। माणिक व गुणवन्ती पति पत्नी हैं सुख पूर्वक रहते हैं। गुणवन्ती धार्मिक महिला है, धर्म कर्म में लीन रहती है। माणिक व्यवसायी है धर्म के प्रति बहुत आस्था नही है फिर भी झुकाव है रेड पड़ने की खबर सुन कर सबसे पहले भागते हुए महावीर जी तक जाता है। उनके घर आलोका आती है। आलोका गुणवन्ती की सहेली है। माणिक व आलोका की गहरी पहचान है। गुणवन्ती व माणिक की शादी हो जाती है तथा आलोका भी शादी करके चली जाती है। गुणों को संदेह था पर लम्बे अन्तराल ने उसे सन्तोष दिया। फिर यह आलोका विधवा होते सीधे उसके घर ही क्यों आयी। आलोका के पास लोगों के फोन आते हैं जिससे वह परेशान रहती है, क्योंकि अपने इन्हीं दोस्तों की वजह से परेशान हो कर वह गुणों के पास आयी है। आलोका पति के होने पर भी उनके प्रति समर्पित नहीं रही है। उसके बहुत सारे पुरुष मित्र रहे हैं जिससे उनका व्यवहार संतुलित नही रहा है। माणिक भी उससे ऐसे व्यवहार की आशा रखता है। आलोका अन्दर से बहुत परेशान है। ऐसे समय मुनि महाराज आते हैं उसके हाथ के काजू के दाने ग्रहण करते हैं

तथा उसकी सोयी आत्मा को जागृत करते हैं। कहते हैं पुण्य का उदय होगा। गुणों को दासी चन्दना की कहानी याद आती है जिसके हाथों से तीर्थकर ने कोदो के दाने ले कर आहार ग्रहण किया था। धीरे–धीरे आत्ममंथन करती आलोका महाराज के शरण में चली जाती है। लेखिका मानस्तम्भ के माध्यम से यह कहना चाहती हैं कि जो भी अपने अभिमान को त्याग कर तीर्थकर की शरण में आता है वह अवश्य तिरता है।

12– " दर्द आयेगा दबे पॉव " 1975 शीला भाटिया

प्रस्तुत नाटक संगीत नाटक है। शीला भाटिया का यह नाटक मशहूर शायर ' फैज अहमद फैज ' की शायरी व्यक्तित्व तथा जीवन पर आधारित है। लेखिका ने फैज की शायरी के कुछ सुन्दर नज्मों को चुनकर एक साथ पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है। पूरा नाटक फैज की शायरी एवं व्यक्तित्व को ले कर साथ –साथ चलता है। नज्मों को यथास्थान सप्रयास घटनाक्रम के साथ जोड़ा गया है। परिस्थितियॉ कुछ वास्तविक हैं ,कुछ काल्पनिक। ' फैज ' ने शायरी को एक नया मोड़ दिया है या शायरी में एक रुह फूॅक दी है। शायर की जिन्दगी के महत्वपूर्ण पक्षों को समेटा है। नाटक में रोमांस है, दर्द है, अकेलापन है, बेबसी है, एक दूसरे के लिए हमदर्दी है। दर्शकों को थोड़े समय में ' फैज ' की इतनी गजलें ,नज्में न सिर्फ सुनने को मिल सकती हैं। बल्कि देखने को भी मिल सकती है वह भी परिस्थितियों के प्रसंग में संगीत के साथ। शीला भाटिया ने ' फैज ' की शायरी की सभी विशेषताओं को बहुत संक्षेप में समेटने का खूबसूरत प्रयास किया है। शिल्प के धरातल पर प्रयोगशील नाटक। कुछ विशेष व्यक्तियों को ले कर चरित्र पर आधारित। कुछ रंगमंच को ले कर नये प्रयोग किये गये। प्रस्तुत नाटक भी इन्ही नाटकों में से एक है।

13– ओम कांति–कांति 1978 डॉ0 कुसुम कुमार

प्रस्तुत नाटक ' ओम कांति– कांति ' आज की शिक्षा व्यवस्था में व्याप्त भ्रष्टाचार का खुला रुप है। शिक्षक वर्ग किस तरह से विद्यार्थियों के भविष्य के साथ खिलवाड़ कर रहा है। पढ़ने वाले विद्याथियों का अमूल्य समय नष्ट कर रहा है। लेखिका ने इसी बिन्दु को ले कर नाटक के कथानक का ताना बाना बुना है। टीचर प्रिंसिपल से अच्छे सम्बन्ध का लाभ उठाते हुए अपनी कमियों को छिपाते हुए विद्यार्थियों का फायदा उठाती हैं। जो अपनी जिम्मेदारियों के प्रति जाग्रत हैं, उनका मजाक बनाती हैं। मिसिज दानी का चरित्र उन सभी शिक्षकों का प्रतिनिधित्व करता है । जो अपने कर्तव्य के प्रति सजग नही हैं। जो कॉलेज केवल अपना समय बिताने आते हैं। जिनका कर्तव्य अध्यापन नही मजबूरी है। क्लासरुम की क्रांतियॉ भी

इनका कुछ बिगाड़ नही पाती हैं। इन क्रांतियों में भी नुकसान छात्रों का ही है। 'समकालीन हिन्दी नाटक ' नामक अपने लेख में डॉ0 राम प्रसाद ने इस नाटक के विषय में अपनी राय देते हुए कहा है— " डॉ0 कुसुम कुमार के नाटक 'ओम क्रांति— क्रांति ' में आधुनिक शिक्षा पद्धति की भ्रांति और दिशाहीनता पर चोट पहुँचाई गयी है। "1—,

प्रस्तुत नाटक "नयी पीढ़ी के पाश्चात्य अंधानुकरण की प्रवृत्ति पर चोट करते हुए आधुनिक प्रशासन की नग्नता का साक्षात्कार कराता है। समानान्तर रुप से चलने वाले इस नाटक की कथा, आज के बुद्धिजीवी वर्ग या शिक्षक समुदाय की नैतिकता और छात्राओं की चारित्रिक अधोगति में निहित स्वार्थों के हाथों कुंठित प्रशासन—व्यवस्थाओं की अवस्थाओं का बोध कराता है। "

14— एक और अजनबी 1948 मृदुला गर्ग

मृदुला गर्ग का नाटक ' एक और अजनबी ' एब्सर्ड नाटक है। समाज में हो रहे परिर्वतन , सामाजिक परिस्थितियों, मानसिक टूटन का उद्घाटन है। जीवन के विविध पक्षों और समस्याओं की पृष्ठभूमि में प्रेम और यौन सम्बन्धित परिर्वतन तथा उसके विभिन्न स्वरुप हिन्दी नाटकों में यथातथ्य रुप में व्यंजित हुए हैं। नारी सामान्यतः पुरुष के प्रति पूर्णरुप से समर्पिता है। विश्वास की गहन अन्तःचेतना में लिप्त वह प्रेम में अपने स्व को विसर्जित करके पुरुष से वैसा ही संसयहीन तसल्ली और भरोसे से पूर्ण प्यार पाना चाहती है। प्रेम को लेकर नारी मन के अर्न्तद्वन्द, पति—पत्नी के सम्बन्धों की मर्यादा का अतिक्रमण ही इस नाटक का कथ्य है। डॉ0 रामजन्म शर्मा का इस नाटक के विषय में मत है कि— " मृदुला गर्ग का नाटक ' एक और अजनबी' में शानी और उसके पति जगमोहन के दाम्पत्य जीवन की कहानी है। शानी और उसके पति जगमोहन का दाम्पत्य जीवन सामाजिक व्यवहार की बलि चढ़ जाता है। प्यार और सेक्स जीवन की स्वाभाविकता हो कर भी नितांत नाटकियता और आडम्बर में अपनी आदिम महक खो चुके हैं। नाटक रंगमंचीय एवं सशक्त है।"2—,

---

1— हिन्दी नाटक के सौ वर्ष — बालेन्दु शेखर तिवारी एवम् रावत पृष्ठ 36

2— स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटक — डॉ0 रामजन्म शर्मा पृष्ठ 319

15– ' काठ की गाड़ी 1980 त्रिपुरारी शर्मा

त्रिपुरारी शर्मा का एक ऐसा नाटक है जो निश्चित उद्देश्य को लेकर लिखा गया है। काठ की गाड़ी का नाट्य आलेख कुष्ठ रोगियों की समस्याओं को केन्द्र में रखकर लिखा गया है। कुष्ठ रोग सम्बन्धी इस वैज्ञानिक समझ को जन –सामान्य तक पहुँचाना जरुरी है कि यह छूत की बीमारी नही है। दुर्भाग्यवश जिस किसी घर में कुष्ठ रोग का प्रकोप किसी किसी एक व्यक्ति को हो जाता है। वह कैसे अस्पृश्य मान कर घर से निकाल दिया जाता है। इसका मार्मिक चित्रण इस नाटक में हुआ है। इस रोग के पता चलने के पूर्व वह चाहे कितना ही प्रिय क्यों न हो,वे सभी सूत्र टूटने में एक मिनट भी नहीं लगते। और वह सड़क पर भिखमंगे की तरह समाज के दान और दया की रोटी खाता है। समाज में बराबर कर दर्जा छिन जाने के बाद कैसे वह अपना एक समाज बनाता है। एक ऐसे समाज की झांकी भी इस नाटक में मिलती है। दया की भीख से युक्त होकर आत्म निर्भर हो कर जीने की कामना ही इस नाटक का मूल द्वन्द है। सभी रोगी मानवीय प्रवृतियों, आवेगों से संचालित हैं। कुष्ठ रोग से मुक्त होकर भी कुछ पात्रों का इनकी बस्ती में रहते हुए इनको मानवीय धरातल पर ला कर आत्मसम्मान के साथ जीने के लिए प्रेरित करना ही इस रचना का चरम लक्ष्य है। त्रिपुरारी शर्मा के इस नाटक के विषय में श्री वीरेन्द्र मेंहदीरत्ता का मत इस प्रकार है–" त्रिपुरारी शर्मा इस दृष्टि से बधाई के पात्र हैं कि उन्होंने इस आलेख को जीवन –वास्तव के बहुत निकट बनाए रखा है और उन्हें उबारने के लिए जागरुकता की एक लहर को भी सभी पात्रों में संचरित होने दिया है बिना किसी भावुक आर्दशवादी नारे के । जागरुकता कोई नारा नहीं बनी है। कुष्ठ रोगियों के सम्बन्ध में एक नई समझ देता हुआ नाट्य आलेख समाप्त होता है। इन रोगियों के प्रति न अतिरिक्त संवेदना जगाई है, और न ही कोई नारा दिया है। इस कलात्मक संयम के कारण यह नाट्य आलेख एक सफल रचना मानी जायेगी।' 1–,

---

1– नटरंग – 56अंक

सम्पादक – नेमिचन्द जैन

पृ0 28

SA MEHTA LIBRARY
University of Baroda

(16) रावण लीला (1981) - डॉ. कुसुम कुमार

डॉ. कुसुम कुमार का प्रस्तुत नाटक 'रावण लीला' भी अन्य नाटकों की तरह पौराणिक नाटक है। लेखिका की लेखनी से कोई भी पहलू वंचित रह जाए यह सम्भव नहीं है। डॉ. कुसुम कुमार की लेखनी की धार बहुत पैनी है।

रामलीला के विषय में बहुत लिखा गया, सुना गया तथा देखा गया पर रावण जैसे पात्र को लेकर उसे मुख्य पात्र बनाकर कुछ लिखने की कोशिश नहीं की गई। रावण जैसे पात्र को लेकर हास्य एवं व्यंग्य का पुट देकर कथानक को बहुत रुचिकर मोड़ दिया है। कहानी तो पुरानी है पर उसे कविता की शैली या तुकबंदी की शैली में पेश किया गया है। रावण के सभासदों का वर्णन बहुत ही जीवन्त है। नौटंकी शैली का प्रयोग नयी विधा के रूप में प्रस्तुत किया है। सभी घटनाएं सामने दिखती सी है। महिला पात्रों का काम पुरुष पात्र ही करते हैं। नाटक की स्टेज के उपर तथा पीछे की सारी गतिविधियों को नाटक का कथ्य बनाया है। रावण नाटक में अभिनय करने के लिए पैसा बढाने की जिद करता है। पात्रों की नोंक झोंक चलती है। दर्शकों की प्रतिक्रियाएं सुनायी पड़ती हैं। आज शहरीकरण के कारण तथा आगे बढ़ने की होड़ में कलाकार दिल्ली चले जाते हैं। हर साल नये कलाकार को सिखाना पड़ता है। असंतुष्ट लोगों ने नयी राम लीला समिति बना ली है। जो जातिवाद के आधार पर बनी है। क्योंकि हरिजन टोला के लोगों को यहाँ पर दर्शकों के साथ बैठने की अनुमति नहीं हैं। पर हरिजन टोला के पात्र अभिनय कर सकते हैं।

गांव का व्यापारी वर्ग चन्दा देता है उसकी एक ही ललक है कि वह कैसे भी एक बार स्टेज पर दर्शकों के सामने माइक से कुछ बोले। पात्र अपने डायलाग भूल जाते है। दूसरा पात्र अपने डायलाग बोलकर उसे याद दिलाता है। पीछे से प्रॉम्पटिंग करनी पड़ती हैं। हर पात्र अपनी अच्छाइयों तथा कमियों के साथ दर्शकों के सामने उपस्थित है। कुछ भी दुराव व छिपाव नहीं है।

नाटक इतना रुचिकर है कि एक बार पढ़ना शुरु करें तो पूरा करने के बाद ही विराम लगे। दर्शकों और पाठकों के मन में अपनी छाप छोड़ने में सफल है।

दिल्ली ऊँचा सुनती है (1981) - डॉ. कुसुम कुमार

प्रस्तुत नाटक ''दिल्ली ऊँचा सुनती है'' हमारे देश नौकरशाही, कार्यालयों के बिगड़ते माहौल, काम को टालने के बहाने तथा इस कमरे से उस कमरे में चक्कर काटती फाइलों की दशा को लेकर लिखा गया कथानक है जो अवकाश प्राप्त जिन्दगी की वह भयानक सच्चाई है जिसकी त्रासदी से भागा नहीं जा सकता है। हमारा निकम्मा राजतंत्र कुछ भी सहायता करने में असमर्थ है।

एक पुरुष जो अपनी पूरी जिन्दगी परिवार के साथ दिल्ली में व्यतीत करता है, रिटायरमेंट के बाद गाँव आ जाता है क्योंकि शहर का खर्च उठाने में वे लोग असमर्थ हैं। परिवार में तीन सदस्य हैं पति पत्नी एवं बेटी। बेटी शादीशुदा है पर दो साल पहले तलाक हो चुका है। वह कुछ बीमार रहती है मकान मालिक मगन इन लोगों के साथ प्यार से घर के सदस्य जैसा रहता है। माधोसिंह को पेंसन नहीं मिलती जिसके लिए वे बार-बार ऑफिस पत्र लिखते हैं। कोई उत्तर न आने पर वे

खुद दिल्ली जाते हैं। वहाँ ऑफिस के रिकार्ड में माधोसिंह की मृत्यु हो चुकी है। उन्हें क्लर्क समझाता है कि आपको प्रमाण देना होगा कि आप जिन्दा है। जिन्दा होने का प्रमाण आदमी खुद सामने खड़ा है, इस बात से बड़ा क्या हो सकता है। कुछ क्लर्क के कहने पर वे अपने दिल्ली के फेमिली डॉक्टर के पास जाते है, पर वे किसी भी तरह सेमेडिकल सर्टिफिकेट बनाने से मना कर देते हैं तथा किसी सरकारी डॉक्टर के पास जाने को कहते हैं। वहाँ भी बहुत धक्के खाने पड़ते हैं। कई-कई दिन लाइन में खड़े होकर वापस आ जाते हैं। कई दिनों के बाद एक सर्टिफिकेट बन कर आता है जिसमें उनके नाम की स्पेलिंग गलत है। माधोसिंह की जगह माधवसिंह है। मगन उन्हें दिलासा देते हैं कि यह भी ठीक हो जायेगा। सब ठीक करवाने के बाद सारे वेपर्स को ऑफिस में भेजते हैं पर उनलोगों का कहना है कि समय लगेगा। मगन की पहचान गृहमंत्री से है। गृहमंत्री से मिलने पर गृहमंत्री सलाह देते है कि प्राकृतिक विपदा समझ कर झेल लो। क्योंकि वे कुछ कर नहीं सकते। किसी के पास सहायता के लिए भेज देते हैं। इसी बीच सारी मुसीबतों से तंग आकर नीति कुछ खा लेती है। वे लोग बुरी तरह टूट जाते हैं। फिर एक पत्र आता है कि अभी कुछ इन्क्वायरी होनी है आपको दिल्ली आने की आवश्यकता नहीं है। इसी बीच माधोसिंह भी भगवान को प्यारे हो जाते हैं। माधोसिंह के देहावसान के चार महीने के बाद दिल्ली से उनके नाम 'पे एण्ड एकाउण्ट्स' ऑफिस से रजिस्ट्री - आती है जिस पर साइन करने के लिए वे खुद जीवित नहीं हैं।

संस्कार को नमस्कार (1982) - डॉ. कुसुम कुमार

''संस्कार को नमस्कार'' डॉ. कुसुम कुमार द्वारा लिखित एक ऐसा नाटक है, जिसका बहिरंग कॉमेडी होते हुए भी अंतरंग अत्यधिक कारुणिक है।

अन्य नाटकों 'सुनो शेफाली', 'दिल्ली ऊँचा सुनती है' की तरह इस नाटक में भी लेखिका ने शोषण को ही अपना विषय बनाया है। कुसुम कुमार अपनी प्रत्येक बात को बड़ी कलात्मकता से व्यंग्य का पुट देते हुए व्यक्त करती हैं। इस नाटक में शोषण के मुख पर एक चपत के रूप में पेश किया गया है।

संस्कार एक राजनैतिक नेता है। वह एक महिलाश्रम में निरीक्षण के लिए आता है। एक रात रुकता है। महिलाश्रम की देख-रेख करने वाली कमोबेन उसके लिए बिछ सी जाती हैं। आश्रम का माहौल हर महिलाश्रम जैसा ही है, कुछ नया नही है। नारी का शोषण चाहे वह किसी भी उम्र की हो, माँ, बहन, बेटी किसी रूप में हो होना ही है। संस्कार की पूजा अर्चना होतीहै, फूलों की माला पहनाई जाती हैं। आश्रम की हर लड़की को बेटी कहते हैं पर कृत्य तो पशु सदृश ही है। हर बार जब आते है अपने लिए सबसे कम उम्र की लड़की चुनते हैं। कमोबेन जो उनके लिए 'ये सब' उपस्थित करने में सहायक हैं, उनके साथ भी उनके सम्बन्ध रह चुके हैं। वह आदमी इस स्तर तक गिर जाता है कि कमोबेन से उनकी ही बेटी के विषय में बात करता है। कमोबेन जवाब नहीं दे पाती, क्योंकि वे आश्रम पर आश्रित हैं। बेटियों की पढाई भी आश्रम के पैसे से ही सम्भव है। संस्कार के माध्यम से लेखिका ने इन राजनेताओं के चरित्र पर गहरा प्रहार किया है। संस्कारचन्द बस एक

काम के पुतले हैं। वे अपनी कामवासना की तृप्ति के लिए पशु सदुश ही है। ये नेता ऊपर से चमकती हुई खादी पहने पुए अन्दर से कितने काले चरित्र वाले होते हैं यही नाटक का मुख्य कथ्य है।

नाटक का नामकरण भी लेखिका ने हास्य व्यंग्य का पुट देते हुए 'संस्कार को नमस्कार' रखा है।

असुरक्षित (1982) - डॉ. गिरीश रस्तोगी

प्रस्तुत नाटक 'असुरक्षित' वर्तमान समाज का खुला चिट्ठा है। आज के समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार, अराजकता शोषण, कॉलेज का बिगडा माहौल पुरस्कार पाने के लिए तथा राशि बढ़ाने के लिए दूसरे का नाम ही निकलवा देना, इस प्रकार के नैतिक पतन को लेखिका ने उजागर किया है। पुस्तकों को पाठ्यक्रमों में लगाने के लिए प्रकाशक से रिश्वत लेते हैं। युनिवर्सिटी में भी चापलूसी दंगे हड़ताल का माहौल है। लड़के तोड़-फोड़ करतेहै। चीजों के आसमान छूते दाम, हर चीज की कमी, चारों तरफ अराजकता का बोलबाला है। ऐसे माहौल में एक पल भी चैन से गुजार लें समझें बहुत हो गया। ऐसे माहौल में बच्चों का भविष्य कितना सुरक्षित है, जहाँ कुछ ही सामान्य नहीं है।

पूरा नाटक जैसे हमारे सामने स्टेज पर खेला जा रहा है। ऐसे माहौल में न तो हमारा वर्तमान सुरक्षित है न भविष्य। कालेज का विद्यार्थी आज उसका भी भविष्य सुरक्षित नहीं है। उसकी कोई दिशा नहीं है कि पढ़ाई पूरी करके वह भविष्य में क्या करेगा।

जहाँ वर्तमान सुरक्षित नहीं है वहाँ भविष्य के सपनों का क्या मूल्य है। सब कुछ असुरक्षित है।

जो राम रचि राखा (1983) - डॉ. मृणाल पान्डेय

डॉ. मृणाल पान्डेय का प्रस्तुत नाटक ''जो राम रचि राखा'' विजयदान की राजस्थानी लोक-कथा से अनुप्रेरित है। इसका कथानक इस बात का स्पष्ट संकेत करता है कि, समाज परिवर्तन के लिए क्रांतिकारी व्यक्ति अभिजाव्य वर्ग से नहीं, जनता के बीच से उभर कर आयेगा, तभी उसकी क्रांति सफल होगी।

एक धनिक सेठ का पुत्र श्यामलाल आम जनता की सेवा करने चलता तो है, किन्तु रुमानी और अव्यवहारिक विचारों के कारण बुरी तरह असफल हो जाता है। उसके प्रयत्न का लाभ व्यवस्था को मिलता है।[१]

महाभोज (1993) - मनू भंडारी

वर्तमान युग ''महिला उत्थान का युग माना जाता है।अब सदियों के संस्कारों और सामाजिक बेड़ियाँ को काटकर महिलाएँ हर क्षेत्र में न केवल प्रवेश कर गयी हैं बल्कि साहित्य, समाज, राजनीति आदि के उच्च पदों को भी सुशोभित कर रही है। उसमें हिन्दी क्षेत्र में श्रीमती मनू भंडारी का नाम विशेष उल्लेखनीय है। उन्होने भारतीय नारी, समाज, देश, आदि की समस्याओं को यथार्थ रूप में

---

१. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटक (पृ. 319) - डॉ. राम जन्म शर्मा

चित्रित कर अनेक ज्वलन्त मानवीय प्रश्नों को उठाया है और सही दिशा में सोचने की बेचैनी पैदा की है।

'महाभोज' युगीन परिवेश का दस्तावेज है। युग और साहित्यकार एक दूसरे को प्रभावित करते हैं। मन्नू जी जिस युग परिवेश में रही है, उन अनुभवों प्रभावों को उन्होने अपनी कृतियों में अभिव्यक्त किया है। सच्चा कलाकार अपने युग का दर्पण होता है। सच्ची कलाकार होने के नाते मन्नू भंडारी अपने युग से अछूती कब रह सकती हैं ?''[१] ''साहित्यकार अपने समय के सभी वातावरणों से प्रभावित रहता है।''[२]

मुंशी प्रेमचन्द ने साहित्य के उद्देश्य में लिखा है - साहित्यकार बहुधा अपने देश काल से प्रभावित होता है, जब कोई लहर देश में दौड़तीहै, साहित्यकार के लिए उससे अविचलित रह जाना असम्भव हो जाता है और उसकी विशाल आत्मा अपने देश बन्धुओं के कष्टों से विकल हो उठती है और वह तीव्र विकरालता में रो उठता है, पर उसके रुदन में व्यापकता होती है।''[३]

मन्नू भंडारी को बेलहर्ष का हत्याकांड देखकर ''महाभोज'' की प्रेरणा मिली। महाभोज श्रीमती मन्नू भंडारी का उपन्यास है जिसका उन्होने स्वयं नाट्यरूपान्तरण किया है। महाभोज में आज के युग की स्थिति का सच्चा लेखा-जोखाहै। वर्तमान राजनीतिज्ञ जोर जबरदस्ती का माहौल। ईमानदार आदमी को परेशान करना जो लोग नेताओं की तरफ हैं उसकी तरक्की शाबासी। जनता पिसती है ये लोग मजे करते हैं। नैतिक पतन है नारेबाजी आज की चुनाव प्रणाली तथा राजनेताओं के चरित्र पर प्रहार है। सच्चा आदमी जो मुँह खोलता विसेसर है उसकी हत्या की जाती है। आरोप उसके ही अभिन्न मित्र बिन्दा पर लगाया जाता है। सक्सेना जैसा पुलिस आफिसर फिर भी दूध का दूध, पानी का पानी करता है पर उसकी रिपोर्ट को गलत साबित कर उसे स्थानान्तरण मिलता है। सारे आरोप बिन्दा पर डाल दिए जाते हैं क्योंकि वह बाहर रहेगा तो वोट मिलने में परेशानी होगी। रक्षक ही भक्षक बन जाती है। सभी का आपस में समझौता है पिसता है निर्दोष गांव का आदमी। विशेसर की मृत्यु राजनैतिक पार्टियों के लिए भोज्य बन गयी। आज की वोट की राजनीति में जो राजनीति केवल गुंडागर्दी के सहारे चल रही है जनता महाभोज है। सब उसे ही खा रहे हैं। नेता लोग गीद्ध जैसे हैं। जनता ही भोज्य है।

तुम लौट आओ (1984) - मृदुला गर्ग

मृदुला गर्ग का यह नाटक ''तुम लौट आओ'' अत्यन्त ही सशक्त सामाजिक नाटक है। इसकी कथा पाठक को पूरी तरह से बाँध कर रखती है। मीता मुख्य नारी पात्र है जो भारतीय गृहिणी का प्रतिनिधित्व करती है। उसके लिए उनका पति व बच्चा ही सब कुछ है। उसकी खुशियाँ असीमित है। पति के अमेरिका की चकाचौंध भरी जिन्दगी के सपनों से अपने को जोड़ नहीं पाती। किन्तु

---

१. महाभोज सृजन और समीक्षा (पृ. 154) - डॉ. जगन्नाथ चौधरी (अतुल प्रकाशन)

२. हिन्दी उपन्यास - शिल्प और प्रयोग (पृ. 158) - डॉ. त्रिभुवन सिंह

३. आधुनिक युग की हिन्दी लेखिकाएँ (पृ. 24, 25) - श्रीमती उमेश माथुर

वह अपने अत्यधिक महत्वाकांक्षी पति महेन्द्र को अमेरिका जाने के लिए मना नहीं करती । महेन्द्र किसी भी कीमत पर अमेरिका जाना चाहता है । इसके लिए वह अपने बच्चे की बलि देने को भी तैयार हैं । उसके पास दो रास्ते है या स्कालरशिप मिलने का इंतजार करे या उसका भाई उसे स्पान्सर करे । विनोद (महेन्द्र का भाई) स्वयं को अमेरिकन समझता है जब कि वह भारत में पला बढ़ा इन्सान है । अपने को बहुत ऊँचा तथा बड़ा समझता है । अमेरिका से वापस आने पर उसमें ऐसी-कौन सी विशेषताएँ जुड़ गयी है जो सभी का व्यक्तित्व उसके सामने बौना हो जाता है क्योंकि उसे अमेरिकन सीटीजनशिप मिलने वाली है । वह अपने घर अपने स्वजनों के बीच होकर भीअपना होकर नहीं रह पाता । घर में उसे कठिनाइयाँ होती हैं । वह होटल में रहने चला जाता है । वह अपने भाई को कुछ पैसा बतौर लोन देना चाहता है ।

महेन्द्र के पिता और बूआ पुराने जीवन मूल्यों के प्रतीक है । सब कुछ देखते हैं पर बोलते नहीं । किसी भी निर्णय में राय नहीं देते । सबकुछ चुपचाप स्वीकार कर लेते हैं । पर विनोद के दुर्व्यवहार करने पर पिता विरोध करते हैं । एक तरफ मीता के माँ पिता है जो बेहद लिजलिजी जिन्दगी जी रहे हैं । माँ पिता की बेकारी से परेशान है । उसे अपनी बेटी की जिन्दगी से रश्क है । उसकी माँ अपनी बेटी को पति की बात मान लेने को कहती है । पर मीता दृढ़ है । सबकी इच्छाओँ की अवहेलना करती हुई कहती है कि यह उसका निजी मामला है उसका बच्चा उसका अपना है । पति की इच्छा अमेरिका जाने की है तो वह जाये,अगर बच्चा बाधक है, तो मै नहीं जाऊँगी । पति के पास जाने के लिए पैसे कम है, तो दूसरी पार्ट टाइम नौकरी करती है । बुआ, ससुरजी एवं उसकी सहेली उसके निर्णय का स्वागत करते हैं । मीता के भाई राकेश की मृत्यु पर बूआ महेन्द्र को दोषी ठहराती हैं तो भी मीता पति के साथ है क्योंकि पति सही है । उसकी माँ कहती है कि महेन्द्र के जाने के बाद वह मायके में रहे तो मीता का कहना है कि बूआ और पिताजी हैं । वह उन्हे नहीं छोड़ सकती ।

महेन्द्र घर की सारी खुशियाँ में शामिल नहीं होता उसका अपना बेटा पैदा होता है, पर वह खुश नहीं है । अकेले अपनी तैयारी करता है । एअरपोर्ट जाकर वह वापस आ जाता है । महेन्द्र की सारी खुशियाँ सारे सपने सारी कल्पनायें अमेरिका को लेकर है फिर भी वह वापस आ जाता है, जाता ही नहीं है । मीता पूछती है कि तुम गये नहीं तो महेन्द्र कहता है कि तुमने एक बार भी नहीं रोका ।

आदमी जो मछुआरा नहीं था (1985) - डॉ. मृणाल पान्डेय

''आदमी जो महुआरा नहीं था'' एक प्रतीक नाटक है । प्रस्तुत नाटक नितान्त घरेलू माहौल से प्रारम्भ होकर बाहरी दुनियां के विशाल समुद्र में जा मिलता है । लेखिका का कहना है कि बाहरी दुनियाँ में जो कुछ भी मिलता है । लेखिका का कहना है कि बाहरी दुनियाँ में जो कुछ भी है, या हो रहा है वह वही है जो कभी न कभी भीतरी दुनियाँ से बह-बह कर कभी न कभी जाता रहा है। इसलिए हम घर के बाहर और भीतर की स्थिति को अलग नहीं कर सकते ।

एक सीधा साधा आदमी जो नौकरी पेशा है घर है परिवार है, घर की जिम्मेदारियाँ है। दादा माँ पिता, पत्नी व दो बच्चे हैं। आम भारतीय परिवार जैसा परिवार हैं। वैसे ही पुराने लोग जो गंगाजल से स्नान करते हैं। ऊँची जाति नीची जाति का भेद-भाव रखते हैं। गंगा जल अगर नीची जाति का आदमी लाए तो गंगाजल भी अपवित्र हो जाता है। माँ हर पल अपने बेटे के लिए चिन्तित है। घर के आधुनिक चलन उन्हे पसन्द नहीं। पत्नी हर पल अपने पति को आगे बढ़ते देखने की ललक लिए। ऐसे ही अनजाने में वह किसी की सहायता करता है। पर सभी उसे उस सहायता का मूल्य मांगने को उकसाते हैं। वह तो समन्दर की रानी है उससे कुछ माँगो। वह माँगने जाता है उसे वरदान मिलता है। सभी खुश हैं। कुछ वर्षो बाद लोग कहते हैं तब अपने अपने लिए माँगा अब लोगों के लिए माँगिये। लोगों के प्रति भी कर्तव्य है आपके। वह फिर माँगता है। हर इच्छा पूरी होती है। पर हर बार वह फँसता जाता है। तीसरी बार वह शाही सलाहकार बन जाता है। वह एक ईमानदार आदमी है। उसके अपनों के लिए उसके पास समय नहीं है। क्योंकि उसके पास देश-विदेश की समस्याएँ हैं। एक-एक करके तीनों बुजुर्गों का देहावसान हो जाता है पर वह समय नहीं निकाल पाता . बच्चे पिता के बिना पलते हैं। पत्नी असंतुष्ट है। बेटा बाहर पढ़ने चला जाता है तो वापस ही नहीं आता है। और एक्सीडेंट में मर जाता है। इस घटना से पत्नी पागल सी हो जाती है। बेटी हर तरफ से असंतुष्ट है। चारों तरफ असंतुष्टों की भीड़ है। प्रेस वाले, अपने लोग सभी असंतुष्ट लोग की भीड़ है। उनके ऊपर जाँच समिति बैठाई जाती है, स्पष्टीकरण की माँग की जाती है। उसने इस देश को कला दी, संवेदना दी कला-दीर्घायें खुलवाई, स्कूल, अस्पताल बनवाए। परिवार की जिम्मेदारियों को भूलकर सब किया पर आज उसी पर जाँच समिति बैठाई जा रही है। वह आदमी मछुआरा नहीं था, इसलिए मछली को पकड़ न सका, खुद फँस गया। अगर वह मछुआरा होता तो सारे तूफान से सीधा निकल न जाता।

पवन चतुर्वेदी की डायरी (1986) - डॉ. कुसुम कुमार

प्रस्तुत नाटक डॉ. कुसुम कुमार का बहुप्रशंसित नाटक है। यह एक मनोवैज्ञानिक नाटक है। नाटक का नायक पवन चतुर्वेदी जिन्दगी की तमाम उलझनों, परेशानियों से त्रस्त है। जिन्दगी में कुछ न कर पाने की कुंठा से कुंठित है। अपने अस्तित्व को स्थापित करना चाहता है। उसके पिता शहर के जाने माने डॉक्टर है। जिनकी समाज में इज्जत है, रुतबा है। हर पिता की तरह वह भी अपने बेटे के विषय में सोचते हैं कि वह भी समाज में अपने लिए जगह बनाए। कुछ ऐसा करे कि लोग उसे जाने। पढ़ाई बीच में ही छोड़कर फिल्म में हीरो बनने से लेकर चार पाँच नौकरियाँ छोड़ता हुआ जिन्दगी के बयालीस वर्ष बिताकर वह इस समय एक छोटी लायब्रेरी का अवैतनिक रूप से संचालन कर रहा है।

एक शहर में रहकरभी पिता के पास गये चार साल हो गये हैं। बूढ़े पिता खुद ही चलकर मिलने आते हैं। एक बहन है जिससे भी वह बहुत दिनों से नहीं मिला है। माँ से उसे काफी लगाव था।

माँ भी उसे सहयोग देती थी जो अब नहीं है।

पत्नी जिससे उसने प्रेम विवाह किया था। दो बच्चों के होने के बाद, दस साल साथ रहकर वे दोनों अलग हो जाते हैं। डायवोर्स चाहते हैं। पत्नी दुनियां की सभी खराब बातें अपने पति के लिए सोचती है फिर भी पैसे उसे पवन से ही चाहिए। पवन को भी उससे छुटकारा चाहिए।

एक ऐसा व्यक्तित्व जिसके तरफ लड़कियाँ सहज ही आकर्षित होती हैं, पत्नी के चुनाव में भी धोखा खा जाता है।

लायब्रेरी में काम करते हुए एक आदमी उसे मिलता है मेहता, जो शेयर का काम करता है। पवन उसकी बात में आ जाता है। अपनी सारी जमाँ पूंजी उसे अपनी जिन्दगी को सही ट्रेक पर लगाने के लिए दे देता है। उसके पिता समझाते हैं कि मेहता तुम्हें सवारी बनाएगा पर, वह मेहता से धोखा खाता है।

अन्त में पवन यह स्वीकार करता है कि वह किसी का चश्मा न पहन सका किसी का जूता न पहन सका। उसने अपने रास्ते खुद ढूंढे अपने रास्ते पर चला। इसलिए सारी कमियॉं उसकी अपनी है।

नगरेषु काञ्ची (1988) - डॉ. सरोज बिसारिया

''पुष्पेषु जाती पुरुषेषु विष्णुः
नारीषु रम्भा, नगरेषु कांची।''

- भारवि

संस्कृत के कवि 'भारवि' ने अपने इस श्लोक के माध्यम से कांची की महिमा का वर्णन स्पष्ट शब्दों में किया है। कांची की महिमा मंडित पृष्ठभूमि से प्रभावित होकर लेखिका ने कांची के गौरव को जानने का प्रयास किया। कांची के गौरव महाराज महेन्द्र और मामल्य ही नहीं है, कांची के गौरव वहाँ के शिल्पियों के श्रेष्ठ अयनर संत नावुक्नकर शर के अध्यात्मपरक साहित्य और शिवकामी भी हैं जिसे अपनी मानवीय संवेदनाओं को छोड़कर देवी की पंक्ति में आना पड़ा। उन लोगों ने भी कांची के गौरव को और बढ़ाया है।

नाटक का कथानक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को लेकर बुना गया है। महाराज महेन्द्र कांची का विकास करना चाहते है। उसके लिए सभी प्रकार की सुविधाएँ भी देते हैं। शिल्पियों के लिए कोषागार खुले हैं। मन्दिरों का निर्माण जितना हो सकता है, करवा रहे हैं। नृत्य गीत को प्रश्रय दिया है। प्रमुख शिल्पी अयनर की पुत्री शिवकामी नृत्य प्रवीण है। नृत्य करते समय वह शिव की अर्धांगिनी शिवानी लगाती है। युवराज मामल्ल शिवानी से प्रेम करते हैं जो महाराज भी जानते हैं। राजमहल में यथासमय उत्सव होते रहते हैं। नागनन्दी नाम का एक गुप्तचर एक वीर के साथ आयनर के शिल्पागार में शरण लेता है। आयनर एवं शिवकामी उसे नहीं पहचानते हैं। उस वीर युवक ने एक दिन पहले शिल्पी अयानर एवं शिवकामी की जान बचायी थी। इसलिए आयनर सहायता करना चाहते हैं। नागनन्दी

का कहना है कि वह उस युवक पंरजोति के माध्यम से अजंता के रंगों का रहस्य शिल्पी अयानर के लिए मँगवा देगा। शिल्पी अयानर अजंता के रंगों के रहस्य को जानकर कांची में निर्मित मंदिरों की मूर्तियों के लिए प्रयुक्त करना चाहते हैं। ऐसा पत्र लिखकर नागनन्दी परंजौति को पेटिका में पत्र रखकर देता है। महाराज महेन्द्र को शंका होती है। वह वेश बदलकर परंजोति से मित्रता करके पत्र बदल देते हैं। बाद में ज्ञात होता है कि उस पत्र में वातापी के राजा पुलकेशी का गुप्त मार्ग की सूचना थी परंजोति को महाराज अपना बेटा मानते हैं, तथा दलपति बनाते हैं। भीषण बाढ़ से कुमार मामल्ल शिवकामी और आयनर की रक्षा करते हैं। महाराज आयनर को सिंहमुद्रा देते हैं, जिसे दिखाकर वे अपना सभी काम बेरोकटोक कर सकते हैं। सिंहमुद्रा महाराज के आदेश के समान ही प्रभुतापूर्ण है। महाराज शिवकामी को समझाते हैं कि उसे कुमार का ध्यान छोड़ देना चाहिए वह दैवी है उसे मनुष्य का भोग नहीं बनना चाहिए। शिवकामी काफी दुःखी होती है। महाराज का कहना है कि कुमार ने पाड्यनरेश की पुत्री से विवाह का प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया, इसीलिए पाड्यनरेश ने चढ़ाई की। शिवकाम महाराज की बात मान लेती है। इसी बीच नागनन्दी अयानर की सिंहमुद्रा चुराकर उससे अंकित एक पत्र राज्यसभा में लाकर देता है। जिससे ज्ञात होता है कि शत्रुओं ने महाराज को बन्दी बना लिया है। जिससे राज्यसभा में खलबली मच जाती है। इसी बीच महाराज आते हैं तथा नागनन्दी को बन्दी बना लिया जाता है। महाराज कुमार को बताते हैं कि शासन की बागडोर संभालने के लिए पराक्रम के साथ सूझ-बूझ की आवश्यकता होती है।

शिवकामी और अयानर कांची के गौरव हैं। शिवकामी का प्रणय उसके प्राणों की शक्ति है, प्राणों का बन्धन नहीं, फलतः उसका प्रणय प्रलय बनकर उसके नुपूरों में समा जाता है। नारी स्वयं में शक्ति है, रागमयी और त्यागमयी। लेखिका ने अपने नारी पात्रों के माध्यम से इसी अभिचेतना को सम्प्रेषित करने की चेष्टा की है।

रेशमी रूमाल (1989) - त्रिपुरारी शर्मा

त्रिपुरारी शर्मा एक सशक्त नाटककार हैं। भारतीय नारी की छोटी-बड़ी खुशियाँ, इच्छाओं, उसकी व्यथाकथा उत्पीड़न आदि को बड़ी गहराई से पकडा है तथा प्रभावपूर्ण ढंग से नाट्य संयोजन किया है।

प्रस्तुत नाटक 'रेशमी रुमाल' भी नारीमन के अनेक पहलुओं को छूने में पूर्णतः सफल रहा है।' नारी अपने जीवन में तरह-तरह की भूमिका अदा करते हुए अपनी आंतरिक संवेदनाओं को सुलाए रखती है। उसकी जिन्दगी एक रेशमी रुमाल की तरह है। अच्छी तरह तह किया गया रुमाल बहुत सी सलवटों को छिपा लेता है उसी तरह नारी अपनी थकान, इच्छाओं प्रतिक्रियाओं को जाहिर होने से रोक लेती है। जीवन का वही कोना सामने रखा जाता है जो सुन्दर लगे जो लोगों को पसन्द आए। पर एक किनारा खुल जाए तो फड़फड़ाने लगता है। ऐसे में पहरे और दायरे अपना अर्थ खो बैठते हैं।

नाटक 'रेशमी रुमाल' में सुलक्षणा का जीवन रेशमी रुमाल को कोने के सदृश बहुत सुन्दर

सम्माननीय है। सुलक्षणा प्रताप की परिणीता है। उसके बच्चों की माँ है। प्रताप अपनें घर से दूर रहता है। काफी सालों से घर नहीं आया है। उसका देवर रोहित भाभी की बहुत इज्जत करता है। उसकी नव-परिणीता देवरानी भी साथ है। एक फूफी है जो विधवा जैसी रहती है पर सुहागन के मायने क्या हैं उसने जाना ही नहीं। तीन सालों में शादी तथा कुछ सालों बाद वैधव्य। ननद बीना है जो मायके आती रहती है। एक अनाथ मामी हैं जो इस घर की ही सदस्य हैं। भरी पूरी गृहस्थी है सुलक्षणा की, जिसे वह हँसी-खुशी पति के बिना चला रही है।उसी में रम गयी है। कोई शिकवा शिकायत नहीं है। सारे काम चलते हैं। अचानक प्रताप के घर आने का समाचार मिलता है। होली का त्योहार है। घर में चहल-पहल है सभी तैयारियों में जुट जाते हैं। होली के गाने वाले किसी दूर के गांव से आते हैं। होली के गाने तथा नाँच होती हैं। धीरे-धीरे सुलक्षणा भी उन्हीं के साथ नॉचने लगती है। उसके बाल बिखर जाते हैं, बिन्दी फैल जाती है, चूड़ियाँ टूट जाती हैं फिर भी नाचती रहती है। प्रताप गाने वालों को विदा कर अन्दर ले आता है। कुछ देर बाद वह घर से चली जाती है। रोहित उसे खींच कर वापस लाता है कि बुत नहीं बनाने चाहिए। उनके टूटने से दुःख होता है। सुलक्षणा सब कुछ चुपचाप हँसी से बर्दाश्त कर रही थी। शान्ति से घर चला रही थी। अचानक उसका यह रूप किसी को भी झकझोर देता है। कोई भी स्वप्न में उसके विषय में ऐसा नही सोच पाता है।

जब तक रुमाल का सुन्दर कोना दिखता रहा सब कुछ अच्छी तरह चलता रहा, जैसे ही रुमाल फड़फड़ा कर उड़ा सब कुछ तहस-नहस हो गया।

अकथ कहानी प्रेम की (1989) - डॉ. सरोज बिसारिया

प्रस्तुत नाटक ''अकथ कहानी प्रेम की'' कथानक ऐतिहासिक पृष्टिभूमि को लिए हुए है किन्तु चित्र काल्पनिक है। इस नाटक में जातिवाद के ऊपर करारा व्यंग्य है। लेखिका ने यह स्पष्ट करने की कोशिश की है कि मनुष्य-मनुष्य के बीच जाति, धर्म, व्यवस्था ने जो खाई खोदी है, दरार डाली है उसे निष्काम प्रेम ही पार सकता है। प्रेम ही ब्रह्म है और ब्रह्म ही प्रेम है।

नाटक का नायक माधव ब्राह्मण है। वह रूप में कामदेव, बुद्धि में बृहस्पति, तर्क में बुद्धि में उशना से भी तीक्ष्ण है। संगीत जिसका सर्वप्रिय विषय है। पुष्पावती के राजा राजपद देना चाहते हैं, किन्तु उसे स्वीकार नहीं है। पुष्पावती की राजनर्तकी कामकन्दला उसे प्यार करती है। किन्तु उसे राज्य से दूर जाने का आदेश मिलता है। राजा माधव पर यह आरोप लगाते हैं कि वह ब्राह्मण होकर भी शास्त्र के सागर में गोते न लगाकर संगीत के सागर में आकंठ डूबा हुआ है। माधव का मानना है कि उसका जीवन वह अपनी इच्छा से जी सकता है। पिता से भी माधव का मतभेद है क्योंकि वे चाहते है कि माधव राजपुरोहित का पद स्वीकार कर ले जो पीढ़ियों से उनके वंश का अधिकार है। वह देश छोड़कर घूमता-घूमता कामावती नगरी पहुँचता है, जहॉ काम कन्दला के नृत्य का आयोजन हो रहा है। स्वर तथा नृत्य में कुछ विशेष दोष बताकर वह वहाँ के राजा का आदरणीय बन जाता है। किन्तु पुरस्कार में कुछ भी स्वीकार नहीं करता। काम कन्दला को पहचानकर उससे

मिलता है। मिलने पर ज्ञात होता है कि काम कन्दला आज भी उससे उतना ही प्रेम करती है। उसी क्षण विवाह कर लेने की सोचते हैं। काम कन्दला विवाह का प्रबन्ध करवाती है। राजा को भी सूचना मिलती है। महामंत्री विरोध करते हैं। क्योंकि राजनर्तकी विवाह नहीं कर सकती। राज्याज्ञा के बिना विवाह वर्जित है। राजा भी उपस्थित होते हैं। राजा को उज्जैनी के महाराज का पत्र मिलता है। जो उज्जैनी के महाराज ने पुष्पावती के महाराज के अनुरोध पर लिखा है। पत्र से माधव का परिचय प्राप्त होता है। माधव को पुष्पावती वापस बुलाया गया है। इसीबीच पंडित गंगाधर (माधव के पिता) वहाँ आते है, माधव व काम कन्दला को वापस पुष्पावती ले जाने का प्रस्ताव रखते हैं। माधव पूछता है कि क्या महाराज स्वीकार करेंगे। गंगाधर बताते हैं कि महाराज के जीवन में महान परिवर्तन आया है। वे जाति धर्म से परे मानवता के निरपेक्ष महत्व को समझने लगे हैं। युवराज (विनोद) ने उन्हे नयी दृष्टि दी है। राज पंडित दोनों को लेने आए हैं। पुष्पावती के विष्णु मंदिर में मूर्ति की स्थापना है वे चाहते हैं कि उत्सव माधव के कण्ठों से निकलने वाले मंत्रों से तथा कामकन्दला के नूपुरों की झंकार के बीच सम्पन्न हो। माधव अति प्रसन्न हैं किन्तु कामकन्दला निर्णय लेती हैं कि वह अपना जीवन महाकाल को अर्पित कर देगी। पुष्पावती न जाकर उज्जैनी जायेगी। देवदसी बनेगी। माधव हतप्रभ है। उसके हाथ अभी भी सिन्दूर से लाल हैं जो वह कामकन्दला के मस्तक पर लगाना चाहता है। किन्तु कामकन्दला अद्विग है। वह प्रेम को शुचिता और दिव्यता ही नहीं अमरत्व देना चाहती है।

नहुष (1989) - डॉ. गिरीश रस्तोगी

डॉ. रस्तोगी का नाटक 'नहुष' मैथिलीशरण गुप्त के संक्षिप्त काव्य पर आधारित है। इसे नाट्य रूपान्तर नहीं कह सकते क्योंकि लेखिका ने नहुष के चरित्र को उसकी परिस्थितियों उसके उन्माद-प्रमाद अहंकार उसकी अनन्त महत्वाकांक्षाओं को उभारा है। उसे वर्तमान शासन परिप्रेक्ष्य से जोड़ते हुए आज की शासन व्यवस्था तथा उससे जुड़े शासकों के लिए संकेत के रूप में प्रस्तुत किया है। नहुष का महिमापंडित व्यक्तित्व उसका विकास और स्खलन स्खलन के कारणों, आत्ममंथन तथा मनुष्यत्व की विजय पर आधारित कर नाटक को अर्थपूर्ण आयाम दिया है। नाटक आज के जीवन संदर्भ से जुड़ गया है। वर्तमान परिस्थितियों शासन व्यवस्था तथा शासकों के लिए संकेत हैं।

देवेन्द्र के ऊपर ब्रह्म हत्या का आरोप है। वे प्रायश्चित कर रहे है, इसलिए उनके खाली आसन के लिए सुयोग्य पात्र की तलाश देवता व ऋषि लोग कर रहे हैं। पृथ्वीलोक पर राजा नहुष को वे सारे दैवी गुण दिखते हैं, उनके पास पुरुषार्थ भी है, वे महान तपस्वी हैं। उन्हें देवराज इन्द्र के पद पर बैठाया जाता है। सत्ता के मद में वे इन्द्राणी की कामना कर बैठते हैं। इन्द्राणी ने शर्त रखी है, कि वे ऋषि जिन्होने नहुष को देवराज का पद दिया है वे ही शिविका उठाकर लाए तो वे नहुष को वर रूप में स्वीकार करेंगी। ऋषि लोग विवश होकर ऐसा ही करते हैं। इसी बीच असुर यज्ञ मे विघ्न डालते हैं। नहुष ऋषियों को रथ में घोड़े की जगह जोतता है। दौड़ता है। अगस्त्य ऋषि को पैर से मारता है। ऋषि शाप देते हैं वह सर्प बन कर वापस पृथ्वी पर आ जाता है। सब

कुछ पाकर भी अहंकार के कारण नहुष सब कुछ खो देता है। अपना अस्तित्व भूलकर दैव बनने की कामना ही उसके पतन का कारण बनती है।

आप न बदलेंगे (1989) - ममता कालिया

ममता कालिया के पाँच नाटक संग्रहित हैं। इस पुस्तक में प्रसिद्ध एकांकी हैं। जालंधर व दिल्ली दूरदर्शन से प्रसारित हो चुके हैं। आकाशवाणी इलाहाबाद से भी 'यहाँ रोना मना है', 'आपकी छोटी लडकी' प्रसारित हो चुके हैं। रविवार व छायानट पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं।

1. आपकी छोटी लड़की :-

पारिवारिक समस्याओं पर आधारित नाटक है। जीवन की छोटी-छोटी घटनायें जो हर घर में हर आदमी की जिन्दगी में घटती हैं उन्हें एक सूत्र में पिरोकर लेखिका ने एक संवेदनशील एकांकी की रचना कर दी है। प्रस्तुत नाट्क में - घर में दो लड़कियाँ है। बड़ी लड़की नृत्य गायन, संगीत में प्रवीण है उसे इनाम मिलते हैं। घर के कामों से उसे कोई मतलब नहीं है। माँ पिता हमेशा उसकी प्रशंसा करते हैं। छोटी लड़की तूर्णा जो काफी संवेदनशील है, घर के हर काम में उसके सहयोग की अपेक्षा है। मम्मी पापा उसकी इतनी तारीफ नहीं करते हैं। घर में एक साहित्यकार आते हैं। टुनियाँ (तूर्णा) उनकी पूरी आवभगत करती है। वे टुनियाँ की तारीफ करते हैं तो पिता समझते हैं बड़ी लड़की किन्तु वे जोर देकर कहते हैं कि नहीं आपकी छोटी लड़की। उसकी आवाज़ में एक संस्कार है बहुत स्वच्छ मधुर, संस्कारवान आवाज़ है बहुत सम्भावनाएँ है। साहित्य में उत्तराधिकार जैसी चीज नहीं है नहीं तो मैं कहता कि यह लड़की मेरी वारिस होने का हक रखती है। माता-पिता जिन खूबियों को नहीं समझ पाते कुछ घंटों के लिए आया आदमी कितने गहरे तक जान जाता है। छोटी लड़की का व्यक्तित्व बौना नहीं रह जाता बल्कि ऊँचा उठ जाता है।

२. आत्मा अठन्नी का नाम है :-

प्रस्तुत नाटक समाज में व्याप्त महामारी जैसे दहेज को लेकर लिखा गया है। किस तरह से दहेज के लिए लड़कियाँ जलायी जाती है क्या-क्या बहाने बनाये जाते हैं। वन्दना शादी के बाद ढेर सारे सामान के साथ ससुराल आती है। फिर भी घर वाले संतुष्ट नहीं है। हर सामान को लेकर कुछ कमेन्ट्स है। सास उसके हर काम में नुक्ताचीनी करती है। जबकि वन्दना घर का हर काम मन लगाकर करती है। घर के हर सदस्य का ध्यान रखती है। उसके देवर सतीश को यह सब अच्छा नहीं लगता। पति तो सास ससुर की हर हाँ में हाँ मिलाता है छोटे ननद देवर भी उन्हीं लोगों के जैसे हैं।

वन्दना के मायके वालों का भी वर्णन है वे लोग बहुत गरीबी में जी रहे हैं कितनी मुश्किल से उन लोगों ने इतना सामान वन्दना को दिया था। बाद में भी नई-नई फरमाइशें रहती है। खरीदारी के बिल भेज दिये जाते हैं। पिता अपने बेटे को वन्दना के चरित्र को लेकर भड़काते हैं तथा खुद की नीयत भी साफ नहीं है। अच्छा खाता पीता मध्यमवर्गीय परिवार है। फिर भी वन्दना को परेशान करते हैं। महेन्द्र जहाँ भी वन्दना के लिए कुछ सोचता है माँ पिताजी उसे भड़काते रहते हैं। वन्दना

से उसके माँ के घर से पैसे मँगवाने के लिए कहा जाता है। उसका देवर उससे अपने अधिकार के लिए लड़ने के लिए कहता है किन्तु वन्दना कहती है जो अपने अस्तित्व के लिए लड़ नहीं सकता वह अधिकार और हक की बात नहीं कर सकता। पर जब वह अस्तित्व के लिए लड़ना चाहती है लड़ने का ढंग बनाती है तो वह भी उसका साथ छोड़ देता है। वन्दना का अंत भी उतना ही दुःखकर है जितना दहेज के लिए प्रताड़ित हर लड़की का होता है। आत्मा का कोई मूल्य नहीं है।

३. आप न बदलेंगे :-

एक सामान्य मध्यमवर्गीय परिवार का वर्णन है। पति पत्नी तथा बेटी। छोटे-छोटे बच्चे। नीता एक लैंम्प खरीदकर लाती है जिससे जिन्न निकलता है। नीता घर की छोटी-छोटी बातों पर झगड़ पड़ती हैं। पति छोटी-छोटी समस्याओं से परेशान है। बच्चे पढ़ने तथा खाने के लिए परेशान करते हैं। विधु भी खुश नहीं रहता। जिन्न उसकी परेशानी को समझता है अपने एलबम तथा एम्प्लीफायर की सहायता से अच्छे-अच्छे बच्चे तथा एक नवयुवक निकालता है। नीता बैठी बैठी साथ देखती हैं। किसी ढंग की परेशानी नहीं है कन्ट्रोल-बाक्स की सहायता से सब चलता है। नवयुवक की हरकतों से वह चेतती है। तथा सब ऑफ कर देती है। वह जिन्न से कहती है मैं ऐसा नहीं चाहती। मैं चाहती हूँ कि मेरे विधु ही मुझे प्यार करे, मुझेअपनी प्रेयसी समझे, इन्सान समझें एक कामरेड। मेरे बच्चे ही मुझे प्यार दें। जिन्न रुखाई से कहता है आप न पति चाहती न बच्चे आप कठपुतले चाहती हैं। कुछ भी बदल नहीं सकता। जो जैसा है उसे उसके उसी रूप में स्वीकार करना पड़ेगा।

४. यहाँ रोना मना है :-

लड़कियाँ मिलकर झूला झूल रही हैं गाना गा रही है सब मिलकर हँसती हैं। नाटक का प्रारम्भ होता है खुशियों से। मुख्य पात्र कालिन्दी की शादी हो जाती है। उसके ससुराल का माहौल कट्टरपंथी है। सास का ही प्रभुत्व है। जेठानी भी हॉवी रहती है कालिन्दी की माँ की मौत हो जाती है। देवर की शादी के कारण उसे माँ की मृत्यु की खबर आने के बाद भी मायके जाने की आज्ञा नहीं है। पति भी यही चाहता है। घरमें काम है इस लिए वह नहीं जा सकती। सास उसे मना करती है कि हमारे घर में शुभ है तुम असगुन न करो। दौड़-दौड़ कर काम करती है गाना गाती है नाचती है। दुःखी है तो रो भी नहीं सकती है। रोने के लिए भी आज्ञा की आवश्यकता है।

५. जान से प्यारे :-

'जान से प्यारे' ममता कालिया का समाज के नाम पर करारा व्यंग्य है। वैज्ञानिक डॉ. कौशिक एक ऐसी दवा का आविष्कार करते हैं जिसे मरे हुए आदमी को जिन्दा किया जा सके। वे अपने आविष्कार से बहुत खुश है। सुबह-सुबह वे अपने शिष्य के साथ जिन घरों में मौत हुई है। वे अलग-अलग घरों में जाते हैं। मृतक भी अलग-अलग आयु वर्ग का है। पर कोई भी तैयार नहीं होता कि मृतक को फिर से जिन्दा किया जाय।लेखिका कहना चाहती है कि जो जिन्दा रहते जान से प्यारे थे वे ही कुछ पलों में कितने बेगाने हो जाते हैं कोई भी उन्हे वापस लाना नहीं चाहता।

एक और दिन (1990) - शांति मेहरोत्रा

प्रस्तुत नाटक शांति मेहरोत्रा के एक एकांकी संग्रह का नाम है। इसमें सात एकांकी संग्रहीत है।

१. **सर्प दंश :-**

सर्प-दंश शांति मेहरोत्रा का प्रभावपूर्ण एकांकी है। रीता एकांकी की मुख्यपात्र है जिसे सांप काट लेता है। पर्ची बनवाने से लेकर अस्पताल में भर्ती होने तक की परेशानियों का लेखा जेखा है। वार्ड में नर्स भी मरीजों से अच्छा व्यवहार नहीं करती है। जो किसी के परिचय के माध्यम से आये हैं वे तो फिर भी अच्छी स्थिति में हैं, जिनका कोई नहीं है वे भाग्य के भरोसे छोड़ दिए जाते हैं। डॉ. का चपरासी भी डॉक्टर से मिलने के लिए दो रूपये लेता है। वार्ड में पानी नहीं है। तमाम परेशानियाँ हैं। हमारे सरकारी अस्पताल कितने दायित्वों का निर्वाह कर रहे हैं इस एकांकी में उसकी झलक स्पष्ट दिखती है। उनकी सहायता पाने के लिए जिन परिस्थितियों से गुजरना पड़ता है वे सर्प-दंश से भी ज्यादा खतरनाक है।

२. **किसी का इंतजार नहीं :-**

प्रस्तुत एकांकी में एक मध्यमवर्गीय परिवार की समस्याओं को इंगित किया गया है। बूढ़े माता-पिता तथा छोटी बहन। बच्चों [illegible] अपने परिवार के साथ दूसरे शहर (जहाँ नौकरी करते हैं) में रहते हैं। बच्चों के लिए रिटायर माता-पिता ही बोझ बन जाते हैं। कोई उन्हें अपने पास रखना नहीं चाहता। छोटी बहन अचला की शादी की चिन्ता किसी को नहीं है। अचला अपनी शादी अपने पसन्द से करना चाहती है, तो मध्यमवर्गीय मानसिकता वश पिता स्वीकार नहीं कर पाते। लड़कों को पैसों की आवश्यकता होती है, तो आते हैं पर उनके लिए कुछ करना पड़ता है, तो बहाना बनाते हैं। धीरे-धीरे पैसे भेजना भी बन्द कर देते हैं। समय भी नहीं कटता है बेटी भी अपनी शादी करके चली जाती है। माँ उसके निर्णय का स्वागत करती है। धीरे-धीरे पिता भी स्वीकार कर लेते हैं। अब वृद्ध व वृद्धा को किसी का इंतजार नहीं रहता।

३. **एक थी मौसी :-**

कमला व राजेश की एक दूर की मौसी उनके घर रहने आती है। गंगा नहाने व मिलने के लिए उनके पास आती हैं। मौसी राजेश की शादी अपनी पसन्द से करवाना चाहती थीं, जिसके लिए उन्हें दस हजार रुपये मिलने वाले थे इस बात दुःख है उन्हें। पड़ोसियों को दयाभाव दिखाते हुए घर का सामान बाँटती रहती हैं। मकान मालिक की बेटी को थप्पड़ मारती हैं। दुकान वाले को देने के लिए जो पैसे राजेश मौसी को देता है, उसे चुपचाप लेकर चली जाती हैं। उनके नौकर को भी लेकर चली जाती हैं। दोनों पति-पत्नी नौकरी करते हैं नौकर के जाने के बाद उन्हे कितनी मुश्किल होगी इस बात का एहसास तक नहीं है। उन लोगों की समाज में इज्ज़त है, पर मौसी सभी के सामने उन लोगों को नीचा कर देती है। हमारे समाज में ऐसी बहुत सारी नारियाँ हैं, उनका रूप चाहे जो हो मौसी हो, चाची हो या कुछ भी जिनका परम कर्तव्य दूसरों की खुशियों में आग लगाना है।

४. **अपने-अपने दायरे :-**

दादा जी दादी एवं स्वीटी एक साथ रहते हैं। स्वीटी कालेज में पढ़ती हैं एवं खुले विचारों की लड़की है। उसकी दोस्ती लड़कों से भी है जो दादी-दादा को अच्छी नहीं लगती। दादा जी रिटायर है, बाहर का सारा काम वे करते हैं। स्वीटी के लिए चिंतित है। जितने लड़के घर पर आते हैं, सभी में स्वीटी को शादी की सम्भावना नजर आती है। पर स्वीटी की बातें सुनकर निराश हो जाते हैं। स्वीटी का मन पढ़ाई में नहीं लगता। उसके सपने में आनन्द है जिससे वह शादी करना चाहती है। आनन्द भी उसे पसन्द करता है। सबके अपने-अपने दायरे है जिसमें रहकर ही जिन्दगी के विषय में सोच सकता है।

५. **आतंक :-**

दहेज को विषय बनाकर लिखा गया एकांकी है। घर में माधव, माधव की माँ एवं माधव की पत्नी है। स्कूटर दहेज में न मिलने के कारण माधव व माँ मिलकर उसकी पत्नी को जला डालते हैं। उनके मन पर हमेशा इस बात का आतंक छाया रहता है कि किसी को पता न चल जाए। महरी को भी लड़के की नौकरी का लालच देकर दबाव में रखा जाता है। उसके मायकेवाले आकर न कुछ कें। तरह-तरह की बाते आती है। फिर भी ऐसे माहौल में दूसरी शादी की बात शुरु हो जातीहै। पति भी कमला की जगह सुनिता के विषय में सोचता है। पुलिस कप्तान के पास भी बुलाहट होती है क्योंकि कमला के मायके वालों ने रिपोर्ट कर दी है। पूरे एकांकी मे आतंक छाया रहता है फिर भी बन्नी के बोल सुनायी पड़ते हैं। आतंक का बादल थोड़े से पैसों के हेर-फेर से ही हट जाता है और आतंक खुशियों में बदल जाता है।

६. **तीसरा हिस्सा :-**

प्रस्तुत एकांकी में तीन पात्र हैं। चोर, शाह एवं सिपाही। चोर एक घर में चोरी करने जाता है। शाह से पूछकर इंश्योरेन्स के नियमों में बँधकर चोर चोरी करता है पर शाह के घर में चोर को कुछ नहीं मिलता, बल्कि उसे यह मालूम होता है कि शाह भी उसी के समूह का है। शाह के घर में नकली प्रमाणपत्र मिलते हैं। शाह उसे मिठाई का डिब्बा देता है, तथा घर से कुछ दूर छोड़ने जाता है। बीच में रात की ड्यूटी पर घूमने वाला सिपाही मिलता है, जो तीसरे हिस्से की माँग करता है अपनी शासन व्यवस्था उसमें रत कर्मचारियों की मानसिकता क्या है, इसके ऊपर करारा व्यंग्य है।

७. **एक और दिन :-**

प्रस्तुत नाटक शांति मेहरोत्रा द्वारा लिखा गया बहुचर्चित असंगत नाटक है। असंगत नाटकों तथा नाटककारों की संख्या सीमित ही है। जिसमें महिला नाटककारों में मृदुला गर्ग व शांति मेहरोत्रा का नाम उल्लेखनीय है।

'एक और दिन' एक परिवार की कहानी है। उनका पूरा एक दिन कैसे बीतता है। परिवार में पति-पत्नी व पुत्री है। पत्नी सुस्त-सुस्त घर के कामों में लगी रहने वाली है। पति अपनी जिन्दगी जी रहा है। एक दूसरे की बातों को काटते हुए एक दूसरे की भावनाओं की परवाह ही नहीं है। पति-

पत्नी के बीच का माधुर्य नहीं है। बस जी रहे। बेटी उपन्यासों की दुनियाँ में जीने वाली। पार्टियॉ क्लब फैशन ही जिन्दगी है। तहजीब नाम की कोई चीज नहीं है। पूरी तरह आधुनिक। संस्कार छू तक नहीं गए हैं। सुविधा परस्त। शादी के पहले ही एक लड़के से ऐसी दोस्ती है कि उसके बच्चे की माँ बनने वाली है। पर कोई गलती का एहसास नहीं है। शादी करनी नहीं है, बच्चा चाहिए नहीं। बस जीवन की एक झलक ही देखी है, डूबी नहीं है।

बेटा है घूमता रहता है। पापा कुछ-कुछ बोलते रहते हैं। घर में या तो मौन है या फिर एक दूसरे से झगड़ते रहते हैं। भावनात्मक स्तर पर कोई जुड़ाव या लगाव है ही नहीं। बच्चे माँ पिता की जरा सी भी इज्ज़त नहीं करते। यह जो आधुनिकीकरण है जो ओढ़ी हुई सभ्यता है यह हमारे समाज को कहाँ ले जायेगी। क्या भविष्य है ? सारी सुविधाओं के होते हुए मन का सुकून कहाँ है। उसके अवचेतन मन में दबी हुई इच्छाओं में एक पुरुष है जो उससे चाँद सितारे की बातें कर सकता है प्यारे-प्यारे बच्चे हैं जो पहले उसके ही थे पर वे अब कहीं खो से गऐ हैं। वह चाहती है कि उनके रिश्तों में जो बर्फीला ठंडापन है वह हटे, पर कोशिश कौन करना चाहता है।

अपने हाथ बिकानी(1990)- डॉ. गिरीश रस्तोगी

''अपने हाथ बिकानी'' डॉ. रस्तोगी का प्रभावशाली नाटक है। नायिका बिन्दु तेज मार्डन तथा बोल्ड लडकी है। वह रिसर्च कर रही है। ग्रामीण महिलाओं का जीवन, उनकी सामाजिक स्थिति तथा उनकी समस्याओं को उसने अपना विषय बनाया है। वह अपना काम पुस्तकालय में बैठकर नहीं करती है, बल्कि वह महिलाओं से मिलती है, उनका केस स्टडी करती है। तथा अपने विचारों को कार्यान्वित करती है। वह ऐसा फैसला करती है कि वह शादी नहीं करेगी। उसके पिता उसे व्यावहारिक बनने की सलाह देते हैं। सामाजिकता का निर्वाह अनिवार्य है। दोनों में इसी बात को लेकर विरोध है। उसका एक दोस्त है जो उसे अच्छी तरह समझता है। वह उसे समझाता है कि उसके पापा भी अपनी जगह सही हैं। उसे अपने दोस्त की आंखों में निश्चल सादगी भरा विश्वास दिखता है। वह अपना निर्णय ले लेती है। स्वयं ही जीवन के सत्य को स्वीकार कर लेती है। खुद ही झुक जाती है।

मैं मायके चली जाऊँगी(1990) - स्वरूप कुमारी बख्शी

प्रस्तुत एकांकी संग्रह में स्वरूप कुमारी बख्शी के पाँच एकांकी संग्रहित हैं। सभी एकांकी हास्य और व्यंग्य से भरपूर है।

१. मैं मायके चली जाऊँगी :-

स्वरुप कुमारी बख्शी का एकांकी हास्य और व्यंग्य से भरपूर है। एक छोटा परिवार जिसमें पति, पत्नी, माँ तथा एक नौकर है। पत्नी अपने घर के गुणगान करती रहती है कि उसके घर में हर काम के लिए अलग-अलग नौकर हैं। घर के नौकर को डाँटती रहतीहै। सास से कुद्बातों को लेकर मतभेद होता है। पति, दोनों के मतभेद से परेशान है। वे चाहते हैं कि घर में सुखशान्ति रहे। उनके घर कुछ मेहमान शाम को आने वाले हैं। राजेश चाहता है कि माला मेहमानों के लिए चाय

नाश्ते का प्रबन्ध करे। पर माला ने शाम का टिकट मँगा रखा है वह पिक्चर जाना चाहती है। मायके चली जाऊँगी। माँ कहती है मुझे तीर्थ करने भेज दो। राजेश बीच में फँसा परेशान है। इसीबीच मेहमान आते हैं वे मेहमान कोई और नहीं माला के पिताजी होते हैं। माला खुश होकर चाय नाश्ते में व्यस्त हो जाती है। माला के पिता कहते हैं कि स्त्री की इस धमकी के आगे संसार के प्रत्येक पुरुष को हार माननी पड़ती है - मैं मायके चली जाऊँगी।

२. विवाह का विज्ञापन :-

प्रस्तुत एकांकी में कुल चार पात्र है दो स्त्री पात्र दो पुरुष।

दो सहेलियाँ कुमकुम और टुनटुन हैं जो ऑफिस में टाइपिस्ट हैं। अपनी रोज-रोज की जिन्दगी से बोर हो गयी हैं। वे चाहती हैं कि उनकी भी जिन्दगी में कुछ परिवर्तन आये। इसी बीच उन्हें अखबार में एक विज्ञापन दिखाई पड़ता है। जो लगताहै कि उनके लिए ही है। कुमकुम अपने को योग्य मानकर उसके लिए पत्र देती है। विज्ञापन विवाह के लिए है पर लिखावट के कारण नौकरी का लगता है। दो पुरुष जिन्होने विज्ञापन दिया है, नरेश एवं सुरेन्द्र है। नरेश ने ही अपने लिए विज्ञापन दिया है जिसे कुमकुम बहुत पसन्द आती है। उसके दोस्त सुरेन्द्र को भी कुमकुम के जैसी ही लड़की चाहिए। विवाह का विज्ञापन इस प्रकार है :-

एक स्मार्ट टाइपिस्ट की आवश्यकता है, बेड-टी बनाने की रफ्तार सात मिनट, लंच की आधा घंटा, कमीज सीने की रफ्तार एक घंटा। ... वेतन आठ सौ रुपये है।

३. मन पसन्द की शादी :-

स्वरूप कुमारी बख्शी का प्रसिद्ध एकांकी है। प्रस्तुत नाटक में माँ, राजू और नौकर बंसी एवं चमेली है। राजू अपनी पसंद से सुनीला से शादी करना चाहता है। जो पड़ोस में रहती है। नौकर बंशी नौकरानी चमेली से शादी करना चाहता है। माँ महेश्वरी अपने बेटे राजू की शादी अपनी पसन्द से दहेज लेकर करना चाहती हैं। वे चाहती है कि लड़की के घर से उन्हे ट्रांजिस्टर, फ्रिज, तीस हजार रुपये, मोटर मिले। छोटे-छोटे हास्य की बीच नाटक आगे बढ़ता है। माँ लड़की वालों को बताती है मेरा बेटा विलायत से पढ़ा है। सरकारी नौकरी में है, तो मुझे सारी चीजें चाहिए। उनका बेटा अपनी शादी सुनीला से करता है तथा नौकर बंशी की शादी चमेली से करता है। माँ को अच्छा नहीं लगता। राजू बताता है कि माँ तुम्हारी पसन्द की सारी चीजें मैंने अपनी ईमानदारी के पैसे से खरीद ली हैं तीस हजार के रुपये का बीमा भी करवा दिया है। मां बहुत खुश हो जाती हैं। उनके सारे सपने साकार हो गये हैं। वही सुनीला जिसे वह पसन्द नहीं करती, उसे बहुत सुन्दर लगती है।

४. नई पड़ोसन :-

प्रस्तुत एकांकी में रामचन्द्र मुख्य पात्र है। रामचन्द्र के इर्द-गिर्द कथा घूमती है। उनके घर के बगल में नीलिमा नाम की नवयुवती अपनी माँ के साथ आकर रहती है। वह रामचन्द्र से उनका ट्रांजिस्टर माँग कर ले जाती है। उसका नौकर सामान चुरा कर ले जाता है तो सौ रूपये उधार माँगकर

ले जाती है। उनकी पत्नी रानी को ये ही बातें उसकी नौकरानी नमक मिर्च लगाकर इस ढंग से बताती है कि रानी को अपने पति पर शक हो जाता है जबकि नीलिमा रामचन्द्र को अपना बड़ा भाई समझती है। रामचन्द्र का एक मित्र मनोज नीलिमा को पसन्द करता है। इसलिए रामचन्द्र के घर के चक्कर काटता है। रामचन्द्र की पत्नी रानी बुरी तरह से नीलिमा से उलझती है। अंत में मनोज यह कह कर कि नीलिमा मेरी मंगेतर है सारी समस्याओं का समाधान करता है। अच्छे स्तर का हास्य है। बिहार की स्थानीय भाषा-भोजपुरी का प्रयोग बहुत ही अच्छे ढंग से किया गया है। नौकरानी तथा रानी पूरे एकांकी में इसी भाषा का प्रयोग करती हैं।

५. अधिकारों का युग :-

अधिकारों का युग में बख्शीजी ने तीखा व्यंग्य किया है। हर किसी को अपना अधिकार चाहिए। सभी को अपने अधिकार के लिए हड़ताल करना है। यहाँ तो गृहलक्ष्मी जो घर की मालकिन है उसे भी अपने पति से अपने अधिकार माँगतीहै। उसकी छुट्टी लेने से एक दिन में ही घर की हालत उल्टी सीधी हो जाती है। पति को एक कप चाय भी नसीब नहीं होती। उन्हे घर के किसी काम का अनुभव नहीं है। धोबी को कपड़े देते हैं तो उसमे से पैसे नहीं निकालते। कपड़े गिनते भी नहीं है। धोबी भी हड़ताल पर जाने वाला है इसलिए वह दूसरे दिन नहीं आ सकता। घी वाला भी चर्बी वाला घी देकर जाता है। जमादारिन भी हिसाब करने आतीहै। पति परेशान है। इसी बीच पंडित जी आतेहैं जो कहते हैं कि उनकी लड़की की शादी के लिए उसकी सास आज ही टीका करने आ रही है। फिर शारदा अपनी छुट्टी स्थगित कर देती है कि क्योंकि दूसरे दिन से पंडितजी लोग भी हड़ताल पर जाने वाले होते हैं। फिर सगुन नहीं हो सकता। एक दिन में सब चौपट हो जाता है। पूरे नाटक में हास्य का भरपूर निर्वाह हुआ है। सभी अपने अधिकार के लिए प्रयत्नशील है। कर्तव्य की परवाह किसी को नहीं है।

एक और आवाज (1991) - सावित्री रांका

प्रस्तुत एकांकी संग्रह में छः एकांकी संग्रहित हैं। सावित्री शंका ने ऐतिहासिक, सामाजिक सभी विषयों को अपनी लेखनी का विषय बनाया है। लेखिका की पकड़ बहुत पैनी है।

१. प्रतिशोध :-

यह एक ऐतिहासिक एकांकी है। इसमें मगध के शासक सम्राट अशोक के शासन काल को चित्रित किया गया है। महाराज अशोक ने तिष्यरक्षिता से वृद्धावस्था में विवाह किया था। महाराज ने बौद्ध धर्म स्वीकार कर लिया। राज्य के सारे कामों की जिम्मेदारी महारानी तिष्यरक्षिता पर डाल दी। युवराज कुणाल इन कार्यों में रानी की सहायता करते हैं। रानी तिष्या कुणाल से प्रेम करतीहै वह कुणाल के सामने व्यक्त करती है। कुणाल उन्हे माँ के समान आदर करते हैं। रानी तिष्या को कुणाल से ऐसी उम्मीद नहीं थी। प्रतिशोध की आग में जलती महारानी कुणाल पर आरोप लगातीहै तथा फलस्वरुप युवराज की दोनों आंखें निकलवा देती है। जिसके दंडस्वरूप उसे गंगातट पर जीवित जला दिया जाता है।

२. **कपिलवस्तु की राजवधू :-**

प्रस्तुत एकांकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से है। रांका जी ने इसका कथानक गौतम बुद्ध के गृहत्याग को लेकर बुना है। यह एकांकीकपिल वस्तु के महाराज शुद्धोदन के पुत्र सिद्धार्थ की पत्नी यशोधरा के जीवन पर आधारित है। यशोधरा को सिद्धार्थ सत्य की खोज के लिए एक रात बिना कुछ बताये सोती छोड़कर चले जाते हैं। यशोधरा का पुत्र बहुत छोटा है। महाराज शुद्धोदन ने अपने पुत्र का विवाह सांसारिक बनने के लिए किया था। ज्योतिषियों ने यह भविष्यवाणी की थी कि यह राज्यसुख त्याग कर साधु बन जायेगा। इस डर के कारण महाराज शुद्धोदन ने सारे प्रयत्न सिद्धार्थ का मन लगा रहे, यह किया। फिर भी सिद्धार्थ चले गए सिद्धार्थ के अचानक गृहत्याग से यशोधरा बहुत दुःखी है। राजमहल में रहकर भी वह तपस्विनी का जीवन व्यतीत करती है। सिद्धि प्राप्त करने के बाद सिद्धार्थ गौतम बुद्ध बनकर वापस आते हैं। सारी प्रजा दर्शनों को उमड़ पड़ती है। यशोधरा को भी महामाया कहती है,किन्तु वह कहती है कि मैंने भी तो तपस्या की है। अगर मेरी तपस्या सच्ची है तो भगवान मुझसे मिलने जरुर आयेंगे। भाग्य में पूजा का पुण्य है, तो मुझे नहीं भूल सकते। गौतम बुद्ध यशोधरा से मिलने आते हैं। यशोधरा उनसे कहती है कि आपने जो कुछ प्राप्त किया वह महान् है अमर है मुझे केवल इस बात का दुःख है कि आप मुझे न जान सके क्षत्राणियाँ तो रणक्षेत्र में अपने प्रियतम को हँसते-हँसते भेजती हैं। राहुल को पिता को सौंपकर अपनी जिम्मेदारी से मुक्त होती है। स्त्रियों का प्रवेश निषिद्ध है इसलिए वह बुद्ध के शरण में न जा सकी।

नारी तो हर दशा में त्याज्य है। पति तथा पुत्र दोनों त्याग देते हैं। फिर भी नारी पति व पुत्र की कामना करती रहेगी। नारी सदैव घर की कामना करती रहेगी। 'बुद्धं शरणं गच्छामि' के साथ एकांकी समाप्त होता है।

३. **हृदय परिवर्तन :-**

प्रस्तुत एकांकी का कथानक भी ऐतिहासिक पृष्टिभूमि से है।

रांकाजी ने इस एकांकी में सम्राट अशोक के जीवन काल से सम्बन्धित घटना को विषय बनाया है। सम्राट अशोक ने कलिंग पर विजय प्राप्त की। विजयश्री को प्राप्त करने के पश्चात मौर्य साम्राज्य के सैनिक खुशियाँ मनाना चाहते हैं। पाटलिपुत्र में विजयोत्सव की तैयारियाँ हो रही हैं। सभी सम्राट के आगमन की प्रतीक्षा कर रहे हैं। सेनापति भी सम्राट से कहते हैं कि सम्राट हमें प्रस्थान करना चाहिए। किन्तु कलिंग युद्ध में भीषण(रक्त)पात होताहै उससे सम्राट का हृदय विचलित हो जाता है। वे अकेले कलिंग भ्रमण को जाते हैं। वहाँ का दृश्य उनके हृदय को छू जाता है। वहाँ अकेली वृद्धायें हैं, वृद्ध हैं, जो अपने प्रिय के वियोग से परेशान है। सभी अशोक का नाम लेकर विलाप कर रहे हैं। कलिंगवासियों की अवस्था देखकर सम्राट का हृदय द्रवित हो जाता है। उनका हृदय परिवर्तन हो जाता है, वे अपने मानव कल्याण के लिए अपने को प्रस्तुत कर देते हैं। प्रण करते हैं कि उनके साम्राज्य में कभी भी रक्तपात नहीं होगा। वे सभी को प्रेम का पाठ पढ़ायेंगे। वे द्रवित हो पुकार उठते हैं -

''बुद्धं शरणं गच्छामि''

४. सारथि :-

प्रस्तुत एकांकी एक ऐतिहासिक एकांकी है। प्रस्तुत एकांकी में महाभारत की प्रसिद्ध कथा श्रीकृष्ण में अर्जुन के सारथि बनते हैं को लेकर लिखी गयी है।

श्रीकृष्ण पांडवों के दूत बनकर दुर्योधन के पास जाते हैं। दुर्योधन श्रीकृष्ण के प्रस्ताव को अस्वीकार कर देता है। उसका कहना है कि वह बिना युद्ध के सुई की नोक के बराबर धरती नहीं देगा। दोनों पक्ष युद्ध की तैयारी करते हैं। अर्जुन तथा दुर्योधन दोनों कृष्ण की सहायता के माँगने जाते हैं।अर्जुन कृष्ण चुनते है, कृष्म अर्जुन के सारथि बनते हैं। उनका प्रण है कि वे युद्ध में शस्त्र धारण नहीं करेंगे। दुर्योधन कृष्ण की सेना को अपने पक्ष में युद्ध करने के लिए माँगता है। दोनों पक्ष की सेना आमने-सामने कुरुक्षेत्र में युद्ध के लिए प्रस्तुत होती है। अर्जुन अपने विपक्ष में पितामह, गुरु, भाव विह्वल होकर युद्ध न करने का विचार करते हैं। कृष्ण उन्हे समझाते हैं कि तुम्हारा धर्म युद्ध करना है। अर्जुन युद्ध के लिए तत्पर होते हैं तथा विजयश्री उन्हे मिलती है।

५. मुक्ति :-

प्रस्तुत एकांकी एक सामाजिक एकांकी है।

मुक्ति में लेखिका ने नारी मन की कोमलता को लोग किस तरह फायदा उठाते हैं इस महत्वपूर्ण मुद्दे को विषय बनाया है। गांव की भोली-भाली जनता का साधु सन्यासी फायदा उठाते हैं। दो साधु गांव के मन्दिर में आते हैं। गांव में घूमते है भजन गाते हैं। गांव की स्त्रियाँ प्रभावित होती हैं। उनकी पूरी आवभगत करती है। अच्छे-अच्छे पकवान बनाकर उन्हे खिलाती है। मौका देखकर वे गाँव की दो लड़कियों को चुराकर शहर में एक प्रभावशाली बदनाम महिला के पास रखते है और वहीं से उन्हे बेचने का प्रयास करते हैं। गांव के एक अध्यापक गणेश भैया को आभास मिल जाता है कि गांव कि दोनों लड़कियाँ इसी मकान में कैद है। वे पुलिस तथा युवा कार्यकर्ताओं की मदद से उन दो मासूम लड़कियों रूपा तथा कृष्णा को उस नर्क भरी जिन्दगी से मुक्ति दिलाते हैं।

६. एक और आवाज १९९१:-

'एक और आवाज' में लेखिका ने गाँव के मजदूर वर्ग की पीड़ा को सही अर्थों में समझा है। बँधुआ मजदूर गोपाल और उसकी पत्नी अपने बच्चे के साथ गांव में रहते हैं। माँ के मरने में डेढ़ हजार रुपये जमींदार से उधार लेने के कारण वे दोनों बँधुआ मजदूर बन जाते हैं। उनकी जमीन भी जमींदार हड़प लेता है। दो रुपये रोज उन्हे मिलता है जिससे उनका घर का खर्च चलाना पड़ता है। जिससे उन्हे रोटी भी नहीं मिलती। गोपाल की पत्नी गोमती शहर जाने का फैसला लेती है। अपने बच्चे को लेकर वह शहर जाती है वहाँ घर-घर में काम करके वह पैसे इकट्ठा करके अपने बच्चे को पढ़ाती है। उसका सपना है वह पैसे इकट्ठे करके जमींदार का पैसा वापस कर देगी। फिर वे सभी चैन की जिन्दगी गुजारेंगे। इसी बीच उसे अपनी एक मालकिन से ज्ञात होता है कि साँगड़ी (बँधुवा मजदूर) की योजना सरकार ने नामंजूर कर दी है। कोई किसी को बँधुवा मजदूर नहीं बना

सकता। गोमती गांव वापस आती है। सभी मजदूरों को इकट्ठा करके वे लोग जमींदार के घर जाते है तथा अपनी बात कहते हैं। जमींदार बहुत नाराज होता है किन्तु उनका बेटा राजा मजदूरों का समर्थन करता है। सभी मजदूर राजा बाबू को आशीर्वाद देते हैं। गोपाल तथा गोमती रामू को वापस लेने जाते हैं क्योंकि राजा बाबू ने गांव में स्कूल खोल दिया है।

सुनो शेफाली (1992) - डॉ. कुसुम कुमार

'सुनो शेफाली' भी अन्य नाटकों की तरह एक अलग प्रकार का कथानक लिए हुए नाटक है। डॉ. कुसुम कुमार के नाटक में अपनी अलग पहचान होती है। 'सुनो शेफाली' की नायिका शेफाली हरिजन जाति की पढ़ी लिखी सुशील सुजान लड़की है जो एक समाज सेवी दीक्षित के बेटे बकुल से प्रेम करती है। शेफाली एक स्वाभिमानी नारी है। शेफाली के साथ-साथ एक और कहानी चलती है। यमुना के घाट पर जहाँ शेफाली और बकुल मिलते हैं वहीं बगल के घाट पर एक ज्योतिषी बैठते हैं, जिससे लोग अपना भविष्य जानने आते हैं। वे अपने को ज्योतिषी नहीं मानते, लोग उनको मनन आचार्य कहते हैं। वे शेफाली के मनन दा हैं। वे शेफाली के विषय में सबकुछ जानते हैं क्योंकि बकुल व शेफाली की सारी बातें सुनते हैं। मनन आचार्य के पास तरह-तरह के लोग आते रहते हैं अपनी परेशानियाँ लेकर।

बकुल चाहता है कि उसकी शादी जल्दी हो जाय। बकुल के पिता भी प्रस्ताव लेकर शेफाली के घर जा चुके हैं। सेफाली के बाबा बीमार है माँ उसे समझात ीहै कि वे लोग इतने बड़े हैं, शादी कर लो राज करोगी। शेफाली बकुल से प्यार करती है, शादी भी करना चाहती है। पर वह इतनी जल्दी नहीं करना चाहती क्योंकि बकुल के पिता राजनीति में आना चाहते हैं। शेफाली को मोहरा बनाना चाहते हैं समाज-सेवा में एक अध्याय और जोड़ना चाहते हैं - हरिजन उद्धार। वे केवल कहते ही नहीं करते भी हैं। शेफाली की माँ शेफाली को कानपुर बूआ के घर जाने को कहती है कि बकुल के पिता ने किरन (शेफाली की छोटी बहन) से भी शादी करने के लिए हाँ कह दिया है। शेफाली बोखला जाती है फिर कानपुर चली जाती है। कानपुर से लौटकरशेफाली मनन दादा से मिलने के लिए आती है। मनन दादा उसे शिवालय ले जाते हैं। शिवालय मे बकुल व किरन मिलते हैं जो नव-विवाहित है। किरन बकुल का हाथ पकड़े हुए है। किरन शेफाली का पैर छूती है। शेपाली की आखें पीड़ा, आक्रोश और ग्लानि से बन्द है। मनन आचार्य आगे बढ़ते हैं तथा पुकारते हैं - सु.... सु.... सुनो शेफाली।''

जादू का कालीन (1993) - मृदुला गर्ग

प्रस्तुत नाटक सामाजिक नाटक है। लेखिका ने कालीन की बुनाई में लगे हुए बच्चों की समस्याओं को गहराई से चित्रित किया है। यह नाटक बाल-मजदूरों की हालत, उनके पुनर्वास की समस्या, प्रशासनिक भ्रष्टाचार और अदूरदर्शिता के अलावा स्वयंसेवी संगठनों से जुड़े लोगों के पाखंड को भी सामने लाता है। बाल मजदूरों की समस्या गरीबी के कारण है। यह एक कानूनी या प्रशासनिक समस्या भर नहीं है। पिछड़े इलाकों में गरीबी ने छोटे-छोटे बच्चों को बाल मजदूर बनने के लिए विवश

कर दिया है । उनकी छोटी-छोटी पतली ऊँगलियाँ तारों से रगड़ खाकर छिल जाती है । धीरे-धीरे ये अंगुलियाँ सख्त हो जाती है तथा अपनी लचक खो देती है । तब वे बच्चे कालीन की बुनाई के लिए बेकार हो जाते हैं ।

उनकी मुक्ति के प्रयास तब तक बेमानी है जब तक विकास की वैकल्पिक नीति न तैयार की जाए । इतनी निर्ममताओं के बावजूद बच्चे सबकुछ भूलकर आपस में खेलते हैं, कहानियाँ सुनते हैं । सपने देखते हैं । प्रस्तुत नाटक में बच्चों के स्वप्नदर्शी स्वभाव उनकी रंगीन कल्पनाओं का चित्रण है ।

अंधेरे से आगे (1993) -मृदुला बिहारी

प्रस्तुत नाट्य संग्रह में पाँच एकांकी संग्रहित हैं । ये सभी नाटक नारी-समस्याओं को लेकर लिखे गए हैं । नारी स्वयं भुक्तभोगी है, इसलिएं उन समस्याओं को ज्यादा अच्छी तरह समझ सकती है । ये समस्याएं पुरुषों की समस्याओं से भिन्न हैं । नारी पुरुष की अपेक्षा ज्यादा संवेदनशील है, इसलिए उन समस्याओं के साथ ज्यादा तादात्म्य स्थापित कर लेती है । इन नाटकों के माध्यम के मृदुला बिहारी ने नारी मन के कोमलतम् अंश तो छूने का प्रयास किया है -

(1) **भँवर-**

प्रस्तुत नाटक में एक ऐसी महिला की कहानी है, जो एक छोटे शहर से आई है । उसका छोटा प्यारा सा परिवार है । पति अच्छी नौकरी करता है । बेटी पास के स्कूल में पढ़ती है । वह अपने घर में बहुत खुश है । रंजना का घर सुव्यवस्थित है । पति व बच्चे के लिए उसके पास पर्याप्त समय है । ऊपरी तड़क-भड़क नहीं हैं, पर जरुरत की सभी वस्तुएं उसके पास हैं । वह अपनी सहेली मीरा से मिलती है, जो पहले से ही दिल्ली में रहती है । नौकरी करती है तथा आधुनिक साजो-सामान है । मीरा से मिलकर रंजना भी सोचती है कि वह नौकरी करे । उसके घर में भी सभी चीज़े हों । नई-नई साड़ियाँ खरीदे ।

रंजना की इस भावना को मीरा उकसाती है । तथा सर्विस दिलाती है । रंजना का पति मना करता है कि तुम्हें क्या आवश्यकता है नौकरी करने की । जो घर की जिम्मेदारियाँ हैं, धीरे-धीरे पूरी हो जाएंगी । एक बार जो इस भँवर में कूद गया निकलना मुश्किल हो जाता है । पर रंजना अपनी बात पर अड़ी रहती है । सर्विस शुरु करने के बाद उसे अपनी बेटी को स्कूल से आने के बाद पड़ोसन के पास छोड़ना पड़ता है । पड़ोसन को अच्छा नहीं लगता । वह बार-बार चीज़े माँगने आती है । रंजना मना भी नहीं कर सकती । उसके नाराज़ होने पर बेटी को कहाँ पर छोड़ कर जाएगी । बेटी के नम्बर्स कम आने लगते हैं । पति को कई बार बिना खाना लिए जाना पड़ता है । कभी-कभी कच्चा पराठा लेकर जाना पड़ता है । रंजना को ऑफिस में देर होने पर डाँट खानी पड़ती है । सुख चैन छिन जाता है । फ्रिज़-कूलर घर में आ जाते हैं । परदे, मनपसन्द साड़ियाँ आ जाती हैं । पर पहले जैसी सुख शान्ति नहीं रह पाती । फिर रंजना निर्णय लेती है कि वह नौकरी छोड़ देगी । इस्तीफा लिखती है । वह प्रसन्न हो जाती है । वह अपनी बात पति को बताती है,पर पति उसके निर्णय को

स्वीकार नहीं कर पाता क्योंकि वह अपने माता-पिता को दो-सौ रुपये नहीं भेज पाएगा। स्कूटर की किश्त भरनी मुश्किल हो जाएगी। रंजना स्वीकार करती है कि तुमने ठीक ही कहा था कि इस भँवर में कूदना आसान है, परन्तु उससे बाहर निकलना मुश्किल है।

(2) तीसरे रास्ते का राही

प्रस्तुत नाटक नारीमन के कोमल पहलू प्यार एवं ममता को लेकर लिखा गया है। अंजना एक सुन्दर, सुशील, बद्धिमान लड़की है। मामा की लड़की की शादी में वह दिल्ली जाती है जहाँ उसे अमित मिलता है। अमित होनहार युवक है। शादी के माहौल में दोनों की पहचान अंतरंगता प्राप्त करती है। दोनों एक दूसरे को चाहने लगते हैं। तरह-तरह के कस्में वादों के बीच अमित का चुनाव सिविल सर्विसेज में हो जाता है। अंजना बहुत खुश होती है। किन्तु उसका सपना अमित के अन्तिम पत्र से टूटता है कि उसके माँ पिताजी लाख मना करने पर भी उसकी शादी अपने पसन्द की लड़की से करना चाह रहे हैं। फिर उसके लिए भी रिश्ता आता है, वह साफ मना कर देती है कि उसे शादी नही करनी है।

धीरे-धीरे समय बीतता है। उसकी छोटी बहन की शादी हो जाती है। भाई विदेश चला जाता है। वह एक स्कूल में शिक्षिका का कार्य करती है वहाँ उसे एक छोटा बच्चा मिलता है, जो हमेशा उदास रहता है। जिसका गृहकार्य भी पूरा नहीं होता तथा जो स्कूल में नाश्ता भी ठीक से नहीं लाता। अंजना उसका ध्यान रखती है, वह अंजना के साथ खुश रहता है। उसके गार्जियन के बार-बार बुलवाने पर उसका पिता टीचर से मिलने आता है। उस बच्चे प्रसून का पिता अमित होता है। अंजना को आश्चर्य होता है। अमित अंजना से मिलकर खुशी व्यक्त करता है पर अंजना इस बात को टीचर गार्जियन जैसे ही लेती है। अब अमित अंजना से बार-बार मिलने की कोशिश करता है। अमित की पत्नी का देहान्त हो चुका है वह अंजना से शादी की इच्छा व्यक्त करता है। उसे प्रसून बीच में व्यवधान लगता है। उसे समझाता है इसे इसके मामा के यहाँ भेज देंगे नहीं तो हॉस्टल में डाल दैंगे।

अंजना अपना निर्णय सुनाती है - मैं प्रसून को गोद लेना चाहती हूँ। तथा वह वकील से बात करके आयी है।

(3) वे पाँच शब्द

माया और उसका पति दोनों अलग-अलग ऑफिस में कार्यरत है। दो बच्चे हैं। पति दूसरी नौकरी के लिए प्रयासरत हैं। एक आदमी जो पति की नौकरी पाने में मदद करने को कहता है उसे माया खाने पर बुलातीहै। वह आदमी इन्टरव्यू के दिन अजीत को ऑफिस में नहीं मिलता। घर के पास एक मोची बैठता है, जो माया से पचास रुपये उधार माँग कर ले जाता है, उसकी घरवाली बीमार है, जो वह वापस करने नहीं आता। माया अन्दर-अन्दर बहुत नाराज़ है। एक चेतू नामके लड़के के साथ मोची के घर जातीहै। मोची ने बताया था ले जा रहा है। माया को लगता है मोची ने बहाना बनाया होगा। चार पाँच दिन में पैसे वापस करने का कह गया और अब तो काम पर भी नहीं आता।

मोची के घर जाने पर देखती है मोची बीमार है उसकी पत्नी का देहान्त हो गया है। उसके घर में पीने को पानी तथा खाने को कुछ नहीं है। मोची की हालत देखकर उसकी बातें सुनकर माया द्रवीभूत हो जाती है। मन का सारा कड़वापन चला जाता है। चेतू को बीस रूपये देकर मोची के लिए ब्रेड और बिस्कीट मँगवाती है। मोची के बाबा कहकर बुलाती है। मोची कुछ पैसे वापस करना चाहता है, तो मना कर देती है। मोची बार-बार दुआ देता है - ''आपको मेरी दुआ लग जाय।''

घर आती है तो अजीत बताते हैं कि उन्हे हडसन एण्ड हडसन में नौकरी मिल गई। माया को बार-बार मोची के शब्द याद आते हैं। पति के बताने पर कहती है कि हम कितने स्वार्थी हो गये हैं अपने सुख-दुःख में अन्धे हुए रहते हैं।

(4) देहरी :-

यह एक प्रतीक नाटक है। दूरदर्शन पर प्रसारित नाटक देहरी नारी मन के अन्तःस्थल को पूरा का पूरा उजागर करने में समर्थ है। नारी की संवेदनशीलता उसकी दृष्टि, उसका व्यवहार, ज्ञान और कर्म का क्षेत्र अलग ही महत्व रखता है। समाजगत व्यवस्था एवं मूल्यों के बीच उनका जीवन, उनके मनोभाव अनेक स्तरों पर पुरुषों की अपेक्षा कहीं अधिक आहत होते हैं। भय, पीड़ा, असुरक्षा, एकाकीपन जैसी अनेक बाधाओं से गुजरने के बाद ही कुछ पाने की, आशा की एक किरण मिल पाती है।

इस नाटक की नायिका हीरा एक ऐसी लड़की है जिसका ब्याह हो चुका है। अपने सुहाग के दर्शन भी न पाने के बाद भी वह विधवा है, तथा उसे ससुराल जाना पड़ता है। पति को जाना ही नहीं, देखा पहचाना ही नहीं ससुराल जाती है। माँ नहीं चाहती पर सामाजिक नियमों के अनुसार उसे भेजती है। मायके में एक पाँच बच्चों के पिता का प्रस्ताव पुनर्विवाह के लिए आता है, किन्तु वह हीरा के पिता के उम्र का है। इसलिए पिता स्वीकार नहीं कर पाते। ससुराल में सभी बहुत अच्छे हैं किन्तु मझली जेठानी को हीरा अच्छी नहीं लगती। हर बात में हीरा के भाग्य को लेकर ही कमेण्ट्स होतेहैं। घर का सब काम करती हैं सभी प्यार करते हैं। इसी बीच बड़ी जिठानी के भाई आते हैं। उनसे बातें नहीं होती फिर भी अन्दर-अन्दर से कुछ अनुभव करती हैं। कुछ ऐसा है जो उसे अच्छा लगता है।

चेतन के मन में भी उसके लिए भावनायें प्रबल होती है, पर वह कुछ कहता नहीं है। वह बातों-बातों में घर में इस बात का जिक्र करता है कि परिस्थितियों को इस तरह स्वीकार कर लेना उचित नहीं है। आदमी को सब कुछ भगवान की इच्छा कह कर स्वीकार नहीं कर लेना चाहिए। मँझली विरोध करती है। उसका कहना है कि कुछ भी सोचने से नहीं होता। विधवा की स्थिति हमारे समाज में ऐसी ही है। चेतन को बड़ी जिठानी के बेटे सोनू के हाथ हीरा की डायरी मिलती है, जिससे उसको हीरा की भावनायें जो चेतन के लिए अंकुरित हो रही है, का पता चलता है। वह अपनी दीदी, जीजाजी को मनाकर अपने पिता के पास भेजता है, जिससे वे लोग पिता को समझायें। फिर वह हीरा से अकेले में मिलता है। हीरा कहती है कि दुनियाँ क्या कहेगी - चेतन समझाता कि अपने

भीतर के सत्य को जीने की हिम्मत है। साहस से ही कुछ भी हासिल होता है। उससे पूछता है कि आप इस देहरी से निकल कर मेरा साथ देंगी।

देहरी शब्द को लेखिका ने प्रतीक रूप में लिया है। इस जीवन, विधवा जीवन से निकल कर रुढ़ियों से निकल कर, पुरातन परम्पराओं को तोड़कर बाहर आने के प्रतीक रूप में लिया गय ाहै। समाज की वर्जनाओं की प्रतीक है। देहरी से बाहर निकलना, नई दुनियाँ, दूसरी शादी को मनसा स्वीकार करना।

(5) अँधेरे से आगे

प्रस्तुत नाटक में लेखिका ने इस सत्य को उद्घाटित करने की कोशिश की है कि जीवन में बहुत सारे अंधेरे आते हैं किन्तु कोशिश करनी चाहिए। उसके आगे भी बहुत कुछ बाकी है करने के लिए पाने के लिए। जो कुछ हो गया, वहीं पर इतिश्री नहीं मान लेना चाहिए।

जानकी की शादी बचपन में हो जाती है। वह गाँव में रहती है। वह अभी तक अपनी ससुराल नहीं गयी है। गांव में दसवीं तक की पढ़ाई कर ली है . पति को बहुत अच्छी नौकरी मिल जाती है। वे लोग उसे अपने घर नहीं ले जाते। उसके पति की किसी लड़की से दोस्ती है, जो दिल्ली में ही रहती है। जानकी के पापा का उसके ससुराल वाले अपमान करते है, इस दुःख से वे इस दुनियाँ को ही त्याग देते हैं। माँ को जानकी की बहुत चिन्ता रहती है। गांव का एक आदमी उस पर बुरी निगाह रखता है। एक बूढ़ी आई से अपना प्रस्ताव भी भिजवाता है। उसकी सहेली उसे राय देती है कि वह अपनी भाई के पास चली जाए। वह भाई के साथ जाती है। वहाँ स्कूल की प्रिंसीपल उससे मिलती है उसे समझाती है, मदद करती है। उनकी सहायता से वह बी.ए. कर लेती है। उसके सोचने समझने का स्तर, ढंग बदल जाता है। वह गाँव लौटकर आती है। सभी गरीब बूढ़े जिनकी सहायता करने वाला कोई नहीं है, सभी को अपने मान कर सेवा करती है। उसका पति उसे लेने के लिए आता है। वह मना कर देती है। वह बोलता है कि क्या दूसरी शादी करनी है। वह कहती है -'मैं अब इतनी कमजोर नहीं कि जीवन जीने के लिए मुझे किसी का सहारा चाहिए। अब यों ही अकेले चलना चाहती हूँ। जब आदमी सेवा का भाव जगा लेता है तो दुनियाँ बदल जाती है। ..... सेवा का नाम भक्ति है.... अब सेवा ही मेरा मार्ग है और मंजिल भी। अब उसे महसूस होता है कि मै अंधेरे से निकल आयी हूँ। मेरे भीतर एक नंन्हा सा दीपक झिलमिला रहा है। उसके आलोक में मुझे अपना मार्ग साफ दिखाई दे रहा है।' नई दृष्टि दी है।

(38) **चोर निकल के भागा** (1995) -डॉ. मृणाल पान्डेय

''चोर निकल के भागा'' जैसा कि शीर्षक से स्पष्ट होता है यह नाटक हास्य एवं व्यंग्य से भरपूर है। अपने चुटीले भाषा-शिल्प और लोकनाट्य की अनेक दृश्य छवियों को उजागर करता हुआ यह नाटक वस्तुतः हमारी कला-संस्कृति के बाजारीकरण से जुड़े सवालों को उठाता है। कला सौन्दर्य, प्रेम और परम्परा जैसे तमाम मूल्यों का सौदा हो रहा है। इस सौदे में राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर कितने ही सफेद पोश शामिल है।

नाटक में लेखिका ने प्रेम और सौंदर्य के प्रतीक 'ताजमहल' की चोरी की अद्वितीय कल्पना की है। लेखिका इस प्रकार मानव मूल्यों पर मँडराते खतरों को इंगित करती है जो मानव समाज की तमाम कलात्मक उपलब्धियों को निरर्थक सिद्ध कर देते हैं। इसके माध्यम से लेखिका ने हमारी सरकार की जागरुकता को भी हमारे सामने रखा है। यह नाटक हास्य और व्यंग्य भरपूर होने के बावजूद हास्यावरण में गम्भीर अर्थों तक जाने की क्षमता लिए हुए है।

हिन्दी रंगमंच पर भी यह नाटक पिछले दिनों विशेष चर्चित रहा।

नाट्य रूपों के आधार पर वर्गीकरण

नारी नाट्य लेखिकाओं ने हिन्दी नाट्य साहित्य को जो रचनाएं दी हैं उनका क्षितिज बहुत व्यापक है। नारी जीवन को या समाज की विभिन्न समस्याओं को रेखांकित करने का प्रयास किया गया है। इसलिए अनायास ही इनके नाटकों में विभिन्न समस्याओं का समावेश हो गया है। नारी जीवन जटिल से जटिलतम् होता चला जा रहा है, क्योंकि पहले नारी का जीवन घर की चारदीवारी तक सीमित था। उसके सामने बाहर की समस्याएं न थीं। संयुक्त परिवार होने के कारण बाहर की समस्याओं को पुरुष वर्ग ही सुलझा लेता था। आज शिक्षा के प्रचार-प्रसार के फलस्वरूप नारी अपने अस्तित्व की पहचान के लिए बाहर निकल पड़ी है। वह नौकरी करती है। आज घर में पति अकेला पुरुष है, वह सारे कामों को अकेले समेट नहीं सकता। फलस्वरुप नारी का कार्यक्षेत्र विस्तृत है। जीवन की इस जटिलताओं को उद्‌घाटित करने के लिए इन लेखिकाओं ने विभिन्न नाट्य रूपों को माध्यम बनाया। अतः यहाँ पर उन विभिन्न नाट्य रूपों पर एक विहंगावलोकन कर लेना वांछनीय ही होगा। इन नाट्यरूपों के आधार पर ही हम आलोच्य कृतियों का सम्यक अनुशीलन कर पाएंगे।

नाट्यरूपों के आधार पर हम इन महिला नाटककारों के नाटकों को निम्न भागों में बाँट सकते हैं।

1. पौराणिक नाटक
2. ऐतिहासिक नाटक
3. सामाजिक नाटक - राजनीतिक
4. प्रतीक नाटक
5. एब्सर्ड नाटक
6. गीति नाट्य
7. एकांकी
8. रेडियो नाटक

(1) पौराणिक नाटक :-

वे नाटक जिनके कथानक पुराणों से लिए गए, वे पौराणिक नाटकों की श्रेणी में आते हैं। हिन्दी नाटकों में पौराणिक मिथक कई रूपों में साकार हुए हैं। कहीं पुरा-कथाएं अपने सनातन आकार में सामने आई हैं, कहीं एकदम परिवर्तित सन्दर्भों के अनुरुप बदलकर अभिव्यक्ति हुई है। सौ साल के अपने पिछले इतिहास में हिन्दी नाटकों में विभिन्न पौराणिक कथावृत्तों का उपयोग परिवेश के मूल्य संघर्षों और आस्थाओं के सचरण के लिए हुआ है। समस्त भारतीय नाट्य परम्परा में पौराणिक कथावृत्तों की परम्परा लगभग उतनी ही प्राचीन है, जितना स्वयं नाटक का इतिहास प्राचीन है।

हिन्दी के पहले के नाटक के रूप में चर्चित विश्वनाथ सिंह रचित 'आनन्द रघुनन्दन नाटक (१८८१)' और भारतेन्दु के पिता गोपालचन्द्र के नाटक नहुष (१८४१) के समय से ही हिन्दी नाटक की रक्तमज्ञा में पौराणिकता का समावेश हो गया है।

''पौराणिक मिथकवृत्तों पर आधारित नाटकों से ही हिन्दी नाटक का इतिहास प्रारम्भ हुआ।[1]। डॉ. नगेन्द्र ने इन नाटकों को 'पौराणिक नैतिक' नाम दिया जिनका आधार पौराणिक है और उद्देश्य नैतिक। इन नाटकों में आज के प्रश्नों का सीधा आरोप नहीं है। इनके प्रश्न व्यक्ति और समाज के

1. हिन्दी नाटक के सौ वर्ष - बालेन्दु शेखर तिवारी एवं रावत (पृ. 2)

वे स्थूल नैतिक प्रश्न हैं, जो अनादिकाल से चले आये हैं। अनीति पर नीति की विजय दिखाना और कुछ अंश में प्राचीन गौरव भावना को जागृत करना इन नाटकों का उद्देश्य है। इस प्रकार के उद्देश्य के पीछे कोई गहरी प्रेरणा नहीं हो सकती। इन नाटकों पर प्रत्यक्ष रूप से संस्कृत नाटकों का प्रभाव है।''[1]

''भारतेन्दु-युगीन पौराणिक नाटकों में पुराणों की प्रचलित कथाओं को ग्रहण किया गया है - जैसे राम और कृष्ण की कथाएँ।[2]''

स्वतंत्रता के बाद पौराणिक नाटकों का विकास एक नवीन क्रम में होने लगा। पौराणिक कथानक आधुनिक युगबोध से प्रभावित होकर चित्रित किए जाने लगे। पात्रों के माध्यम से समाज में व्याप्त विसंगतियों पर प्रकाश डाला जाने लगा। निराश व्यक्ति को आशान्वित करना, कर्तव्य पथ से विचलित न होना सघन परिस्थितियों में भी धैर्य रखना, देश, धर्म, संस्कृति की रक्षा के लिए प्राणों की बाजी लगा देना आदि बातों की शिक्षा इन नाटकों का उद्देश्य है। मनुष्य का नैतिक पतन नहीं होना चाहिए, इत्यादि विषयों पर मनोवैज्ञानिक दृष्टि से इन नाटकों द्वारा महत्वपूर्ण प्रकाश डाला गया है।

''स्वातंत्र्योत्तर काल में भी पौराणिक नाट्कों का कथा स्त्रोत पुराण रामायण व महाभारत ही बना। वस्तु तत्व में जो महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ वह केवल पौराणिक कथावस्तु द्वारा यथार्थ का बोध कराना है।''[3] पौराणिक पात्र अपने कार्यों द्वारा आज की समस्याओं का निराकरण प्रस्तुत करने लगे। उनमे केवल देवत्व ही नहीं रह गया। उनका चित्रण मानवीय परिप्रेक्ष्य में होने लगा।

आज का नाटककार भारतीय पुराणों की कथा एवं पात्र सामग्री का यथाप्रस्तावित आयोजन कर संतुष्ट नहीं हो जाता है। वह राम कृष्ण एवं इतर मिथकीय कथा विस्तारों का पुनर्मूल्यांकन करता है और अभिनव वैज्ञानिक दृष्टि एवं समस्याओं से जोड़कर पौराणिक वृत्त पुनप्रस्तावन करता है। इन नाट्य लेखिकाओं के नाटकों में श्रीमती तारा मिश्रा लिखित 'देवयानी' (1944) डॉ. 'कुसुम कुमार' लिखित 'रावण-लीला' 1981 इस श्रेणी में आते हैं। 'देवयानी' की कथावस्तु पौराणिक है किन्तु लेखिका ने उसे नवीन प्रसंगों की अवतारणा द्वारा सामायिक रूप देकर प्रस्तुत किया है। श्रीमती गिरीश रस्तोगी लिखित 'नहुष' नाटक इस श्रेणी में आते हैं। 'देवयानी' की कथावस्तु पौराणिक है किन्तु लेखिका ने उसे नवीन प्रसंगों की अवतारणा द्वारा सामयिक रूप देकर प्रस्तुत किया है। डॉ. कुसुम कुमार ने रावणलीला को पूर्णतः नये रूप में प्रस्तुत किया है। उन्होने कथा को हास्य और व्यंग्य के माध्यम से प्रस्तुत किया है। डॉ. कुसुम कुमार की रावण-लीला की एक बानगी इन पंक्तियों में भी मौजूद है।

---

1. आधुनिक हिन्दी नाटक - डॉ. नगेन्द्र 1970 (पृ. 33)
2. हिन्दी नाटकों का विकास - शिवनाथ एम. ए. (पृ. 53)
3. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटक - डॉ. राम जन्म शर्मा (पेज 19)

''भाई साहब, ये आपके सभी सभासद आपसे डरते हैं। इसलिए इतनी खुशामदाना बातें करते हैं। मेरी तो आपसे यही प्रार्थना है कि भगवान आपको सद्बुद्धि दे आप सभी गलतफहमियों को गले से टालें और अपने कुल को आनेवाली बरबादी से बचा लें।''[1]

रावणलीला में विभीषण ने ये बातें रावण से कही हैं। ''यह संवाद और यह नाटक 'रावणलीला' सोचने के लिए बाध्य करता है कि हिन्दी नाटकों में अब यथा प्रस्तावित पौराणिक गाथा के लिए कोई जगह नहीं रह गई है।''[2]

डॉ. गिरीश रस्तोगी के नाटक नहुष का कथानक पौराणिक है। डॉ. रस्तोगी ने इसे मैथिलीशरण गुप्त के काव्य नहुष के आधार पर तथा महाभारत एवं अन्य स्त्रोतों का माध्यम लेकर लिखा है। कथानक प्राचीन तथा पौराणिक है लेखिका ने उसे अर्थपूर्ण आयाम दिया है जो आज के जीवन संदर्भो से अनायास ही जुड़ गया है।

२. ऐतिहासिक नाटक :-

भारत का ऐतिहासिक परिवेश समय-समय पर बदलता रहा है इसका कारण भारत में विदेशियों का आना-जाना है। राजनीतिक दशा के परिवर्तन का प्रभाव ऐतिहासिक दशा पर पड़ा। ऐतिहासिक नाटक इतिहास की पुनरावृत्ति हैं, जिसमें कल्पना का समन्वय रहता है। मुख्यरूप से नाटककार अतीत को वर्तमान संदर्भ में प्रस्तुत करता है। इस कोटि के नाटक काल्पनिक होते हुए भी अपने ऐतिहासिक रूप को बनाए रखते हैं। कुछ की तिथियाँ प्रामाणिक होती हैं कुछ के पात्र, कुछ की घटनाएं। कुछ में तो कुछ भी प्रामाणिक नहीं होता। ऐतिहासिक नाटक पूर्णरूप से प्रामाणिक हों, तो वे केवल कोरी इतिहास की पुस्तक बन जाय।

अतीत की पुनरावृत्ति ऐतिहासिक नाटकों के माध्यम से उनको जीवित रखने के लिए की जाती हैं।

''भारतेन्दु विरचित 'नीलदेवी 1881 हिन्दी का प्रथम ऐतिहासिक नाटक है। इस काल के नाटकों को ध्यान से देखने पर ज्ञात होता है कि भारतीय गौरव के माध्यम से देश-हित की भावना को प्रचारित करने एवं समसामायिक समस्याओं के समाधान हेतु इतिहास को ग्रहीत किया गया।''[3] भारतीय चरित्र के उन्ही घटनाओं को ग्रहीत किया गया जो त्याग बलिदान और राष्ट्रीय हित-चिन्तन की दृष्टि से महनीय है। ''यथार्थ को लेकर चलने वाले 'प्रसाद' की दृष्टि सदैव आदर्श पर भी थी। देश में राष्ट्रीय आन्दोलन पनप रहा था। व्यापक राष्ट्रीय और सांस्कृतिक चेतना की लहर जन-जन में फैल रही थी। किन्तु साथ ही पाश्चात्य संस्कृति और साहित्य से भारतीय जनता प्रभावित होतीजा रही थी। इतिहास संबंधी नवीन खोज करके उनको कल्पना के मिश्रण से आकर्षक और प्रभावशाली

---

1. डॉ. कुसुम कुमार - रावणलीला पृ. 14
2. हिन्दी नाटक के सौ वर्ष - डॉ. बालेन्दुशेखर तिवारी एवं रावत (पृ. 44)
3. हिन्दी नाटकों का विकास शिवनाथ एम.ए. (पृ. 38)

बनाकर प्रथम बार प्रसाद ने हिन्दी नाटकों में प्रस्तुत किया।''[1]

अपने नाटकों में प्राचीन इतिहास और संस्कृति को लेकर 'श्री प्रसाद ने वर्तमान काल में अपेक्षित राष्ट्रीयता' और देशभक्ति के प्रति लोगों को आकृष्ट किया। उन्होने भारतीय संस्कृति के आदर्श रूप को चित्रित करने का पूरा प्रयत्न किया है।''[2] श्री जयशंकर प्रसाद ने अपने नाटक विशाख की भूमिका में इस प्रकार लिखा है - ''मेरी इच्छा भारतीय इतिहास के अप्रकाशित अंश में से उन प्रकांड घटनाओं का दिग्दर्शन कराने की है, जिन्होने हमारी वर्तमान स्थिति को बनाने का बहुत कुछ प्रयत्न किया है और जिनपर कि वर्तमान साहित्यकारों की दृष्टि कम पड़ती है।''[3] ऐतिहासिक नाटकों द्वारा देश के आत्म गौरव को पुनः जागृत करने का महत्वपूर्ण उद्देश्य सामने था। इतिहास सम्बन्धी नवीन खोजें करके उनके कल्पना के मिश्रण से आकर्षक और प्रभावशाली बनाकर प्रथमबार प्रसादने हिन्दी नाटकों में प्रस्तुत किया। इतिहास के बीच ही उन्होंने नाटकों में प्रेम और सौन्दर्य के मधुरतम चित्र खींचे। ''प्रसादजी ने ऐतिहासिक पुरुष पात्रों के साथ ही साथ काल्पनिक स्त्री पात्रों का सृजन करके नाटकों को सरस बना दिया।''[4] इसका उदाहरण 'स्कन्दगुप्त' नामक नाटक में स्कन्दगुप्त की प्रेयसी 'देवसेना' है। इस युग में पौराणिक नाटकों की रचना भी ऐतिहासिक पद्धति पर की गई है, यद्यपि उनके कथानक पुराणों से लिए गये हैं।

इन नाटकों का उद्देश्य देश में चारित्रिक उत्थान और गौरव को बनाए रखना है। इन नाटकों में नारी को श्रद्धा और विश्वास की दृष्टि से देखा गया है, उसके वीर रूप को प्रस्तुत किया गया है। साथ ही गुरु-शिष्य माता-पिता, राजा-प्रजा और प्रेमी-प्रेमिका के दायित्व पर प्रकाश डाला गया है।

नारी नाट्य लेखिकाओंने भी ऐतिहासिक नाटकों को अपना विषय बनाया है। कंचनलता सब्बरवाल के नाटक आदित्यसेन भीगी पलकें, अमिया अनन्ता, लक्ष्मीबाई, डॉ. सरोज बिसारिया नाटक 'नगरेषु कान्ची', 'अकथ कहानी प्रेम की के इसी श्रेणी में आते हैं। कंचनलता सब्बरवाल के नाटक ऐतिहासिक पुष्टिभूमि से हैं। डॉ. बिसारिया के नाटक नगरेषु काञ्ची तथा अकथ कहानी प्रेम की' की कथा ऐतिहासिक है पर दृश्य काल्पनिक है। नगरेषु काञ्ची को लेखिका ने शिवकामी के चरित्र को उभारा है। भारवि की उक्ति - पुष्णेषु जाती - नगरेषु काँची'' को महाराजा महेन्द्र के मुख से कहवाया है। 'अकथ कहानी प्रेम की' में लेखिका ने कल्पना का पुट देकर अपनी स्त्री पात्र काम कन्दला के चरित्र को उभारा है। कामकन्दला का चरित्र उदात्त प्रेम का प्रतीक है। कुंथा जैन का नाटक 'बीतराग' भी इसी श्रेणी में आता है। इसमें लेखिका ने महावीर भगवान के जन्म से सम्बन्धित घटना को अपने कथ्य के लिए चुना है।

---

1. हिन्दी नाटक के सौ वर्ष - बालेन्दु शेखर तिवारी - डॉ. आदित्य प्रचण्डिया दीति (पृ. 56)
2. विशाख नाटक - जयशंकर प्रसाद, प्रथम संस्करण प्रथम अंक, भगीरथ, चतुर्थ दृश्य (पृ. 38), मिश्र - हिन्दी नाटक उद्भव और विकास
3. हिन्दी नाटक-सिद्धान्त और विवेचन-डॉ. गिरीश रस्तोगी, (पृ. 84 - 1967)
4. डॉ. दशरथ ओझा - हिन्दी नाटके - उद्भव और विकास (पृ. 259)

प्रतीक-नाटक

प्रतीक नाटकों की परम्परा हिन्दी नाटकों में बहुत पुरानी है। इसके पुराने रुप को दृष्टि में रखकर प्रतीक नाटकों के अनेक परिभाषाएँ दी गई हैं। डॉ. दशरथ ओझा ने प्रतीक विषय में लिखा है - ''इस शैली की प्रथम विशेषता मानवमन के सूक्ष्म तत्वों को पात्रों के रूप में प्रदर्शित करके अध्यात्म के दुर्जय रहस्यों को बोधगम्य बनाने के प्रयास में झलकती है।''[1] इससे प्रतीत होता है कि पुरानी शैली के प्रतीक नाटक विशिष्ट रूप में आध्यात्मिक तत्वों के सहज विश्लेषण के लिए ही लिखे जाते थे। डॉ. मोहन अवस्थी ने प्रतीक - नाटक के विषय में अपना मत व्यक्त किया है - ''प्रतीक-नाटक वे है जिनके पात्र विशेष भाव या विचार के पर्याय होते हैं।''[2]

आधुनिक प्रतीक नाटकों में मूल वस्तु की धारणा सूक्ष्म होती है, उसके लिए प्रयुक्त 'प्रतीक' सम्पूर्ण रूप में संकेत प्रदान करते हैं या वस्तु-प्रवाह के साथ ही साथ सूक्ष्म संकेत सहज रूप में देने चलते हैं। आधुनिक प्रतीक-नाटकों को रमेश गौतम ने आधुनिक ढंग से परिभाषित किया है - ''इन प्रतीक-नाटकों में नाटककार

पात्रों एवं कथा द्वारा किसी का प्रतिनिधित्व करता है, तथा पात्रो एवं प्रतीक कथा द्वारा नाटककार जिसका बोध करता है वही प्रमुख है, पात्र एवं प्रतीक कथा साधनमात्र।''[3]

पाश्चात्य विद्वान लंगर का मत है - प्रतीक अनिवार्य रुप से एक ऐसा संकेत है जो किसी अर्थ का द्योतन करे।[4]

डेविस डन्चेज ने प्रतीक के सम्बन्ध में अपना विचार व्यक्त करते हुए लिखा है कि - सामान्यतः प्रतीक से तात्पर्य एक अभिव्यंजना से है, जो कहने की अपेक्षा व्यंजनाश्रित अधिक होती है।[5] डॉ. राज भगीरथ मिश्र ने अपने काव्यशास्त्र में प्रतीक शब्द को परिभाषित करते हुए लिखा है - ''अपने रूप, गुण कार्य या विशेषताओं के सादृश्य एवं प्रत्यक्षता के कारण जब कोई वस्तु या कार्य किसी अप्रस्तुत वस्तु भाव, विचार क्रिया-कलाप, देश जाति संस्कृति का प्रतिनिधित्व करता हुआ प्रकट किया जाता है, तब वह प्रतीक कहलाता है।''[6]

डॉ. लक्ष्मी नारायण लाल ने अपने नाटक 'मादा कैक्टस' की भूमिका प्रतीक नाटक के विषय में लिखा है ''प्रतीक नाटक की प्रकृत भाषा है और नाटक में प्रतीक का धर्म केवल यह है कि वह सम्वेद्य बात को शब्दों की अपेक्षा कहीं अधिक सीधे और शक्तिशाली ढंग तथा सुन्दर रूप से प्रस्तुत कर सकता है।''[7]

---

1. डॉ. दशरथ ओझा - हिन्दी नाटक उद्‌भव और विकास 128
2. डॉ. मोहन अवस्थी - हिन्दी साहित्य का अद्यतन इतिहास पेज 113
3. रमेश गौतम - सातवें दशक के प्रतीक नाटक-पृष्ठ 172
4. डॉ. बालेन्दु शेखर तिवारी-हिन्दी नाटक के सौ वर्ष - 79
5. डॉ. बालेन्दु शेखर तिवारी-हिन्दी नाटक के सौ वर्ष - 79
6. डॉ. बालेन्दु शेखर तिवारी-हिन्दी नाटक के सौ वर्ष - 79
7. मादा कैक्टस - डॉ. लक्ष्मी नारायण लाल, पेज 268

पश्चिम के यथार्थवादी समस्या नाटकों की प्रतीक या संकेतात्मक शैली के अनुकरण पर हिन्दी के भी इस ढंग के नाटकों की रचना होने लगी। जीवन की यथार्थवादी समस्याओं के चित्रित करने के लिए इन नाटककारों ने संकेतात्मक प्रतीकों का प्रयोग किया है। इस शैली के नाटकों में जीवन की कठिन वास्तविकताओं

हिन्दी के प्रतीक नाटक - डॉ. रमेश गौतम के बीच उनकी गम्भीरता और सूक्ष्मता दिखाने के लिए संकेतों और प्रतीकों का सफल प्रयोग हुआ है।

प्रतीक का अर्थ है - प्रतिनिधि, अर्थात प्रतीक में प्रतिनिधित्व करने की क्षमता होती है। ''प्रतीक स्वतः ही प्रतीक है, गागर में सागर भरने का। प्रति+इक=प्रतीक। अपनी ओर न झुका हुआ - जब किसी वस्तु का कोई एक भाग पहले गोचर होता है, फिर आगे उस वस्तु का ज्ञान हो तब उस भाग को प्रतीक कहते हैं।''[1]

हिन्दी में प्रतीक नाटक की परम्परा संस्कृत साहित्य से चली आ रही है। पुराणों एवं महाभारत की अनेक कथाओं में प्रतीकों के माध्यम से गूढ़ जीवन-दर्शन की अभिव्यक्ति हुई है। आधुनिक प्रतीक नाटक एक सूक्ष्म विचार को स्थूल रूप में मानवीय प्रवृत्तियों और लौकिक पात्रों के माध्यम से अभिव्यक्त करते हैं। जहाँ नाटककार अपनी व्यंजना को प्रभावशाली ढंग से व्यक्त नहीं कर पाता वहाँ प्रतीक का सहारा लेता है। डॉ. लक्ष्मी नारायण लाल ने मादा कैक्टस में प्रतीक को परिभाषित करते हुए कहा है - ''नाटक में प्रतीक का धर्म केवल इतना है कि वह संवेद्य बात के तथ्य को, शब्दों की अपेक्षा कहीं अधिक सीधे और शक्तिशाली ढंग तथा सुन्दर रूप से प्रस्तुत कर सकता है।''[2] इस प्रतीक नाटकों को डॉ. दशरथ ओझा, डॉ. सावित्री स्वरूप, तथा डॉ. रमेश गौतम ने अनेक भागों में विभाजित किया है जैसे - सर्वांश प्रतीक, अंश प्रतीक, गौण प्रतीक, प्रवृत्ति मूलक प्रतीक नाटक, अन्योक्ति मूलक, आंशिक प्रतीक, समग्र रूपात्मक प्रतीक नाटक, सांकेतिक प्रतिनिधिक, समानान्तर प्रतीक, एब्सर्ड प्रतीक आदि।

ऐतिहासिक और पौराणिक प्रतीक नाटक भी लिखे गये। वस्तुतः जीवन के परिवर्तित मूल्यों को व्यंजित करने के लिए नये नाटककारों ने अतीत का आश्रय लिया। ''आधुनिक जीवन की संवेदना को प्रामाणिक तथा विश्वसनीय बनाने के लिए इन नाटकों में अतीत को एक खोल की तरह ओढ़ा गया। जिसे सृजन के सन्दर्भ में नाटककार चित्रित करना चाहता है। ऐतिहासिक पात्रों को नाट्यकारों ने उनके उसी रूप में नहीं स्वीकारा है बल्कि वे उनके लिए सृजनात्मक शक्तियों के प्रतीक बनकर आए हैं। इसलिए इन नाटकों में इतिहास तत्व व उसकी प्रामाणिकता की खोज करना अनावश्यक ही है।

---

1. हिन्दी के प्रतीक नाटक - डॉ. रमेश गौतम (पृ. 21)
2. मादा कैक्टस भूमिका - डॉ. लक्ष्मी नारायण लाल (पृ. 8)

हिन्दी के प्रतीक – नाटक जीवन की वास्तविकता को अधिक सशक्त ढंग से कहने में अधिक सफल रहे हैं। हिन्दी नाट्य रंग-आन्दोलन को भी इनसे काफी बल मिला है। नये प्रयोगों की दिशा में प्रतीक-नाटक अग्रसर हैं। उनकी प्रयोगशील उपलब्धियों की सम्भावनाएँ सम्प्रति बढ़ती ही जा रही हैं।

नारी नाट्य लेखिकाओं ने भी प्रतीक नाटक लिखकर हिन्दी नाट्य साहित्य को अभिवृद्धि किया। मनू भंडारी का नाटक 'बिना दीवारों के घर' शांति मेहरोत्रा का 'ठहरा हुआ पानी', मृणाल पान्डेय का आदमी जो मछुआरा नहीं था,'त्रिपुरारी शर्मा का 'रेशमी रुमाल' प्रतीक नाटकों की श्रेणी में आते हैं।

मनू भंडारी का 'बिना दिवारों का घर' में दीवार प्रतीक रूप में हैं। घर के आदर्श को सुरक्षित रखने के लिए मजबूत दीवार का होना अत्यन्त आवश्यक है। जिन घरों में दीवार ही नहीं उनके टूटने में कितनी देर लगती है। प्रस्तुत नाटक प्रतिनिधि प्रतीक नाटक है। शोभा व अजीत एक वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं।

शांति मेहरोत्रा का 'ठहरा हुआ पानी' प्रतीक नाटक है। ठहरा हुआ पानी गतिहीनता का प्रतीक है। जिस पानी में गति नहीं है, बहाव नहीं है वह बदबू पैदा करता है, सड़न पैदा करता है। प्रस्तुत नाटक भी सड़ी गली मान्यताओं पर चोट करता है जिसके कारण पूरा परिवार त्रस्त है।

मृणाल पान्डेय का आदमी जो मछुआरा नहीं था भी प्रतिनिधि प्रतीक नाटक है। नन्द दुलारे अपने पूरे वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है। नन्द दुलारे जो सीधा-साधा इन्सान है वह विशाल समाज रूपी समुद्र से घिर जाता है फिर बाहर नहीं निकल पाता क्योंकि वह मछुआरा नहीं था।

त्रिपुरारी शर्मा का 'रेशमी रुमाल' नारीमन के मनोभावों को व्यक्त करने में पूर्णतः सफल है। रेशमी रुमाल जो तह किया हुआ, बहुत सुन्दर है जब हवा के झोंकें से खुलकर फड़फड़ाने लगता है, तो सारी सलवटें साफ दिखाई पड़ने लगती हैं। उसी प्रकार नारी मन अपनी थकान इच्छाओं प्रतिक्रियाओं को समेट कर वह कोना सामने रखती है जो सुन्दर है। ऐसे में कभी हवा का कोई झोंका जब उसे फड़फड़ाने के लिए बाध्य करता है तो सारे पहरे और दायरे अर्थहीन हो जाते हैं।

एब्सर्ड नाटक – असंगत नाटक

आदमी के भीतर की दुनियाँ कुछ और होती है तथा बाहर की दुनिया कुछ और। सामान्यतः वह भीतर की दुनिया और बाहर की दुनिया के बीच संवाद (तालमेल) स्थापित नहीं कर पाता। अकसर बाहर की दुनिया से चोंटे खाकर भीतर की दुनिया में मन बहलाता है घाव सहलाता है। इस तरह आदमी जीवन को पूरी तरह जी और भोग नहीं पाता क्योंकि वह अक्सर बाहर की दुनिया से विमुख या कटा हुआ होता है। वह जीवन जीने और भोगने की कल्पना भर कर चुक जाया करता है। जीवन के इस यथार्थ को भी जीवन की एक गम्भीर विसंगति माना जा सकता है। असंगत नाट्य चिंतको का आत्मसाक्षात्कार केवल वर्तमान का ही साक्ष्य लेना है जबकि उसकी जड़ आदिम जीवन में ही जमने लगी थी। द्वितीय महायुद्ध के बाद मानवीय जीवन और मूल्यों का विघटन होने लगा था। ईश्वर

के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण निष्ठुर अमानवीय कार्यों ने मानव जीवन के व्यर्थ होने का बोध कराया। मानव अपने को असहाय समझने लगा । इन्हीं स्थितियों में एब्सर्ड नाट्य रचना का प्रारम्भ हुआ। डॉ. केदार नाथ सिंह असंगत नाटक को प्रतीक नाटक का ही एक भाग मानते हैं उनका कहना है- ''यह प्रतीक-नाटकों का ही एक विकसित नाट्य-शिल्प है । इस प्रकार के नाटकों की वस्तु, भाषा और अभिव्यंजना का आशिल्पन बिल्कुल उन्मुक्त और नवीन है ।''[१]

असंगत नाटक एक नाट्यशैली ही नहीं बल्कि एक विशिष्ट मानसिकता की अभिव्यक्ति का माध्यम है। यह मानसिकता स्वच्छन्दतावाद की उदात्त कल्पना तथा आदर्शवाद से युक्त मानवीय चेतना से विपरीत प्रकार की किन्तु उतनी ही गहरी अनास्थापरक चेतना है । इस भरे पूरे विश्व में कभी-कभी व्यक्ति अकेलेपन की तीखी अनुभूति के साथ सब कुछ बेमानी होने की कुरेदने वाली वृत्ति से ग्रस्त होता है । इसमें व्यक्ति की उस आस्था का क्षय होता है जो संकल्पशक्ति देकर प्रतिकूल परिस्थितियों से संघर्ष में प्रवृत्त करती है। एब्सर्ड (असंगत) नाटक के कलाकार संघर्ष-शक्ति विहीन असहाय व्यक्ति हैं जो इस भय से आक्रांत हैं उसके आस-पास विरोधी तत्व उनको घेरे हुए हैं। जब कलाकार ने इस भय को तोड़ा है वह सोदेश्य रचना में संलग्न हुआ है ।

असंगत नाटक वास्तव में ''असंगतियों या विसंगतियों को चित्रित करने वाली एक विशिष्ट नाट्य शैली है।''[२] आधुनिक जीवन में अनिवार्यतः पैदा होने वाली विध्यताएँ, विडम्बनाएँ और इससे सम्बन्ध मानवीयमन असहाय स्थितियाँ आदि का नाट्यात्मक चित्रण इन कृतियों में होने लगा है ।

''असंगत नाटक व्यक्ति के भीतरी यथार्थ को अधिक व्यक्त करते हैं। इसमें परम्परागत मूल्यों के प्रति आस्था नहीं है । जीवन की विद्रुपता और विकृतियों को ये अपना आधार बनाते हैं ।''[३]

असंगत नाट्य लेखन की अनुभूति की ईमानदारी ने भारतीय नाट्प्रकारों के मर्म को हुआ है । इसलिए कुछेक नाटककारों ने असंगत नाटक लिखे भी । लेकिन यहाँ की मानसिकता असंगत नाट्य दर्शन के अनुकूल नहीं हैं, इसलिए दर्शकों की ओर से यहाँ इसे विशेष प्रोत्साहन प्राप्त नहीं हो सका ।

सन् 1930-1935 के बीच भूनेश्वर द्वारा लिखे गये 'ताँबे के कीड़े' 'ऊसर' जैसे एकांकी हिन्दी के प्रथम असंगत नाटक माने जा सकते हैं क्योंकि इसके पूर्व इस प्रकृति के हिन्दी नाटक नहीं मिलते। इसके बाद लम्बी अवधि तक असंगत नाटक लिखे भी नहीं गये। इस श्रृंखला का प्रारम्भ स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटक में 1960 के बाद होता है । यद्यपि इन नाटकों का प्रणयन कम ही हुआ ।

नाटकों के क्षेत्र में 1940 के बाद असंगत कहे जाने वाले नाटक नाट्य रचना के क्षेत्र में महत्व पूर्ण रूप से आए। असंगत नाटकों में जीवन की विसंगतियों को मनमाने ढंग से प्रस्तुत किया गया है। वस्तु एवं शिल्प दोनों दृष्टियों से परिवर्तन आया। इन नाटकों की दृष्टि मे भी सबसर्डिटी ही है।

१. हिन्दी के प्रतीक नाटक और रंगमंच 1985 प्रथम संस्करण- डॉ. केदार नाथ सिंह (पृ. 40)

२. हिन्दी के नए नाट्य रूप - डॉ. प्रमधनाथ मिश्र (पृ. 100)

३. नाट्य संवाद (मध्य प्रदेश-साहित्य परिषद) (पृ. 51)

"एब्सर्ड नाटक एवं मंच के विषय में डॉ. राम सेवक सिंह का विचार इस प्रकार हैं -''एब्सर्ड मंच उस विश्वव्यापी स्वतः स्फूर्ति आंदोलन का एक अंग है, जीवन की अपरिहार्य विडम्बनाों तथा उसकी निरर्थकता से क्षुब्द मनुष्य की असहाय स्थिति का चित्रण ही प्रधान उद्देश्य है ।''[1]

''हिन्दी के असंगत नाट्य लेखकों में भूनेश्वर के बाद विपिन कुमार अग्रवाल, शम्भूनाथ, लक्ष्मीकांत वर्मा, राजकमल चौधरी, मुद्रा राक्षस, लक्ष्मीनारायण लाल, सुदर्शन चोपड़ा मणिमधुकर डॉ. सत्यव्रत सिन्हा का नाम उल्लेखनीय है ।''[2]

महिला नाट्य लेखिकाओं में 'मृदुला गर्ग' एवं 'शान्ति मेहरोत्रा' का नाम उल्लेखनीय है ।

'मृदुला गर्ग' का नाटक 'एक और अजनबी' प्रसिद्ध असंगत नाटक है । प्रस्तुत नाटक को 1977 में आकाशवाणी पुरस्कार योजना के अन्तर्गत प्रथम पुरस्कार मिल चुका है । एक और अजनबी स्त्री पुरुष के सम्बन्धों पर लिखा गया एक मनोरंजन नाटक है । प्रेम को लेकर नारी मन के अन्तर्द्वन्द, पति-पत्नी के सम्बन्धों की मर्यादा का अतिक्रमण इस नाटक का मूल कथ्य है ।

शान्ति मेहरोत्रा का नाटक 'एक और दिन' बहुचर्चित व सुप्रसिद्ध लघु नाटक या एकांकी है। प्रस्तुत एकांकी में लेखिका ने पारिवारिक सम्बन्धों के ठंडेपन को इंगित किया है । यह नाटक सामाजिक विसंगतियों पर एक प्रश्नचिन्ह है ।

5. गीति-नाट्य

''साधारण दृष्टि से गीतिनाट्य का अभिप्राय उस नाटक से है जो गद्य में न होकर पद्यबद्ध हो । किन्तु केवल पद्यबद्ध होने से ही उसे गीतिनाट्य नहीं कहा जा सकता । यह एक ऐसी विधा है जिसमें गीति तत्व होने के साथ-साथ भावना की प्रमुखता होती है ।''[3]इसलिए गीतिनाट्य में कार्य की अपेक्षा भाव का अधिक महत्व है । गीति नाट्य बाह्य संघर्षों को नहीं प्रस्तुत करता बल्कि, अंतः संघर्षों को प्रस्तुत करता है । हृदय में होने वाली दो विरोधी भावनाओं की द्वन्दात्मक स्थिति की तीव्रता का प्राधान्य इसमें मिलेगा । यदि बाध्य संघर्ष दिखाये भी जाते हैं, तो वह आन्तरिक संघर्ष को ही तीव्र बनाने के लिए । इस दृष्टि से गीतिनाट्य साधारण दृश्य काव्य से भिन्न है । गीतिनाट्य का उद्देश्य कविता और नाटक के समन्वित रूपं से सम्पूर्ण होता है । चूंकि गीतिनाट्य में अन्तर्जगत का चित्रण होता है, भावना की प्रधानता होती है अतः उन्हे रूपान्वित करने के लिए उसका काव्यात्मक होना आवश्यक है क्योंकि लय, गति और उतार चढ़ाव का सौन्दर्य काव्य में ही अधिक सहज है । डॉ. नगेन्द्र ने गीतिनाट्य नाट्यत्व और स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए लिखा है ''गीतिनाट्य रूपक का ही एक भेद है जिसका प्राण तत्व है - भावना अथवा मन का संघर्ष और माध्यम है - कविता ''[4] गीतिनाट्य में काव्य तत्व का प्रयोग सहज स्फुरण के रूप में अनुभूति में तीव्रता लाने के लिए होता है न कि काव्य

---

1. डॉ. राम सेवक सिंह - एवसर्ड नाट्य परम्परा पृ. 11, रामजन्म शर्मा - 309
2. रंग विवेक - नर नारायण राय पृ. 92, प्रथम संस्करण 18
3. डॉ. गिरीश रस्तोगी - हिन्दी नाटक सिद्धान्त और विवेचन पृ.146, प्रथम संस्करण 1967
4. आधुनिक हिन्दी नाटक, डा. नगेन्द्र पृ. 95

के सौन्दर्य के प्रदर्शन के लिए। कविता नाट्य-तत्व से नियमित रहती है। रूपक भेद होने के कारण गीतिनाट्य में नाट्य तत्व प्रमुख रहते हैं। कविता नाट्य के प्रस्तुतीकरण का माध्यम है उसकी स्वतंत्र सत्ता नहीं है। शुद्ध काव्यशैली से गीतिनाट्य की काव्य शैली भिन्न होती है। इसकी काव्य में गद्य जैसी स्वाभाविकता, प्रवाह और चारुता को उसी प्रकार लाना पड़ता है जिस प्रकार नाटक के गद्य में काव्य के समान चारुता, आकर्षण, व्यंग्य और वक्रोक्ति का प्रयोग करना पड़ता है गीतिनाट्यकारों को कविता में बिम्बों, प्रतीकों, लय और टोन का जो कि नयी कविता के महत्वपूर्ण अंग हैं, और जिनके द्वारा जीवन के क्रूर यथार्थ को व्यक्त किया जा सकता है - सहारा लेना पड़ता है। गीतिनाट्य रेडियो के लिए भी लिखे गये हैं अतः उनमें वातावरण सृष्टि के लिए ध्वनि चित्रों का भी उपयोग किया जाता है। काव्यगत लय 'टोन' बिम्बयोजना और प्रतीक विधान ऐसे तत्व हैं, जो गीतिनाट्य को अधिक समृद्ध बनाते है और गद्यनाटक के 'टेक्स्चर' से उसकी भिन्नता को प्रकट करते हैं।

गीति-नाट्य का गीति-तत्व संगीत तत्व से मिलकर सम्पूर्ण होता है। गीति नाट्य में वाद्य नाटक की अपेक्षा अधिक संगीत होता है। उदाहरणार्थ नृत्य वाद्य-संगीत कथा-गायन, कोरस उद्घोषगान तथा बीच-बीच में पात्रों द्वारा गाए गए गीत। कथा-गायन इसमें बहुत ही महत्वपूर्ण है क्योंकि वह कथा के सूत्रों को एक दूसरे से संयुक्त करता है, कथा को आगे बढ़ाता है, मंच पर अघटनीय घटनाों की सूचना देता है। डॉ. धर्मवीर भारती ने अंधायुग के निर्देश में कहा है कि 'कथानक की जो घटनायें मंच पर नहीं दिखाई जाती है उनकी सूचना देने, वातावरण की मार्मिकता को और गहन बनाने या कहीं-कहीं उसके प्रतीकात्मक अर्थों को भी स्पष्ट करने के लिए यह कथा-गायन की पद्धति अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हुई है।''[2] गीति तत्व इस विधा को इतनी ऊँचाई पर पहुचा देता है कि डॉ. जोन्स ने गीति नाट्य को नाटकों की श्रेष्ठतम कोटि स्वीकार किया है। किन्तु कविता का स्वतंत्र न होकर नाट्य-तत्वों से नियंत्रित रहना भी आवश्यक है। वहाँ नाटक और काव्य अलग-अलग होकर नहीं वरन् एक दूसरे में पूर्णतः समाहित होकर सौन्दर्य सृष्टि करते हैं।

गीति नाट्य का कथानक पौराणिक ऐतिहासिक और समसामयिक जीवन से सम्बद्ध हो सकता है। भाव-प्रधान विधा होने के कारण धार्मिक-पौराणिक तथा अतीत गौरव के कथा प्रसंगों को ही गीति नाट्य के लिए महत्वपूर्ण माना गया।

शिल्प के धरातल पर अनेक नये-नये प्रयोग हो रहे हैं। कुछ विशेष व्यक्तियों के चरित्र पर नाटक लिखे गये। इसी क्रम में शीला भाटिया ने अपना संगीत नाटक 'दर्द आयेगा दबे पाँव' अग्रसर किया। यह एक प्रयोगशील नाटक है। फैज अहमद फैज के जीवन, व्यक्तित्व, उनकी शायरी पर आधारित है। लेखिका ने उनकी नज्मों को चुनकर वास्तविक व काल्पनिक परिस्थितियों का सहारा लेकर इस संगीत नाटक का ताना-बाना बुना है।

---

१. डॉ. गिरीश रस्तोगी-हिन्दी नाटक सिद्धान्त और विवेचन पृ. १४७

२. डॉ. गिरीश रस्तोगी पृ. १४९

नृत्य नाट्य :-

''नृत्य मुद्राओं की भाषा में भाव और नाट्य का सम्प्रेषन करनेवाली नृत्य नाट्य शैली का आविर्भाव और एक सांस्कृतिक एवं कलापूर्ण माध्यम के रूप में इसकी स्वीकृति भी स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटक और रंगमंच की भी उपलब्धि कही जायेगी। हिन्दी नृत्यनाटकों का प्रयोग और प्रदर्शन स्वतन्त्र भारत में ही संभव हो सका। हिन्दी नृत्यनाट्य का आविर्भाव उदयशंकर के साथ हुआ। 1930 से 1945 तक नाट्य और विभिन्न नृत्य शैलियों की शिक्षा प्राप्त कर अभ्यास करते हुए उन्होने जिन नृत्य-मुद्राओं की भाषा का निर्माण किया वह स्वतंत्र भारत में शांतिवर्धन, गुलवर्धन एवं अन्य लोगों की परम्परा में अभिव्यक्त हुआ। आज़ादी के विगत तीन दशकों में इस शैली की एक स्पष्ट परम्परा बनी और इसमें पर्याप्त संस्कार हुए हैं। अब यह पूर्णतः सांस्कृतिक और कलात्मक शैली के रूप में ढल चुका है।

'नृत्य नाटकों का आलेख दुर्लभ है' क्योंकि इनका प्रकाशन नहीं होता। वस्तुतः आलेख यहाँ महत्वपूर्ण होता ही नहीं। अस्तु स्वतंत्र भारत में 'संगीत' मासिक पत्रिका के 'नृत्य नाट्य विशेषांक' जनवरी 78 में तेरह नृत्यनाट्य प्रकाशित हैं। ''श्रीमती कुंथाजेंन का नृत्यनाट्य 'दिव्यध्वनि छंद' भी उनके संग्रह वर्धमान रुपायन में संकलित है। अभिनव भरत का नृत्यनाट्य सिद्धार्थ भी उल्लेखनीय है क्योंकि भारत में यह प्रथम प्रस्तुति थी और संभवतः प्रथम प्रकाशन भी। सितम्बर 1947 में बम्बई की एक्सेलियर थियेटर में इसके प्रथम प्रयोग से नृत्यनाट्य परम्परा का प्रारम्भ होता है। अब तो यह हिन्दी रंगमंच का विशेष आकर्षण बन चुका है और कई संस्थायें केवल नृत्य नाट्य ही प्रस्तुत करती हैं। नाट्य शैली का यह एक अभिनव प्रयोग है और स्वातंत्र्योत्तर भी।''

एकांकी

प्रवविष्णुता एवं कलात्मक की दृष्टि से आज एकांकी नाटक हिन्दी साहित्य का सबसे सशक्त अंग है। हिन्दी एकांकी का जन्म कब हुआ ? इस सम्बन्ध में मतभेद है। प्रो. सत्येन्द्र ,रामचरण महेन्द्र, ललित प्रसाद शुक्ल आदि भारतेन्दु हरीशचन्द्रको हिन्दी का प्रथम एकांकीकार मानते हैं। डॉ. सोमनाथ गुप्त ने भी स्वीकार किया है कि भारतेन्दु हरीशचन्द्र से ही एकांकी की प्रथा आरम्भ हुई। 'एकांकी की प्रथा उन्हीं से चली आ रही है।'[1] डॉ.नगेन्द्र ने प्रसाद के 'एक घूँट' को हिन्दी का प्रथम एकांकी माना। एकांकी की तकनीक का 'एक घूँट' में पूरा निर्वाह किया गया है।

एकांकी से तात्पर्य एक अंक में समाप्त होने वाले नाटक से है। यह एक अंक कितना सीमित या विस्तृत हो ऐसा कोई नियम नहीं है। जीवन के किसी पहलू, विशिष्ट परिस्थिति अथवा किसी महत्वपूर्ण घटना का प्रभावपूर्ण चित्र एकांकी का प्रमुख गुण है। एकांकी को परिभाषित करते हुए डॉ. दशरथ ओझा ने लिखा है - 'आज के एकांकी नाटकों का विश्लेषण करके हम कह सकते हैं कि जो नाटक एक अंक में समाप्त होने वाला, एक सुनिश्चित लक्ष्य वाला एक ही घटना, एक ही परिस्थिति और समस्या वाला हो और जिसके प्रवेश में कौतूहल और वेग, गति में विद्युत की वक्रता और तेजी

नटरंग विवेक - नरनारायण राय 1982, (पृ. 23)

में एकाग्रता तथा आकस्मिकता के साथ चरमसीमा तक पहुँचने की व्यग्रता हो और जिसका पर्यवसान चरमसीमा पर ही प्रभाव की तीव्रता के साथ हो जाता हो, जिसमें प्रासंगिक कथाओं का प्रायः निषेध घटनाओं की विविधताओं का निवारण तथा चारित्रिक प्रस्फुटन में आदि मध्य और अवसान का वर्णन हो उसे एकांकी कहना चाहिए।''[1]

तात्पर्य यह है कि जिस नाटक में नायक जीवन के एकलक्ष्य को प्रमुखता देने के लिए उत्तेजक, सूचक अथवा प्रभाव व्यंगक पात्रों की सहायता से घटनाओं तथा भाव विचारों की तह खोलता हुआ हमारी जिज्ञासा को उभार कर या तो संतुष्ट कर देता है अथवा किसी उलझन में ही छोड़ देता है, वह एक अंक में समाप्त होने वाला नाटक एकांकी है। डॉ. कीथ ने एक अंक में समाप्त होने वाले इन नाटकों की एकांकी 'वन एक्ट प्ले' की संज्ञा दी है।

हिन्दी साहित्य के प्रख्यात विद्वान एवं हिन्दी एकांकी के सशक्त हस्ताक्षर डॉ. रामकुमार वर्मा ने एकांकी सर्जना के सिद्धान्तों एवं विशेषताओं का बड़ा ही सूक्ष्म एवं गहन विश्लेषण किया है। उनकी अवधारणा है कि - एकांकी नाटकों में अन्य प्रकार के नाटकों से विशेषता होती है। उसमें एक ही घटना होती है, वह घटना नाटकी कौशल से कौतूहल का संचय करते हुए चरमसीमा तक पहुँचती है। उसमें कोई अप्रधान प्रसंग नहीं रहता। विस्तार के अभाव में प्रत्येक घटना कली की भाँति खिलकर पुष्प की भाँति विकसित हो उठती है उसमें लता की भाँति फैलने की विश्रृंखलता नहीं होती। कथानक क्षिप्रगति से आगे बढ़ता है। और एक एक भावना को धनीभूत करते हुए गूढ़ कौतूहल के साथ चरमसीमा में चमक उठती है। समस्त जीवन एक घंटे के संघर्ष में और वर्षों की घटनाएँ एक ऑसू या मुस्कान में उभर आती हैं, वे चाहे सुखान्त हो, दुखान्त।[3]

''एकांकी के स्वरूप और उसके रचना-शिल्प के सम्बन्ध में स्वयं एकांकीकारों और आलोचकों के अलग-अलग मत हैं। किसी ने एकांकी की परिभाषा उसके आकार-प्रकार के आधार पर दी है, किसी ने उसकी टेकनीक के आकार पर, किसी ने रंगमंच को दृष्टि में रखते हुए। किसी ने एकांकी में आंतरिक संघर्ष पर बहुत बल दिया है और किसी ने संकलन-त्रय के महत्व पर अधिक ध्यान दिया है।''

उपेन्द्रनाथ अश्क ने छोटा कैनवस 'एकांकी' का आवश्यक तत्व मानते हुए उसकी तीन विशेषताओं का संकेत किया है :-

1. संक्षिप्त आकार और सीमित अवधि (35-45 मिनट)
2. अभिनयात्मक
3. स्पष्ट रंग - सूचनायें अथवा रंग - संकेत।

---

1. हिन्दी नाट्य साहित्य का इतिहास - डॉ. सोमनाथ गुप्त पृ.81-132 - गिरीश रस्तोगी

हिन्दी नाटक - उद्भव और विकास - डॉ. दशरथ ओझा (पृ. 322)

3. डॉ. गिरीश रस्तोगी (पृ. 139)
4. प्रतिनिधि एकांकी उपेन्द्रनाथ अश्क पृ. 16-17

डॉ. गिरीश रस्तोगी ने एकांकी में आठ तत्वों का होना आवश्यक माना है (1) कथानक (2) संघर्ष (3) संकलन त्रय (4) पात्र (5) संवाद (6) अभिनय तत्व (7) रंग संकेत (8) प्रभाव एक्य.

कथानक का उपयुक्त चुनाव आवश्यक है कोरी कल्पना ही कथानक में जान नहीं डाल सकती। कहानी और नाटक की भांति एकांकी को प्रारम्भ भी कौतूहलपूर्ण, उत्सुकता उत्पन्न करने वाला होता है। एकांकी के प्रारम्भ की सबसे बड़ी विशेषता यही है कि वह दर्शकों की रुचि को आकर्षित कर ले।

इसके बाद कथावस्तु तीव्रगति से दो विरोधी भावों परिस्थितियों पात्रों का संघर्ष उपस्थित हो और कौतूहल को बनाए हुए चरमोत्कर्ष की ओर बढ़ती है।

संघर्ष को नाटक का प्राण बनाते हुए डॉ. रामकुमार वर्मा ने लिखा है -

''नाटक का प्राण उसके संघर्ष में पोषित होता है। यह संघर्ष जितना अधिक नाटककार की विवेचन शक्ति में होगा, उतना ही जिज्ञासामय उसका नाटक होगा।''[1] एकांकी में संकलन त्रय का महत्वपूर्ण स्थान है। ''एक सम्पूर्ण कार्य का एक ही समय में, एक स्थान पर होना आवश्यक है।''[2]

एकांकी में पात्र जितने कम हो, अनुकूल रहता है एकांकी की संक्षिप्तता और कसाव के कारण व्यर्थ के पात्र उसमें नही आ पाते। पात्रों के अन्तर्द्वन्द का चित्रण एकांकी की विशेषता है।

संवाद एकांकी का मूल आधार है। सम्पूर्ण कथासूत्र को विकसित करने, पात्रों के चारित्रिक गुण दोषों-कार्यों व्यवहारो को, मनोदशा को अभिव्यक्त करने में संवाद ही एक मात्र सहायक होते हैं। एकांकी के संवाद का एक एक शब्द नपा-तुला होता है।

अभिनयात्मक एकांकियों का पहले अभाव था। अब एकांकीकारों का ध्यान अभिनयात्मकता की तरफ जा रहा है, जिसके फलस्वरूप अच्छे एकांकी हमारे सामने हैं। एकांकी के अभिनय में सर्वाधिक सहायता रंग-संकेत अथवा रंगमंच निर्देश से मिलती है। प्रारम्भ में ही एकांकीकारों पात्रों की वेशभूषा, दृश्य के सम्बन्ध में जो कुछ लिखता है, उससे निर्देशक को सम्पूर्ण व्यवस्था में सहायता मिलती है।

इन्ही सब तत्वों को निर्वाह करता हुआ एकांकी एकाग्रता पर पहुँच जाता है। जिस लक्ष्य या जिस समस्या को लेकर एकांकी प्रारम्भ हुआ है, उसका उपयुक्त प्रभाव छोड़ जाने में ही उसकी सफलता है।

विषय की दृष्टि से आज हिन्दी एकांकी ने विभिन्न धरातलों को संस्पर्श किया है। चतुर्दिक विकास यात्रा के कम में हिन्दी एकांकी विभिन्न संभावनाएँ समेटे हुए नई दिशाओं की खोज में अग्रसर है। वर्तमान युग में आज हिन्दी एकांकियों के विभिन्नि विषय क्षेत्र हैं - सोद्देश्य एकांकी, समस्या एकांकी प्रहसन एकांकी, हास्यमूलक एकांकी, जनपदीय एकांकी, शिल्पमूलक एकपात्रीय (मोनोड्रामा), कल्पनामूलक (फैंटेसी), सूचनामूलक (फीचर), रेडियो एकांकी, नाटक संक्षिप्त एकांकी दुःखान्त

---

1. रेशमी टाई (भूमिका) - डॉ. रामकुमार वर्मा - (पृ. 18)
2 रेशमी टाई मेरा अनुभव (भूमिका) पांचवा संस्करण - डॉ. रामकुमार वर्मा - (पृ. 7)

शैली, नाट्यरूपक ध्वनि रूपक, प्रतीक रूपक ।

हिन्दी एकांकी के विकास-यात्रा के विहंगावलोकन के पश्चात् यह कहा जा सकता है कि हिन्दी एकांकी कला शिल्प अभिनेयता, उद्देश्य एवं प्रतिपाद्य में रेखांकित एवं विशिष्ट स्थान बना चुका है तथा आशातीत उज्ज्वल भविष्य और अनन्त संभावनाएँ समेटे हैं ।

महिला नाट्य लेखिकाओं ने भी विविध रंगी एकांकियों का सृजन किया है । इनमें प्रमुख हैं - विमला रैना, विमला लूथरा, ममता कालिया, शांति मेहरोत्रा, स्वरूप कुमारी बख्शी, सावित्री रांका।

विमला रैना के संग्रह में 'आहें और मुस्कान' में सत्रह सामाजिक ऐतिहासिक, हास्य तथा व्यंग्यात्मक एकांकी संग्रहित है ।

विमला लूथरा के एकांकी संग्रह 'पचपन का फेर' में पन्द्रह एकांकी है । विमला लूथरा ने भी एकांकी के हर रूप को अपनाया है ।

ममता कालिया का एकांकी संग्रह ''आप न बदलेंगे'' में पाँच में एकांकी हैं। सामाजिक एकांकी के माध्यम से ममता कालिया ने सामाजिक बुराईयों को अपना कथ्य बनाया है ।

शान्ति मेहरोत्रा का एकांकी संग्रह - 'एक और दिन' बहुचर्चित एकांकी संग्रह है । इस संग्रह में सात एकांकी का संग्रह है । बाकी सभी एकांकी सामाजिक एकांकी हैं । एक और दिन एक असंगत एकांकी है ।

स्वरूप कुमारी बख्शी अपने हास्य व्यंग्य से भरपूर एकांकियों के लिए प्रसिद्ध हैं। प्रस्तुत एकांकी संग्रह 'मैं मायके चली जाऊँगी' में पाँच एकांकी संग्रहित हैं । सभी एकांकी हास्य व्यंग्य को लिए हुए हैं । व्यंग्य तीखा है । इनका दूसरा संग्रह - ''मैमसाहब का बैरा'' है । जिसमें छः प्रहसत एकांकी संग्रहित है । लेखिका की दृष्टि बहुत पैनी हैं ।

सावित्री शंका का एकांकी संग्रह 'एक और आवाज' है । जिसमें छः एकांकी संग्रहित हैं। इसमें सामाजिक एवं ऐतिहासिक एकांकियों को समाविष्ट किया गया है ।

7. रेडियो-रूपक

''रेडियो-नाटक हिन्दी नाटक की आधुनिक उपलब्धि है और विकासमान विधाओं में है ।''[1] उसकी गणना एकांकी के अन्तर्गत होती रही लेकिन रेडियो-नाटक ने शिल्प की दृष्टि से अपना स्वतंत्र अस्तित्व और विधान निर्मित कर लिया । आलोचक रेडियो-नाटक का पृथक विवेचन करने लगे । जिस प्रकार कहानी को केवल उपन्यास का लघुरूप कहकर संतुष्ट नहीं हुआ जा सकता, उसी प्रकार रेडियो-नाटक को एकांकी नहीं कहा जा सकता । रेडियो-नाटक और भिन्न-भिन्न रचना प्रकार हैं। हमारे यहाँ काव्य को दो भागों में बाँटा गया ।

(1) दृश्य काव्य (2) श्रव्य काव्य

दृश्य काव्य को रूपक की संज्ञा दी गयी । रेडियो-नाटक शिल्प के कारण रूपक या नाटक भी दो प्रकार के माने जा सकते हैं - दृश्य नाटक और श्रव्य नाटक । रंगनाटक श्रव्य भी है, दृश्य

1. हिन्दी नाटक सिद्धांत और विवेचन - डॉ. गिरीश रस्तोगी - (पृ. 216)

भी। दृश्य होने के कारण रंग नाटक के पास अभिव्यक्ति के अनेक माध्यम हैं। लेकिन रेडियो-नाटक केवल श्रव्य है इसलिए रेडियो-नाटक के पास कोई साधन नहीं है। लेकिन उसे अगोचर उपकरणों की सहायता से ही दर्शक-हृदय तक पहुँचना होता है। रेडियो-नाटक में सेवादों को बोलने के ढंग से ही पात्रों की मनःस्थिति, मुद्राओं, भंगिमाओं और क्रिया-कलापों का परिचय होता है। वहाँ वेशभूषा, मेकअप, रंग-सज्जा आदि की कोई आवश्यकता नहीं होती।

रंग-नाटक रंगमंच की सीमाओं से बंधा हुआ है। दृश्य-सज्जा में परिवर्तन, पात्रों की वेशभूषा में परिवर्तन जैसी अनेक कठिनाइयों से रेडियो-नाटक स्वतंत्र है।

रेडियो-नाटक की संक्षिप्तता के कारण इसे रेडियो एकांकी नहीं कह सकते। क्योंकि रेडियो नाटक में दृश्य होते हैं पर अंक नहीं।

शिल्प की दृष्टि से रेडियो-नाटक के कई प्रकार होते हैं - (1) नाटक (2) रूपक (3) रेडियो-रूपान्तर (4) फैंटेसी (5) एकपात्रीय नाटक (6) संगीत रूपक (7) काव्य रूपक (8) रेडियो प्रहसन, झलकियाँ तथा अन्य।

रेडियो रूपक :-

''नाम बड़ा भ्रामक रहा है। प्रायः रूपक और नाटक को समान मानकर विवेचन होने लगता है। वस्तुतः रूपक शब्द का व्यवहार यहाँ फीचर के अर्थ में किया जाता है। 'फीचर' रेडियो की ही देन है जिसका प्रारम्भ द्वितीय विश्वयुद्ध काल में बी.बी.सी. से हुआ। बी.बी.सी. में 'फीचर' का प्रयोग 'डाक्यूमेन्ट्री' के लिए होता है। जिसका तात्पर्य है यथातथ्य घटनाओं एवं सूचनाओं पर आधारित नाटकीय रचना। लारेन्स गिलियम ने उसे वस्तु का रेडियो नाटकीय प्रस्तुतीकरण कहा है। लुई मैकलीन ने भी उसे वास्तविकता का नाटकीय प्रस्तुतीकरण कहा है। अर्थात नाटक किसी कल्पित अथवा वास्तविकता या कल्पना मिश्रित कथानक पर आधारित होता है किन्तु रेडियो रूपक केवल वास्तविक घटना पर ही आधारित होता है। तथा उसका उद्देश्य, सूचना देना किसी विशेष व्यक्तित्व का परिचय देना, शिक्षा या उपदेश देना, प्रचार करना, जन समूह को विविध घटनाओं परिस्थितियों आदि से परिचित कराना होता है।

डॉ. दशरथ ओझा ने रेडियो रूपक के विषय में अपना मत इस प्रकार दिया है - ''रेडियो रूपक नाटक की एक ऐसी शैली है जिसमें नाट्यकार एक ही समय एक स्थान पर सहस्त्रों वर्ष वैदिक काल से प्रारम्भ करके आधुनिककाल तक के प्रसिद्ध सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक उथल-पुथल का रूप प्रदर्शित कर सकता है। वह संकलनत्रय के बन्धन को स्वेच्छा से क्षण-भर में चूर-चूर कर सकता है और रंगमंच की 'स्वगत' नामक अस्वाभाविक प्रणाली को पूर्ण स्वाभाविक बना सकता है। वह अंकों और दृश्यों की सीमाएं एक झटके में धराशायी कर सकता है।''[1]

हरिशचन्द्र खन्ना ने सुविधानुसार रेडियो रूपक के तीन वर्ग किये हैं -

---

1. हिन्दी नाटक उद्भव एवं विकास - डॉ. दशरथ ओझा (पृ. 337)

1. वस्तु प्रधान : किसी विशेष उद्देश्य सूचना की दृष्टि लिखित रूपक तथा व्यक्ति विशेष के जीवन से सम्बन्धित
2. कल्पना प्रधान : जिसमें काव्यरूपक आते हैं जैसे सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का आत्मसाक्षात्कार।
3. हास्य रूपक : हास्य रूपक भी लिखे गये । इन महिला लेखिकाओं में कुंथा जैन ने रेडियो रूपक की रचना की है । कुंथा जैन को रेडियो रूपक है - 'मानस्तम्भ' ।

प्रस्तुत रूपक में लेखिका ने जैन धर्म की महत्ता को स्थापित करने का प्रयास किया है । मान स्तम्भ उपदेशात्मक रूपक है । प्रसिद्ध कहानी तीर्थंकर महावीर ने चेतना के हाथों से कोदों के दाने ग्रहण किए थे तथा उसे मोक्ष मिल गया । स्वामी जी ने आलोका के हाथों से काजू के दाने ग्रहण किए जिससे उसकी सोई आत्मा जागृत हो उठी । उसका मन सांसारिकता की तरफ से मुक्त होकर भगवान के चरणों में लग गया वह भगवान के शरण में चली गयी ।

8. सामाजिक-राजनैतिक नाटक

भारतेन्दु का उदय होने से हिन्दी में नाटक-रचना को नया रूप, नया प्रकाश मिला । वे वस्तुतः नाटक के जन्मदाता ही नहीं, हिन्दी साहित्य में युग प्रवर्तक के रूप में सम्मुख आए । उनका युग अत्यन्त ही संक्रमणात्मक स्थिति तथा परिवर्तनशीलता का युग था । सम्पूर्ण भारत समाज राजनीतिक, सांस्कृतिक, सामाजिक परिवर्तनों के नये मोड़ से गुजर रहा था । एक ऐसा वर्ग था जो प्राचीनता, रूढ़िवादिता और भारतीयता को तुच्छ समझता था और ब्रिटिश शासन होने के कारण पाश्चात्य सभ्यता संस्कृति आदि से अत्यधिक प्रभावित हो रहा था, दूसरी ओर एक ऐसा वर्ग था जो नवीनता और पाश्चात्य प्रभाव का घोर विरोधी था । इन परिस्थितियों में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने अपनी सम सामायिक सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं साहित्यिक परिस्थितियों को ध्यान रखते हुए नाटकों का सृजन किया । ''भारत-दुर्दशा'' नाटक में प्रथमबार राजनीतिक विषय को नाटक का आधार बनाकर देश की दीन-हीन दशा पर चिन्ता प्रकट की तथा भावों की निर्भीकता पूर्वक अभिव्यक्ति की।''[1] भारतेन्दु ने अपने नाटकों 'प्रेम-जोगिनी', वैदिकी हिंसा-हिंसा न भवति, और 'अंधेर नगरी' में सामाजिक बुराइयों पर आक्षेप किया है । सामाजिक समस्याओं में बाल-विवाह पर्दा-प्रथा का निषेध तथा विधवा विवाह और स्त्री-शिक्षा का समर्थन किया गया है दूसरी ओर उनमें प्राचीन आदर्शों की प्रतिष्ठा की गयी है । प्रसाद युग के ''नाटककारों का ध्यान देश की सामाजिक एवं राष्ट्रीय आवश्यकताओं की ओर गया । ऐतिहासिक कथाओं द्वारा वर्तमान जीवन की सामाजिक एवं राजनीतिक समस्याओं का चित्रण किया गया है । राष्ट्रीय भावना तो प्रायः सभी नाटकों में मुखर है ।''[2]

प्रसादोत्तर काल में भी ''ऐसे नाटक रचे गये जिनमें किसी सामाजिक, राजनैतिक समस्या को लिया गया है ।

सेठ गोविन्द दास, उपेन्द्रनाथ अश्क जैसे नाट्यकारों ने अपने नाटकों में तरह तरह की

---

1. हिन्दी नाटक सिद्धान्त और विवेचन - डॉ. गिरीश रस्तोगी (पृ. 72)
2. हिन्दी नाटक सिद्धान्त और विवेचन - डॉ. गिरीश रस्तोगी (पृ. 85)

सामाजिक राजनीतिक समस्याओं को लिया। गोविन्द वल्लभ पंत हरिकृष्ण 'प्रेमी' उदयशंकर भट्ट सभी नाटक लेखकों ने भी सामाजिक नाटकों की रचना की। इन रचनाकारों ने अपने युग में व्याप्त सामाजिक बुराइयों यथा - अनमेल विवाह पर्दा प्रथा, स्त्री शिक्षा, विधवा विवाह, जाँति-पाँति की कट्टर भावना, दरिद्रता, आदि को नाटकों का कथ्य बनाया है । महिला नाट्य लेखिकाओं ने भी तत्कालीन परिस्थितियों के अनुसार अपने-अपने नाटकों के लिए सामाजिक राजनीतिक समस्याओं को चुना है। इन महिला लेखिकाओं ने इन नाटकों को लिखकर अपनी जागरुकता का परिचय दिया है। युगीन परिस्थितियों को अपने नाटक का विषय बनाकर अपने नाटकों को आज के परिवेश के साथ जोड़ने का सफल प्रयास किया है । इन महिला लेखिकाओं में जिनके नाटकों को इस वर्गीकरण में रखा है मुख्य है - मन्नू भंडारी, डॉ. गिरीश रस्तोगी, डॉ. मृणाल पान्डेय, डॉ. कुसुम कुमार, त्रिपुरारी शर्मा आदि। मनू भंडारी का नाटक 'महाभोज' उनके ही उपन्यास 'महाभोज' का नाट्यान्तर है। प्रस्तुत उपन्यास लेखिका की अपनी रचना है तथा नाट्यान्तर भी स्वयं किया है इसलिए महाभोज के नाटक रुप को महिला नाट्यकारों की रचनाओं में सम्मिलित किया गया है। प्रस्तुत नाटक बेलहर्ष के हत्या कांड से प्रभावित होकर लिखा गया है। आज के सामाजिक व राजनीतिक माहौल का चित्रण अति सुन्दर व स्वाभाविक है। डॉ. गिरीश रस्तोगी के नाटक 'असुरक्षित' व अपने हाथ बिकानी' भी इसी कोटि के नाटक है। असुरक्षित आज के वातावरण को चित्रित करता है। आज के राजनीतिक माहौल में जहाँ कुछ भी सुरक्षित नहीं है वहाँ भविष्य की सुरक्षा का प्रश्न ही नहीं है। समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार अराजकता शोषण आदि का खुला रूप हमारे सामने हैं। 'अपने हाथ बिकानी' एक सामाजिक नाटक है। बिन्दू पापा के कहने पर शादी करना स्वीकार नहीं करती पर अपने से प्यार के लिए सभी कुछ सहन करने को तैयार है ।

डॉ. मृणाल पान्डेय के नाटक 'मौजूदा हालात को देखते हुए 1981, जो राम रचि राखा 1983 तथा चोर निकल के भागा' 1995 इसी श्रेणी में आते हैं। 'जो राम रचि राखा' राजस्थान की लोक कथा पर आधारित है। 'चोर निकल के भागा', 'मौजूदा हालात को देखते हुए' में लेखिका ने व्यंग्य के माध्यम से वर्तमान समाज की विसंगतियाँ प्रस्तुत की हैं। आज हमारी राजनैतिक व्यवस्था कितनी खोखली है, राजतन्त्र कितना दिखावटी और निकम्मा है, लेखिका ने व्यंग्य के माध्यम से हमें यही दिखाने का प्रयास किया है ।

डॉ. कुसुम कुमार के नाटक 'ओम क्रांति-क्रांति', 'पवन चतुर्वेदी की डायरी' 'संस्कार को नमस्कार', दिल्ली ऊँचा सुनती है, सुनो सेफाली भी ऐसे नाटक हैं। ओमक्रांति-क्रांति में कॉलेज के वातावरण का चित्रण है। शिक्षकों की जिम्मेदारियों दायित्यों के प्रति लापरवाही आज के माहौल का चित्रण है।

'पवन चतुर्वेदी की डायरी' एक थके-हारे आदमी की कहानी है जिसे लेखिका ने मनोवैज्ञानिक पक्ष को उद्घाटित करते हुए स्पष्ट किया है। जिसे कोई भी स्वीकार नहीं कर पाता। और वह इस समाज में कहीं भी फिट नहीं हो पाता ।

'<u>संस्कार को नमस्कार</u>' राजनेताओं के चरित्र का मूल्यांकन करता है। नारी का शोषण किस-किस रूप में हो रहा है। ये राजनेता बेटी कहकर भी बेटी की मर्यादा की रक्षा नहीं कर सकते। एक तीखा व्यंग्य है इनके चरित्र पर।

'<u>दिल्ली ऊँचा सुनती है</u>' प्रस्तुत नाटक तीव्र प्रतिक्रियाओं को मुखर करता है। हमारी नौकरशाही पर सीधा प्रहार है। एक बूढ़ा आदमी बिना पेन्सन के, अपना घर चलाता है। पेन्सन के लिए धक्के खाता-खाता मर जाता है। उसके मरणोपरान्त उसको पेन्सन का कागज आता है।

'<u>सुनो शेफाली</u>' में जाँति-पाँति की समस्या के साथ राजनेताओं के व्यक्तित्व को जोड़कर इस नाटक को हमारे सामने लेखिका ने रखा है। बकुल का प्यार शेफाली से कई वर्षों से चल रहा है। पिता को विवाह स्वीकार है, पर चुनाव के पहले। क्योंकि यहाँ राजनीति वोटों से चलती है। हरिजन की कन्या से विवाह एक ऐसा मुद्दा है जिससे ढेर सारे वोट बटोरे जा सकते हैं। आज के राजनीतिज्ञों के चरित्र का सच्चा रूप हमारे सामने प्रस्तुत हैं।

मृदुला गर्ग ने भी अपने नाटकों में ज्वलन्त विषयों को लिया है। मृदुला गर्ग का नाटक '<u>जादू का कालीन</u>' कालीन बुनने वाले बच्चों की समस्या को लेकर है। प्रस्तुत नाटक बाल मत के स्वप्नदर्शी स्वभाव को भी व्यक्त करने में सफल है। बाल मजदूरी एक बहुत बडी समस्याहै जिसका कारण गरीबी ही है। समाज की इसी समस्या के तहत् कितने बच्चे अपने स्वप्नों अपने बचपन को बेचकर गुलाम बन जाते हैं।

'<u>तुम लौट आओ</u>' एक सामाजिक नाटक है। परिवार, पति पत्नी की समस्याओं को इसमें इंगित किया है। ये छोटी-छोटी परेशानियाँ जो सुखद हैं अन्ततः एक ही मनुष्य के अति महत्वाकांक्षी होने के कारण दुखद बन जाती हैं।

त्रिपुरारी शर्मा का नाटक <u>काठ की गाड़ी</u> कुष्ठ रोगियों की समस्या पर है। समाज मे व्याप्त इस बुराई को जिसको कुष्ठ रोग हो जाता है उसे समाज व परिवार से अलग कर दिया जाता है। ठीक होने के बाद भी घर वाले उसे स्वीकार नहीं करते इसे ही इंगित करते हुए लेखिका ने इस नाटक की रचना की है। कुष्ठ रोगियों के लिए एक नई समझ प्रदान की है।

मृदुला बिहारी का नाट्य संग्रह '<u>अंधेरे से आगे</u>' उनके सामाजिक नाटकों का संग्रह है। इसमें पाँच नाटक संग्रहित हैं। नारी की समस्यायें जो कई अर्थों में पुरुषों की समस्याओं से भिन्न होती हैं, उनका चित्रण मृदुला जी ने अपने इन नाटकों में किया है। समाजगत मूल्यों और व्यवस्था के बीच उनके मनोभाव अनेक स्तरों पर पुरुषों की अपेक्षा अधिक आहत होते हैं। मृदुला बिहारी ने नारी मन की पीड़ा, भय, असुरक्षा, एकाकीपन तथा विवशता की समझा है उसी की उपज हैं ये नाटक।

नारी नाट्य लेखिकाओं के नाटकों के अध्ययन के पश्चात् हमें यह ज्ञात होता है कि इन नारी नाट्य लेखिकाओं ने विविधरंगी नाटक लिखकर नाट्य साहित्य को समृद्ध किया है। इन लेखिकाओं ने जीवन के तमाम् अनछुए पहलूओं को छूने का सफल प्रयास किया है।